



केनरा ज्योति

अंक : 42

अक्टूबर-दिसंबर 2024

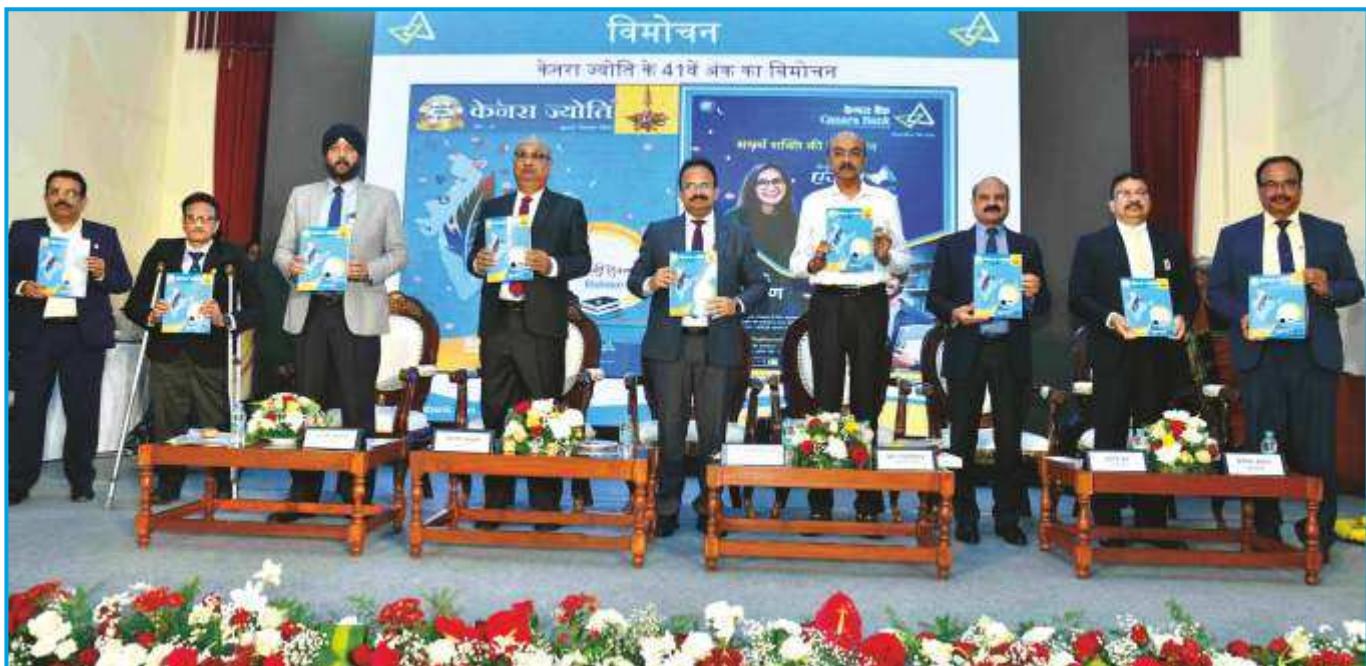


केनरा बैंक
भारत सरकार का उपक्रम

Canara Bank 
A Government of India Undertaking

सिंडिकेट Syndicate

Together We Can



दिनांक 30.09.2024 को प्रधान कार्यालय के सभागार में आयोजित हिन्दी दिवस समारोह के दौरान केनरा ज्योति के 41वें अंक(हिन्दी विशेषांक) का विमोचन करते हुए प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री के. सत्यनारायण राजु, कार्यपालक निदेशक श्री देबाशीष मुखर्जी, श्री अशोक चंद्र, श्री हरदीप सिंह अहलूवालिया एवं श्री भवेन्द्र कुमार, मानव संसाधन विभाग के मुख्य महाप्रबंधक श्री डी. सुरेन्द्रन, महाप्रबंधक श्री टी. के. वेणुगोपाल और राजभाषा अनुभाषा प्रभारी सहायक महाप्रबंधक श्री ई. रमेश।



संस्थापक दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण के पश्चात केनरा उत्कृष्टता केंद्र, बागलूर, बैंगलूरु के परिसर में बैंक के प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री के. सत्यनारायण राजु, कार्यपालक निदेशक श्री देबाशीष मुखर्जी, श्री अशोक चंद्र, श्री हरदीप सिंह अहलूवालिया और श्री भवेन्द्र कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री नबीन कुमार दास और अन्य अतिथियां चित्र में नज़र आ रहे हैं।



श्री के. सत्यनारायण राजु

प्रबंध निदेशक
व मुख्य कार्यकारी अधिकारी



श्री अशोक चंद्र
कार्यपालक निदेशक



श्री डी. सुरेन्द्रन
मुख्य महाप्रबंधक



श्री टी. के. वेणुगोपाल
महाप्रबंधक



श्री ई. स्मेश
सहायक महाप्रबंधक
मुख्य संपादक

संपादक

श्री मनीष अभिमन्यु चौरसिया, अधिकारी

संपादन सहयोग

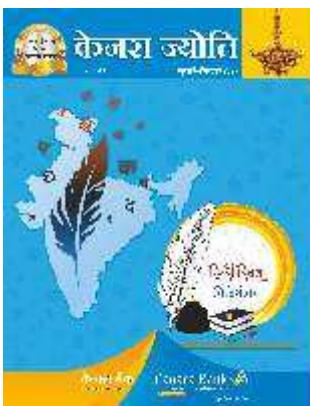
- श्री जी. अशोक कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक
- श्री राधवेन्द्र कुमार तिवारी, वरिष्ठ प्रबंधक
- श्री मयंक पाठक, वरिष्ठ प्रबंधक

बिक्री के लिए नहीं

प्रकाशन : केनरा बैंक,
राजभाषा अनुभाग,
मानव संसाधन विभाग, प्रधान कार्यालय
112, जे.सी. रोड,
बैंगलूरु - 560 002
दूरभाष : 080-2223 4079
ई-मेल: hool@canarabank.com
वेबसाइट :
www.canarabank.com

केवल आंतरिक परिचालन हेतु

पत्रिका में अभिव्यक्त विचार लेखकों
के अपने हैं। केनरा बैंक का उनसे
सहमत होना ज़रूरी नहीं है।



विषय सूची

पृष्ठ संख्या

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश	- के. सत्यनारायण राजु	2
मुख्य संपादक का संदेश	- ई. रमेश	3
एक कदम राजभाषा हिंदी की ओर...	- विधि जटीया	4
यूनिफाइड लैंडिंग इंटरफ़ेस (ULI)- एक नई डिजिटल त्रुट परिवर्तन रणनीति ।	- प्रदीप राज एस.	8
आरे की कहानी	- कुमार गौरव	13
वित्तीय सेवाओं के प्रसार में सोशल मीडिया की भूमिका	- शशि कान्त पाण्डेय	14
हम औरतें हैं जनाब....	- गायत्री कांबले	18
उच्च शिक्षा या कौशल अर्जन। समय की मांग क्या है?	- मोहम्मद इमरान अंसारी	19
हिंदी भाषा: एक विस्तृत विवेचना	- शुभम शर्मा	21
संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति का निरीक्षण		26
मेरी पहली अंतरराष्ट्रीय यात्रा	- निलेश कुमार श्रीवास्तव	28
वनवास : एक युग	- मेघाली सरकार	31
जीवन एक संघर्ष	- प्रवीण दुबे	32
जीवन की धूप छाँव	- प्रतिभा राजपूत	32
सोमनाथ ज्योतिलिंग और देवभूमि द्वारिका: एक श्रद्धा की यात्रा	- अंशिता सिंह	33
डोरस्टेप बैंकिंग	- स्नेहा	36
तुम होते कौन हो	- नितिन गुप्ता	37
आधुनिक बैंकिंग के नवीन आयाम	- पुष्कर पाण्डेय	38
समानुभूति	- रीमा बैनर्जी	42
सुंदरवन	- गौरव कुमार	43
नौकरी का साहस	- अमित शर्मा	45
जीवर	- अल्पना शर्मा	46
संघर्ष	- दिव्या प्रजापति	49
डिजिटल बैंकिंग को समाज के निचले स्तर तक पहुंचाने के उपाय	- शुचि पाराशर	50
मेरी मां ने देखा है	- मोनालिसा पंवार	52



प्रिय केनराइट्स!

केनरा बैंक की त्रैमासिक हिंदी पत्रिका केनराज्योति के 42 वें अंक के माध्यम से आप सभी के साथ रूबरू होते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है कि बैंक की इस गृह पत्रिका के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ है जिसे मैंने माननीय गृह व सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के कर-कमलों से 14 सितंबर 2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में ग्रहण किया। हज़ारों कार्यालयों के बीच में हमारे बैंक की पत्रिका को प्रथम पुरस्कार से नवाज़ा जाना अपने-आप में बहुत गर्व की बात है। मैं आशा करता हूं कि आने वाले समय में भी इस पत्रिका को हमारे पाठकों तथा संपादकीय मंडल द्वारा उत्कृष्ट बनाए रखा जाएगा तथा पत्रिका के लिए मूल रूप से बैंकिंग तथा संबंधित विषयों पर उत्तम लेख हम सबको देखने व पढ़ने का मौका मिलेगा। साथियों, आप सभी जानते हैं कि हमारे बैंक ने अपना संस्थापक दिवस मनाया है और यह हमारे लिए गौरव की बात है कि हमारे बैंक की स्थापना उस समय हुई जब पूरा विश्व भयंकर आर्थिकमंदी तथा सामाजिक उथल-पुथल से गुज़र रहा था तथा बैंकिंग केवल संपन्न वर्गों के लिए ही सीमित थी। ऐसी कठिन अवस्था में, हमारे संस्थापक श्री अम्मेन्बाल सुब्बाराव पै द्वारा इस बैंक की स्थापना हिंदू परमार्णेट फंड के नाम से प्रारंभ किया गया।

हमारे संस्थापक चाहते थे कि गांव के गरीब लोगों के लिए भी बैंकिंग सुविधा उपलब्ध हो और इस हेतु उन्होंने घर-घर जाकर लोगों से पूँजी इकट्ठा की तथा बैंक की नींव रखी। हमारे संस्थापक के अलावा कई महान महानुभावों ने बैंक को सुदृढ़ बनाने में काफी योगदान दिया। आज, इस बैंक के एमडी व सीईओ के रूप में जब मैं पलट कर देखता

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश

हूं तो मुझे अहसास होता है कि उस समय उनकी यात्रा कितनी कठिन रही होगी।

पिछले 10 वर्षों में हमारे बैंक ने अपने कारोबार को पूर्ण रूप से डबल किया है तथा आने वाले समय में भी हम अपने कारोबार को इसी तरह दुगना-तिगुना करते रहेंगे और साथ-साथ में सामाजिक दायित्वों का निर्वाह भी करते रहेंगे। जैसा कि आप सभी जानते हैं कि इस वर्ष 15 अगस्त के दौरान हमारे बैंक ने विद्या ज्योति योजना के अंतर्गत 45000 कन्याओं को छात्रवृत्ति प्रदान की जो सुदूर गांव से लेकर अर्ध शहरी क्षेत्रों के स्कूलों में पढ़ते हैं। विद्या ज्योति छात्रवृत्ति का सबसे महत्वपूर्ण घटक है कि उनका खाता खोला जाना और छात्रवृत्ति की राशि उस खाते में जमा किया जाना जो उनके लिए भविष्य में उपयोगी होगी। हमने इस योजना के अलावा भी शिक्षा के क्षेत्र में कई पहल किए हैं जो शिक्षा के क्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण हैं। हमारे सभी वरिष्ठ कार्यपालकों को अपने क्षेत्र के स्कूलों के पुनर्वास व विकास के लिए राशि दी जाती है जिससे वे अपने क्षेत्र के स्कूलों में मूलभूत सुविधा प्रदान कर सकें। हमने संस्थापक के उद्देश्यों व लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए कई ऐसी परियोजनाएं रूपायित की हैं।

बैंक के एमडी व सीईओ के रूप में मैं चाहता हूं कि आने वाले समय में भी हमारा बैंक व्यापार के साथ-साथ अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वाह पूर्ण रूप से करता रहे। राजभाषा का कार्यान्वयन राष्ट्र को सुदृढ़ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। मैं हमारे सभी पाठकों से अनुरोध करूँगा कि वे देश की एकता तथा अखंडता के लिए जो कुछ भी अपने स्तर पर बनता है करें तथा भाषा को सुदृढ़ करें। मैं, पुनः आप सभी से आग्रह करता हूं कि अपने स्तर पर ग्राहक सेवा में सुधार लाएं तथा बैंक को इतना मज़बूत बनाएं कि आगामी 2 से 3 सौ वर्षों तक हमारा बैंक इसी तरह सुदृढ़ रहे। धन्यवाद!

के. एम. चन्द्र

के. सत्यनारायण राज

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी

मुख्य संपादक का संदेश

प्रिय पाठकों,

केनरा ज्योति पत्रिका का 42वां अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। केनरा ज्योति पत्रिका साहित्य और बैंकिंग का अद्भुत संगम है। इस नवीनतम अंक में साहित्यिक ज्ञानवर्धक लेखों के साथ-साथ सुंदर शब्दों में पिरोए गए मन के कोमल भावों से सजी कविताओं और कहानियों से लेकर मन्त्रमुग्ध कर देने वाले यात्रा वृत्तांत एवं बैंक की विविध गतिविधियों की झलकियां भी सम्मिलित की गई हैं।

पत्रिका वह आईना है, जो हमारी भाषा, संस्कृति और समाज को प्रतिबिंबित करती है तथा हमें सही दिशा में आगे बढ़ने की ओर मार्गदर्शित करती है।

वर्तमान आर्थिक परिवेश में सर्वत्र वित्तीय समावेशन और समावेशी विकास की बात की जा रही है। सभी को वित्तीय मामलों की जानकारी प्रदान करने और जन-जन को आर्थिक जगत से जोड़ने के लिए जो कदम उठाए जा रहे हैं उसमें राजभाषा के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। निःसंदेह समावेशी विकास में जो भूमिका भारतीय भाषाएं और विशेष रूप से राजभाषा हिंदी निभा सकती है वह कार्य किसी विदेशी भाषा के माध्यम से नहीं किया जा सकता। केनरा ज्योति हिंदी भाषा में न सिर्फ बैंकिंग संबंधी बल्कि वित्तीय, तकनीकी विषयों की भी जानकारी प्रदान करती है। इस पत्रिका के माध्यम से हम न सिर्फ हिंदी भाषा को बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं बल्कि बैंक में मौजूद सृजनात्मक प्रतिभाओं को अपने रचना कौशल का प्रदर्शन करने के लिए मंच भी प्रदान करते हैं।

समृद्ध राजभाषा और हमारी एकता, विकास का स्रोत होता है, जो हमारी पहचान को मज़बूती प्रदान करती है और हमें उच्च शिखर की ओर ले जाती है।

गृह पत्रिका की श्रेणी में हमारे बैंक की पत्रिका केनराज्योति को वर्ष 2023-24 के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के अंतर्गत प्रथम



पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसी उपलब्धि के क्रम में Public Relations Council of India द्वारा आयोजित 18वें ग्लोबल कम्यूनिकेशन कॉन्क्लेव में हिंदी पत्रिका 'केनरा ज्योति' को सिल्वर ट्रोफी तथा हमारी द्विभाषिक पत्रिका 'श्रेयस' को रजत पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

मैं अपने सभी पाठकों को इन पुरस्कारों की उपलब्धि के लिए बधाई देता हूं और संपादक मंडल की ओर से उन सभी रचनाकारों और लेखकों को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से पत्रिका के प्रकाशन को सफल बनाने में योगदान दिया है।

केनरा ज्योति की चिरंतर संवृद्धि के लिए पाठकों की प्रतिक्रियाओं की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

अनेक शुभकामनाओं के साथ,

आपका,

ई रमेश

सहायक महाप्रबंधक व मुख्य संपादक



आलेख

एक कदम राजभाषा हिन्दी की ओर...

**निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल॥**

— भारतेन्दु हरिश्चंद्र

आज हिन्दी भाषा हर जगह अपने कदम मजबूत कर रही है। सम्पूर्ण भारत में कश्मीर से कन्याकुमारी और कामाख्या से कच्छ तक समझी जाती हैं। सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का महत्वपूर्ण स्थान है। अब हिन्दी किसी राजकीय दिवस, पर्यावारे या महीने से अपनी पहचान बनाने वाली भाषा नहीं रही बल्कि हिन्दी भाषा का जादू आज देश-विदेश के लोगों पर भी फैला है। आज हिन्दी के लिए नये अवसरों के सोपान खुल गए हैं। कहा भी गया है न-

**‘भारतीय भाषाए नदियाँ हैं
और हिन्दी महानदी।’**

आज हिन्दी देश-विदेश में अपने पंख फैला रही है। उदाहरण के तौर में देखे तो एमेज़ोन ने अपने ऑनलाइन उत्पादों को खरीदने के लिए अंग्रेजी के साथ हिन्दी भाषा का विकल्प भी उपलब्ध कराया है, क्योंकि वे भी जानते हैं कि भारत की इतनी सारी जनसंख्या तक अपनी पहुँच बनानी हो तो ग्राहक की भाषा आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य भी है।

कबीरदास भी कह गए हैं कि

**जाति न पूछो साधु की, पूँछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान॥**

भाषा राष्ट्र की एकता और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, यदि हमें राष्ट्र को सशक्त बनाना है, प्रगति करनी है तो हमारी अपनी भाषा का प्रयोग महत्म करना चाहिए। हम हिंदुस्तान के किसी भी स्थल या किसी भी कोने में चले जाए, आज भाषा हमारे लिए कहीं भी



विधि जटणीया

अधिकारी
मांडवी मुख्य शाखा, वडोदरा

अवरोध नहीं बनती है। हिन्दी निश्चय ही जनसम्पर्क की भी भाषा बन चुकी है।

गुरुदेव रबिन्द्रनाथ टागोर ने कहा था,

‘उस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए, जो देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती हो अर्थात् हिन्दी।’

आज हिन्दी अपने नए रूप, नए तेवर, नए अंदाज और नए मिजाज में है। आत्मविश्वास से भरी हुई हिन्दी का नया चेहरा हमारे सामने है जो निरंतर अपना प्रयास करती हुई आगे बढ़ रही है। आज हर तरफ राजभाषा हिन्दी मुस्कुरा रही है क्योंकि उसका संसार निरंतर बढ़ता हुआ सच में वसुधेव कुटुम्बकम को चरितार्थ कर रहा है।

मैथिलीशरण गुप्त जी कहते हैं,

हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में आसान हो सकती है।

संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949 को भारत के संविधान में राजभाषा संबंधी विभिन्न कार्यों के लिए हिन्दी को स्वीकार किया है। इसी फलस्वरूप संघ शासन की राजभाषा हिन्दी बन गई। तब से हिन्दी को आगे लाने के लिए अथक प्रयास जारी है किन्तु मंजिल अभी भी दूर है। हमने प्रयास अच्छे किए हैं व अभी भी कर रहे हैं किन्तु आगे और भी कड़ी मेहनत करनी होगी।

महादेवी वर्मा ने कहा है

वह देश गूंगा है जिसकी अपनी कोई भाषा नहीं होती।



यह कहते हुए आज गर्व अनुभव हम करते हैं कि हिंदी भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के विराट फ्लक पर अपने अस्तित्व को आकार दे रही है। आज हिंदी विश्व भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त करने की ओर अग्रसर है बल्कि यह कहना भी अतिशयोक्ति न होगी कि हिंदी विश्व भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त करेगी ही। आज हिंदी संपर्क भाषा से कार्यालय तक पहुंची है। आज हिंदी हर जगह अपने कदम बढ़ा रही है।

आज हिंदी के लिए नए अवसरों के सोपान खुल रहे हैं, वह राजभाषा से व्यापार और कार्यालयीन भाषा की ओर गति कर रही है। हिंदी एक सरल, सहज और उपयोगी भाषा है। बहुत सारे आम लोगों की भाषा होने की वजह से हिंदी आज व्यवसाय को बढ़ाने में भी उपयोगी है। हिंदी आज इतनी फैली हुई है कि हिंदी के सहारे विशाल ग्राहक वर्ग से आत्मीय संबंध स्थापित हो सकते हैं। आइए हिंदी भाषा को एक महत्वपूर्ण सेतु की तरह प्रयोग में लाए और हमारे ग्राहकों से सरलता से जुड़े।

सच में,

**अंधकार है वहां जहां आदित्य नहीं है,
मुर्दा है वह देश जहां साहित्य नहीं है।**

भारत जैसे बहुभाषी देश में विदेशों से आई कंप्यूटर विद्या ने प्रारंभ में अपने अंग्रेजी वर्चस्व से शुरुआत अवश्य की, किंतु भारतीय भाषा शक्ति ने इस चुनौती को शीघ्र ही जवाब दे दिया। अर्थात् भारत के युवा मस्तिष्क एवं अनुभवी पीढ़ी ने सूचना प्रौद्योगिकी का उत्तर भाषा प्रौद्योगिकी से दिया। विविधता में एकता और बसुदेव कुटुंबकम में मानने वाले हमारे भाषा समृद्ध देश के हमारे वैज्ञानिकों ने कठोर मेहनत व परिश्रम से अपनी शक्ति से, कंप्यूटर पर भारत की सभी प्रमुख भाषाओं को प्रस्थापित कर दिया।

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं है वह उन्नत नहीं हो सकता।

— डॉ. राजेंद्र प्रसाद

यह तो सर्वविदित है कि जब बैंकिंग कार्य कंप्यूटरीकरण के माध्यम से किया जाने लगा, जब इसकी शुरुआत हुई तब अंग्रेजी भाषा में ही यह कार्य होने लगा। इससे भी ग्राहक सेवाओं में तथा बैंकिंग कार्यों में कुछ कठिनाई आने लगी। हम सब जानते हैं कि हमारे देश का लगभग 70% भूभाग गांव में बसता है और गांव के दूरदराज इलाकों तक बैंकिंग की सुविधाओं को पहुंचाने के लिए वित्तीय समावेशन का कार्यक्रम जोर शोर से चलाया गया था। जिसके तहत देश के कोने-कोने में बसे गांव वासियों को बैंकिंग सुविधा प्रदान की जा सके और उनके जीवन स्तर को खुशहाल बनाया जा सके और हम यह भी जानते हैं कि हमारे देश की लगभग 70% जनसंख्या हिंदी भाषा जानती है तथा अगर हमें डिजिटल बैंकिंग को गांव-गांव पहुंचाना है या बैंकिंग व्यवसाय की प्रगति करनी है तो ग्राहकों से उनकी भाषा में बैंकिंग करना महत्वपूर्ण है। आज के दौर में डिजिटल बैंकिंग में प्रगति के साथ-साथ अपनी क्षेत्रीय भाषा हिंदी भाषा के विकास में भी काफी प्रगति हो रही है। पहले डिजिटल क्षेत्र में अंग्रेजी भाषा का अधिकाधिक प्रयोग किया जाता था लेकिन आज ऐसा नहीं है अब सभी भारतीय भाषाओं में सूचना प्रौद्योगिकी और डिजिटल बैंकिंग के क्षेत्र में कार्य संभव हो गया है और विशेषकर हिंदी भाषा में तो और अधिक क्योंकि भारत देश के संघ की राजभाषा है। संघ की राजभाषा हिंदी होने के नाते देश के सभी सरकारी कार्यालयों व संस्थाओं व उपक्रमों में इस भाषा को अधिक महत्व देते हुए तथा पूरे भारत देश की जनसंख्या से जुड़ने के लिए हिंदी भाषा में हर कार्य को संपन्न किया जा रहा है ताकि देश के अधिक जनों को अपनी अपनी संस्थाओं की ओर से लाभ पहुंचे और हम हर एक वर्ग के ग्राहक से उनकी भाषा के माध्यम से जुड़ सकें।

**हिंदी हमारा अभिमान है, हिंदी हमारा स्वाभिमान है,
विश्व पटल पर इसे उच्च स्थान दिलाना है,
इसका गौरव और मान बढ़ाना है,
भारत मां के माथे की बिंदी है हिंदी
भाग पर सजा कर इसे संपूर्ण विश्व को दिखाना है।**

इसमें कोई संदेह नहीं है कि कोई संस्था या कार्यालय को प्रगति करनी है या विकास करना है तो ग्राहक से ग्राहक की भाषा में यदि हम सेवाएं देंगे तो अवश्य लाभ पहुंचेगा क्योंकि वे लोग उस संस्था से सार्वजनिक रूप से जुड़ेंगे और हमेशा जुड़े रहेंगे तो आइए डिजिटल

बैंकिंग को बढ़ावा देने के लिए ग्राहक से ग्राहक की भाषा में जुड़े भाषाई एकता से हमारी डिजिटल बैंकिंग को एक नए शिखर तक पहुंचा कर बैंकिंग क्षेत्र को भी हर एक वर्ग के ग्राहक तक पहुंचाएं आइए।

**बढ़े हम क्षितिज की ओर,
बढ़े हम क्षितिज की ओर।
आइए डिजिटल बैंकिंग को बढ़ावा दे,
जुड़े हर एक ग्राहक से ग्राहक की भाषा में।**

किसी भी व्यवसाय की वृद्धि के लिए व्यवसाय और ग्राहकों के बीच की दूरी को दूर करना अति आवश्यक है। हिंदी भाषा में व्यवसाय करने से बैंक और ग्राहक दोनों ही लाभान्वित होंगे। बैंक और ग्राहक के बीच की दूरी भाषा से काफी हद तक हम दूर कर सकते हैं। उदाहरण के रूप में सोचे तो मानिए कि आप एक ग्राहक हैं, आप कोई चीज खरीदने के लिए जाएं पर बेचने वाले को आपकी भाषा नहीं आती और बेचने वाले की भाषा आप नहीं जानते कैसे आदान-प्रदान ठीक से होगा जरूरियात का? इसलिए ग्राहकों को हम उनकी भाषा में ही सेवाएं प्रदान कर सकते हैं। इसी बजह से आज राजभाषा हिंदी संपर्क भाषा से कार्यालयीन भाषा की तरफ बढ़ रही है।

बैंकिंग व्यवसाय आज हर क्षेत्र में अपना कदम फैला रहा है। कह सकते हैं कि यत्र तत्र सर्वत्र जन-जन की सेवा के लिए बैंकिंग क्षेत्र अपने नए, नए उत्पाद दिन प्रतिदिन विकसित कर रहे हैं और ग्राहकों की सेवाओं में वृद्धि कर रहे हैं। विविधता और सरलता से भरे ये सब उत्पाद भी ग्राहक को हिंदी भाषा में ही प्रदान करने से सोने में सुगंध मिल जाएंगी। यदि बैंक 140 करोड़ वाली आबादी के देश में कोई नई सेवा या उत्पाद लाना चाहते हैं तो निसंदेह ग्राहक की संपर्क भाषा राजभाषा हिंदी व क्षेत्रीय भाषाओं से अच्छा कोई और विकल्प है ही नहीं। आज बैंकिंग गांव गांव तक पहुंचा है और गांव के लोग तो अपनी भाषा को ही जानते हैं तो आइए बैंकिंग व्यवसाय का सशक्त संचालन सुचारू रूप से हमारी अपनी राजभाषा हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषाओं के साथ ही करें। हमारा डिजिटल बैंकिंग भी पूर्ण रूप से खरा उतरेगा जब हम ग्राहकों को यह सेवाएं ग्राहकों की भाषा में यानी की राजभाषा हिंदी में देंगे। इसी तरह से आज राजभाषा हिंदी संपर्क भाषा से कार्यालयीन भाषा बन चुकी है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने हिंदी भाषा की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा था,

“लाखों लोगों को अंग्रेजी का ज्ञान कराना उन्हें गुलाम बनाना है।”

आज सही मायनों में देखे तो हिंदी प्रगति के पथ पर है। आज सरकारी दफतरों, गृह मंत्रालय सभी जगह हिंदी फॉर्म्स, मैन्युअल सहित आदि लेखन सामग्री अनेक रूपों में पहुंच गई है। जहां तक राष्ट्रीय कृत बैंकों की बात है वहां भी हिंदी में एक राजभाषा के रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। आज प्राइवेट सेक्टर में भी हिंदी का प्रयोग शुरू हो रहा है, जो स्पष्ट करता है कि हम राजभाषा हिंदी का प्रयोग संपर्क भाषा से कार्यालयीन भाषा की ओर व्यापक रूप से बढ़ रहा है।

महाकवि दण्डी ने अपने महान ग्रन्थ ‘काव्यादर्श’ में भाषा की महत्ता सूचित करते हुए लिखा है :

**इदमन्थ तमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्।
यदि शब्दायं ज्योत्तिरासंसारं न दीप्यते॥**

अर्थात् यह सम्पूर्ण ब्रह्मांड अन्धकारपूर्ण हो जाता, यदि संसार में शब्द-स्वरूप ज्योति अर्थात् भाषा का प्रकाश न होता। यह कथन मानव भाषा को लक्ष्य करके कहा गया है। भाषा शब्द संस्कृत के ‘भाष’धातु से बना हुआ है। जिसका मतलब होता है – बोलना।

भाषा के बिना कोई भी काम अधूरा है। भाषा एक संपर्क का, आदान प्रदान का महत्वपूर्ण पहलू है। हम लिखने बोलने या फिर आदि इत्यादि कोई भी कार्य के लिए भाषा का इस्तेमाल करते हैं। कोई भी दूसरी भाषा का प्रयोग करने से पहले हमें उस भाषा की जरूरत के बारे में सोचना चाहिए।

उदाहरण कोई भी नया टूथपेस्ट बाज़ार में आने पर उसका विज्ञापन होता है कि यह मस्डों को मजबूत करता है, दूसरे में कहेंगे यह दातों को चमकाता है तो कोई और कहेगा कि यह पेस्ट बिल्कुल औषधि युक्त है। अब वार्कइ में देखे तो कोई भी व्यक्ति तीन पेस्ट खरीदने नहीं निकलेगा। इसलिए पुराना वही सोना मानकर हमें अपनी राजभाषा हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं का ही व्यापक प्रयोग कार्यालयीन भाषा के तौर पर करना चाहिए ताकि हमारा बैंकिंग व्यवसाय अपना सशक्त संचालन सुचारू रूप से करें। हम सदा ही अपने समाज, रीति रिवाज, भाषा अपने कर्म से जुड़े रहें तो यकीन मानिए आप मुनाफे में ही रहेंगे। आज हर ग्राहक बैंकिंग व्यवसाय से अपनी सुविधा तथा सरलता के लिए जुड़ने के लिए तैयार है, केवल आवश्यकता है ग्राहकों का विश्वास प्रतिपादित करने की ओर वह केवल ग्राहक की संपर्क भाषा राजभाषा हिंदी से ही संभव है।

आज व्यवसाय की वृद्धि के लिए तथा लाभप्रदता बढ़ाने के लिए हमें बाजार की आवश्यकताओं को परिपूर्ण करना जरूरी है क्योंकि ग्राहक बाजार का राजा है। ग्राहक से उनकी भाषा में बात आज की आवश्यकता है अगर बैंकिंग व्यवसाय को बढ़ावा देकर

उन्नति के शिखर पर ले जाने की चाहत है तो आइए साथ ही हमारी राजभाषा हिंदी को भी बढ़ावा दे तथा हिंदी का व्यापक प्रयोग करें। हमारी हिन्दी फलती फूलती रहे और उत्तरोत्तर वार्धक्य को प्राप्त करें।

कहा गया है,

**मंजिल उन्हीं को मिलती है
जिनके सपनों में जान होती है।
सिर्फ पंखों से कुछ नहीं होता,
हौसलों से उड़ान होती है।**

सच में भाषा ही एक ऐसी कट्टी है जो हमें ग्राहकों से जोड़ती है। प्रौद्योगिकी और मल्टीमीडिया के इस युग में भारतीय बैंक अपनी शाखाओं में हिंदी भाषा के प्रयोग से बाजार में अपना अस्तित्व सुनिश्चित कर सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आज इंटरनेट के बढ़ते प्रयोग के फलस्वरूप हिंदी के प्रति लोगों का प्रेम काफी हद तक बढ़ा है। भारतीय समाज में एक विशाल उपभोक्ता वर्ग अपनी आवश्यकताओं को परिपूर्ण सिर्फ अपनी भाषा के माध्यम से करता है। आज बाजार की आवश्यकता और मांग देखकर बैंकों ने सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की वैकल्पिक डिलीवरी चैनल सेवा में भी हिंदी भाषा का विकास किया है।

**दू द टॉप नॉनस्टॉप
बिना रुके निर्बाध रूप से शिखर तक।**

हिन्दी भाषा के प्रचार, प्रसार और संवर्धन का जितना दायित्व नागरिकों और साहित्यकारों का है, उतना महत्व और दायित्व सांस्कृतिक एवं इलेक्ट्रोनिक माध्यमों का भी है। हमारे यहाँ टेलीविजन एवं बॉलीवुड सिनेमा ने हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। लोगों तक हिन्दी भाषा सरलता व सहजता से पहुंचाने में सिनेमा जगत का योगदान अनन्य रहा है। हिन्दी भाषा के टेलीविजन में प्रयोग से चारों ओर हिन्दी का प्रयोग बढ़ा है। आइए हिन्दी भाषा को और बढ़ावा दें और हमारी अपनी भाषा में ही कार्य करें।

भाषा विचारों को मात्र अभिव्यक्त नहीं करती, बल्कि वह हमारी भावना को पूर्णता देती है। आइए हमारी राजभाषा हिन्दी को अपनाए। राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करें, प्रचार करें, प्रसार करें और संवर्धन करें। सच में वह दिन गौरवपूर्ण दिन होगा जब पूरे देश में सारा काम हमारी अपनी राजभाषा हिन्दी में ही होगा। आइए हम भी राजभाषा हिन्दी का प्रयोग संपर्क भाषा और कार्यालयीन भाषा के रूप में शत प्रतिशत करें ताकि कवि इकबाल जी की तरह हम भी गर्व से कह सकें,

हिंदी है हम, वरन है हिंदुस्तान हमारा।

आइए हम सभी मिलकर बढ़ाएं

एक कदम हमारी राजभाषा हिंदी की ओर।

**“मातृभाषा जननी वाङ्यस्य,
मातृभाषा मातृभूमिश्च मातृभाषा।”**

अर्थात्: मातृभाषा वाणी की जननी है, मातृभाषा ही मातृभूमि है।

— श्रीमद्दगवद्गीता



आलेख

यूनिफाइड लेंडिंग इंटरफ़ेस (ULI)- एक नई डिजिटल क्रण परिवर्तन रणनीति

पृष्ठभूमि

भारतीय रिज़र्व बैंक ने क्रण देने की प्रक्रिया में परिवर्तन के लिए डिजिटल क्रण मंच पर एक पायलट परियोजना शुरू की। भारतीय रिज़र्व बैंक ने 10 अगस्त, 2023 को यूनिफाइड लेंडिंग इंटरफ़ेस (यूएलआई / ULI) के शुभारंभ की घोषणा की। यूएलआई एक सार्वजनिक तकनीकी मंच है। जिसका उद्देश्य बैंकों और गैर-बैंक क्रणदाताओं के लिए क्रण स्वीकृति प्रक्रिया को सरल बनाना है। यूएलआई को रिज़र्व बैंक इनोवेशन हब (RBIH) द्वारा विकसित और प्रबंधित किया जाता है, जो भारतीय रिज़र्व बैंक की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है। यूएलआई प्लेटफॉर्म छोटे और ग्रामीण उधारकर्ताओं के लिए लक्षित है। यूएलआई के विपरीत, जिसमें एक खाताधारक से दूसरे खाताधारक को धन हस्तांतरित करने की प्रक्रिया में परिवर्तन लाया और डिजिटल कार्यक्षमता तक पहुँच उपयोगकर्ताओं के पास थी। यूएलआई के मामले में क्रण उत्पादों को तेज़ी से और उन ग्राहकों तक पहुँचाने के लिए बैंकों के पास पहुँच होगी जिन्हें क्रण की आवश्यकता है और जो मजबूत क्रेडिट स्कोर वाले वास्तविक उधारकर्ता हैं और जो चुकाने की क्षमता रखते हैं।

यूनिफाइड लेंडिंग इंटरफ़ेस क्या है?

यूएलआई (ULI) एक डिजिटल प्लेटफॉर्म है जिसका उद्देश्य उधारकर्ताओं के लिए क्रण प्रक्रिया को अधिक कुशल और सुलभ बनाना है। रिजर्व बैंक इनोवेशन हब के सीईओ राजेश बंसल के अनुसार, ULI एक ऐसा प्लेटफॉर्म है जो ग्राहक के डिजिटलीकृत वित्तीय और गैर-वित्तीय डेटा को कई डेटा सेवा प्रदाताओं से उधारदाताओं तक निर्बाध प्रवाह की सुविधा प्रदान करता है, जिससे विभिन्न प्रकार के उधारकर्ताओं के लिए क्रण अंडरराइटिंग सहज और ग्राहक यात्रा को सहज बनाता है।



प्रदीप राज एस.

वरिष्ठ प्रबंधक

सामरिक एवं डेटा विश्लेषिकी विभाग

प्रधान कार्यालय

वर्तमान में यूएलआई एक पायलेट प्रोजेक्ट है जो ग्राहकों को बिना किसी अवरोध के क्रण को सक्षम बनाता है। यह क्रेडिट डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (डीपीआई) प्लेटफॉर्म का एक हिस्सा होगा। यूएलआई का उद्देश्य विभिन्न राज्यों के भूमि रिकॉर्ड सहित डिजिटल सूचनाओं के एक सहज और सहमति-आधारित प्रवाह को सक्षम बनाना है, जो कई डेटा सेवा प्रदाताओं से उधारदाताओं तक उपलब्ध हो।

यूनिफाइड लेंडिंग इंटरफ़ेस की आवश्यकता।

यूएलआई तकनीक का उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों में क्रण की बढ़ती मांगों को पूरा करना होगा, विशेष रूप से कृषि और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एम.एस.एम.ई) उधारकर्ताओं के लिए। ग्राहकों के वित्तीय और गैर-वित्तीय डेटा को स्वचालित और केंद्रीकृत प्लेटफॉर्म पर लाकर, यूएलआई छोटे और ग्रामीण उधारकर्ताओं के लिए क्रण मूल्यांकन प्रक्रिया के लिए आवश्यक समय को कम कर देगा। यह व्यापक दस्तावेजीकरण प्रक्रिया की आवश्यकता के बिना निर्बाध क्रण वितरण और त्वरित टर्नअराउंड समय को सक्षम करेगा। वर्तमान में इस प्रकार के डेटा क्रेडिट सूचना कंपनियों (CIC) द्वारा प्रदान किए जाते हैं। उन्हें भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा लाइसेंस प्राप्त है। वे क्रण, क्रेडिट कार्ड, आदि के संबंध में व्यक्तियों और कंपनियों के सार्वजनिक डेटा, क्रेडिट लेनदेन और भुगतान पृष्ठभूमि एकत्र करते हैं। एकत्र किए गए डेटा के आधार पर, सीआईसी एक क्रेडिट रिपोर्ट बनाते हैं और एक स्कोर तैयार करते हैं। यूएलआई प्लेटफॉर्म उधारकर्ता और क्रणदाता के बीच क्रण देने की प्रक्रिया को सीधे स्वचालित करने के लिए लागू किए जाने पर जबरदस्त बदलाव लाएगा।

यूनिफ्राइड लैंडिंग इंटरफ़ेस की प्रमुख विशेषताएं।

- **ई-सहमति-आधारित पहुँच:** इसका मतलब है कि कोई व्यक्ति अगर डिजिटल प्रक्रिया के माध्यम से ऋण लेना चाहता है तो अपनी स्पष्ट सहमति देनी होती है। सहमति इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से प्राप्त की जा सकती है, जैसे इलेक्ट्रॉनिक सहमति (ई-सहमति) या डिजिटल सूचना-साझाकरण प्लेटफॉर्म। इस तरह की डिजिटल पहुँच ग्राहकों के वित्तीय और गैर-वित्तीय दोनों डेटा तक पहुँच प्रदान की जाएगी, जिसमें भूमि रिकॉर्ड और उधारकर्ताओं की अन्य ऋण भुगतान जानकारी शामिल है।
- **मानकीकृत आर्किटेक्चर :** सामान्य और मानकीकृत एपीआई में मानकीकृत एप्लिकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफ़ेस (एपीआई) की सुविधा होगी जो 'प्लग एंड एंप्ले' दृष्टिकोण की अनुमति देता है, डेटा एक्सेस को सरल बनाता है और तकनीकी एकीकरण जटिलता को कम करता है।
- **बैंकों तक केंद्रीकृत डेटा पहुँच:** यह प्लेटफॉर्म कई स्रोतों से वित्तीय और गैर-वित्तीय डेटा को एकीकृत करेगा, जिससे यह उधारदाताओं के लिए आसानी से सुलभ हो जाएगा।
- **वित्तीय समावेशन:** यूएलआई से कृषि और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एम.एस.ए.ई) जैसे क्षेत्रों में ऋण की बड़ी अप्राप्ति मांग को पूरा करने की उम्मीद है।

यूनिफ्राइड लैंडिंग इंटरफ़ेस परिचालन तंत्र।

बिना किसी क्रेडिट इतिहास या उचित दस्तावेज के ऋण के लिए आवेदन करने वाले उधारकर्ताओं के लिए ऋण प्रक्रिया और स्वीकृत होना भी सबसे कठिन प्रक्रिया है और कभी-कभी ऋण देने वाली संस्था के विवेक के आधार पर यह किया जाता है। अब यूएलआई के साथ, डिजिटल क्रेडिट जानकारी उधारकर्ताओं की विशिष्ट आवश्यकताओं और उत्पादों या सेवाओं की पसंद के साथ संग्रहीत की जा सकती है जो उनकी ऋण आवश्यकता से मेल खा सकती है और इसे एक केंद्रीकृत मंच के माध्यम से उपलब्ध कराया जा सकता है जो उधारकर्ताओं के डेटा तक पहुँच प्रदान करता है और ऋणदाताओं की उत्पाद पेशकश से मेल खाता है ताकि इससे सभी का फायदा होगा।

यूएलआई ऋण आवेदक के वित्तीय लेनदेन और क्रेडिट इतिहास के बारे में केंद्रीकृत डेटा तक पहुँच प्रदान करेगी; यह वित्तीय बाजार सहभागियों को 'प्लग एंड एंप्ले' बिजनेस मॉडल के माध्यम से

ULI के आने से इन लोगों को होगा सबसे ज्यादा फायदा



प्लेटफॉर्म से जुड़कर डेटा तक पहुँचने की भी अनुमति देता है। इसलिए, उधारकर्ता को दस्तावेजों की व्यवस्था करने के लिए खर्च करने की आवश्यकता नहीं है। इसके बजाय बैंक अन्य ऋण देने वाली संस्था यूएलआई प्लेटफॉर्म पर एकीकृत कई स्रोतों से आवेदक के बारे में डेटा प्राप्त कर सकती है।

ऋण चाहने वाली पोल्ट्री फर्म के लिए, ऋणदाता नकदी प्रवाह के बारे में जानने के लिए सहकारी समिति से डेटा प्राप्त कर सकती है; इसी

तरह राज्यों के भूमि अभिलेखों से भूमि स्वामित्व की स्थिति; और खेती के पैटर्न के माध्यम से उसकी वित्तीय स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकता है। ऐसे ही ऋणदाता के लिए उधारकर्ता/आवेदक जिसका अज्ञात क्रेडिट इतिहास यूएलआई प्लेटफॉर्म पर एकीकृत डेटा से पूर्व-अनुमोदित आधार पर ऋण स्वीकृत करने के लिए उसकी ऋण चुकौती क्षमता के बारे में अधिक स्पष्टता प्रदान प्राप्त कर सकता है, ऋणदाता तुरंत उधारकर्ता की आय के अतिरिक्त स्रोतों और उसके व्यवसाय के विकास के साथ उसके भविष्य के नकदी प्रवाह को जान सकते हैं। इस प्रकार उपलब्ध आईटी समाधानों का उपयोग करके बैंक ऋण को मंजूरी देने और मिनटों के भीतर वितरित करने के लिए पूर्व-अनुमोदन निर्णय तेजी से ले सकते हैं।

काश्तकार किसान जिन्हें अक्सर इनपुट और कच्चे माल के लिए कृषि ऋण प्राप्त करने में कठिनाई होती है क्योंकि उनके पास बैंकों को प्रस्तुत करने के लिए भूमि का हक अभिलेख नहीं होता है, वे भी ऋण प्राप्त कर सकते हैं। एल्गोरिदम प्रोग्रामिंग के साथ AI/ML सिस्टम को प्रशिक्षित करके ULI प्लेटफॉर्म बैंकों को आवश्यक सुविधा दे सकता है और इस प्रकार किसान की पहचान उसकी भूमि जोत के माध्यम से नहीं बल्कि उसकी ऋण चुकौती क्षमताओं को साबित करने के लिए वितरित किए जा रहे धन के अंतिम उपयोग के माध्यम से स्थापित कर सकता है।

डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना प्लेटफॉर्मों में प्रमुख संस्था।

- **नेशनल ई-गवर्नेंस सर्विसेज लिमिटेड (NeSL)** केंद्र सरकार की कंपनी है जो ऋणों और दावों से संबंधित कानूनी साक्ष्य के भंडार के रूप में कार्य करती है।
- **केंद्रीय प्रतिपक्ष समाशोधन (CCP)** केंद्रीय समाशोधन प्रतिपक्ष जिसे केंद्रीय प्रतिपक्ष भी कहा जाता है, एक वित्तीय बाजार अवसंरचना संगठन है जो लेनदेन के लिए पार्टियों के बीच प्रतिपक्ष ऋण जोखिम लेता है और विदेशी मुद्रा, प्रतिभूतियों, विकल्पों और डेरिवेटिव में ट्रेडों के लिए समाशोधन और निपटान सेवाएं प्रदान करता है।
- **सीईआरएसएआई (CERSAI)**: भारतीय प्रतिभूतिकरण, आस्ति पुनर्निर्माण और प्रतिभूति हित की केन्द्रीय रजिस्ट्री या सीईआरएसएआई का निर्माण समतामूलक बंधकों के विरुद्ध ऋण लेनदेन में धोखाधड़ी गतिविधि को रोकने के लिए किया गया था।
- **सार्वजनिक ऋण रजिस्ट्री (PCR)**: पीसीआर उधारकर्ताओं की ऋण जानकारी का एक केंद्रीय डेटाबेस है जो सभी ऋण और ऋण निर्णय लेने वाली संस्थाओं के लिए सुलभ है, यह

प्रत्येक ऋण के बारे में सभी जानकारी के लिए अनिवार्य रिपोर्टिंग का एकल बिंदु है, ऋण राशि या उधारकर्ता के प्रकार की किसी भी सीमा के बावजूद, पीसीआर एक उधारकर्ता के बारे में सभी प्रासंगिक जानकारी एकत्र करता है, विभिन्न उधार उत्पादों जैसे बैंकों, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों, कॉर्पोरेट बांड, बाहरी वाणिज्यिक उधार (ईसीबी), विदेशी मुद्रा परिवर्तनीय बांड (एफसीसीबी), मसाला बांड, और अंतर-कॉर्पोरेट उधार - एक ही स्थान पर।

- **अकाउंट एग्रीगेट (AA) फ्रेमवर्क**: ए फ्रेमवर्क एक सहमति-आधारित आरबीआई-विनियमित प्लेटफॉर्म है जो ग्राहकों को विभिन्न संस्थानों के बीच अपनी वित्तीय जानकारी साझा करने में सक्षम बनाता है, जिससे उधारदाताओं के लिए पहुंच आसान होती है और त्वरित, सूचित उधार पर निर्णय लेने में सुविधा होती है।
- **क्रेडिट सूचना कंपनियां (CICs)**: सीआईबीआईएल, इक्विफैक्स, एक्सपेरियन आदि कंपनियां व्यक्तियों और व्यवसायों की क्रेडिट जानकारी एकत्र करती हैं और उसका रखरखाव करती हैं।
- **व्यापार प्राप्य छूट प्रणाली (TReDS)**: TReDS एक इलेक्ट्रॉनिक प्लेटफॉर्म है जो एम.एस.एम.ई को प्रतिस्पर्धी दरों पर अपने व्यापार प्राप्य की नीलामी करने की अनुमति देता है।
- **पीयर-टू-पीयर (P2P) ऋण प्लेटफॉर्म**: फेयरसेंट और जेस्टफाइनेंस जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म व्यक्तियों को एक-दूसरे से सीधे पैसा उधार देने और उधार लेने की अनुमति देते हैं।

वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र को यूनिफ्राइड लैंडिंग इंटरफ़ेस के लाभ।

- **परेशानी मुक्त दस्तावेजीकरण**: यूएलआई का लक्ष्य कागजी कार्रवाई को न्यूनतम करके, विशेष रूप से छोटे और ग्रामीण उधारकर्ताओं के लिए, एक सहज ऋण देने के प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाना है।
- **त्वरित ऋण स्वीकृति मूल्यांकन**: विभिन्न स्रोतों से डेटा को एकत्रित करके और डेटा को एकल मंच पर एकीकृत करके, यूएलआई ऋण मूल्यांकन और स्वीकृति प्रक्रिया के लिए अपेक्षित समय सीमा को कम कर देगा।
- **केंद्रीकृत डेटा पहुंच**: यह प्लेटफॉर्म कई स्रोतों से वित्तीय और गैर-वित्तीय डेटा को एकीकृत करेगा, जिससे यह उधारदाताओं के लिए आसानी से सुलभ हो जाएगा।

- **कृषि और एमएसएमई पर ध्यान:** यूएलआई से कृषि और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) जैसे क्षेत्रों में क्रण की बड़ी अप्राप्ति मांग को पूरा करने की उम्मीद है।

यूनिफ्राइड लैंडिंग इंटरफ़ेस का अन्य सरकारी पहलों से संबंध।

- **जे.ए.एम-यूपीआई-यूएलआई (JAM-UPI-ULI):** आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि यूएलआई जे.ए.एम (जन धन, आधार और मोबाइल), यूपीआई और यूएलआई की 'नई त्रिमूर्ति' का हिस्सा होगा, जो भारत के डिजिटल बुनियादी ढांचे में एक महत्वपूर्ण पहल होगा।
- **डिजिटल अवसंरचना:** विभिन्न डिजिटल क्रण प्रणालियों के एकीकरण का उद्देश्य क्रण की बढ़ती मांग को पूरा करना और अर्थव्यवस्था में वित्तीय समावेशन को बढ़ाना होगा।
- **EASE सुधार एजेंडा:** EASE सुधारों के तहत भारत सरकार ने डिजिटल क्रण मंच के अंतर्गत कई नई पहल की हैं जैसे कि खुदरा, एमएसएमई और कृषि क्रण देने के लिए सीधी प्रक्रिया, न्यूनतम शाखा हस्तक्षेप, शून्य कागजी कार्रवाई, एसएचजी के लिए तत्काल खाता खोलना, क्रेडिट लिंकेज और आंतरिक क्रण और वसूली कार्यप्रवाह आदि।

पढ़ोसी देशों में केंद्रीय बैंक के डिजिटल प्लेटफॉर्म में प्रगति।

- **सिंगापुर का मौद्रिक प्राधिकरण (MAS Singapore):** एम.ए.एस डिजिटल बैंकिंग विनियमन और फिनटेक नवाचार में अग्रणी रहा है, और इसने डिजिटल बैंकों को लाइसेंस जारी किए हैं। सिंगापुर का डिजिटल क्रण क्षेत्र बढ़ रहा है, जिसमें फिनटेक कंपनियाँ और डिजिटल प्लेटफॉर्म व्यक्तियों और छोटे और मध्यम आकार के उद्यमों (एस.एम.ई) को क्रण प्रदान कर रहे हैं।

सिंगापुर में डिजिटल क्रण के कुछ उदाहरण यहां दिए गए हैं :

- **Validus:** एक पी2पी क्रण मंच जो एसएमई को किफायती क्रण प्रदान करने के लिए डेटा और प्रौद्योगिकी का उपयोग करता है।
- **Lendingpot:** एक क्रण बाज़ार जिसके बारे में कुछ लोगों का कहना है कि यह तीव्र और कुशल प्रतिक्रिया प्रदान करता है।
- **बैंक नेगरा मलेशिया (BNM Malaysia):** वित्तीय क्षेत्र में डिजिटलीकरण को बढ़ाने के लिए बीएनएम की कई पहल हैं, जिनमें शामिल हैं:

- **MyTabung:** एक मोबाइल ऐप जो उपयोगकर्ताओं को आय, बचत और व्यय पर नज़र रखकर बजट बनाने में मदद करता है।
- **e-Duit:** ई-भुगतान लेनदेन को बढ़ाने के लिए एक अभियान, जैसे कि भुगतान कार्ड, ई-वॉलेट और मोबाइल बैंकिंग के माध्यम से किए गए लेनदेन।
- **हांगकांग मौद्रिक प्राधिकरण (HKMA Hongkong):** हांगकांग मौद्रिक प्राधिकरण (HKMA) हांगकांग में डिजिटल क्रण और फिनटेक को बढ़ावा देने के लिए कई पहलों पर काम कर रहा है, जिसमें सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी (CBDC) भी शामिल है। HKMA ने e-HKD की व्यावसायिक व्यवहार्यता का पता लगाने के लिए मार्च 2024 में e-HKD पायलट कार्यक्रम के दूसरे चरण की शुरुआत की।
- **Payments System (FPS)** हांगकांग में पीयर-टू-पीयर (पी2पी) उदाहरण है जो हांगकांग मौद्रिक प्राधिकरण (एचकेएमए) के जोखिम प्रबंधन नियमों का पालन करता है।

यूनिफ्राइड लैंडिंग इंटरफ़ेस के कार्यान्वयन में वर्तमान चुनौतियाँ ?

वर्तमान में, क्रण मूल्यांकन के लिए आवश्यक डेटा कई संस्थाओं जैसे सरकारों, बैंकों, खाता एग्रीगेटर्स और क्रेडिट सूचना कंपनियों, नेस्ल आदि में बिखरा हुआ है। ये डेटा साइलो डिजिटल क्रण की सहज और समय पर डिलीवरी में बाधा डालते हैं।

यूएलआई की आर्किटेक्चर इस चुनौती का समाधान मानकीकृत एप्लिकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफ़ेस (एपीआई) के साथ करती है, जिसे 'प्लग एंड एलेवेट' के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो विविध स्रोतों से सूचना तक डिजिटल पहुंच को सरल बनाता है और कई तकनीकी एकीकरणों की जटिलता को कम करता है।

- **पुराने प्रणालियों के साथ एकीकरण:** यूएलआई को मौजूदा पुराने बैंकिंग और वित्तीय प्रणालियों के साथ एकीकृत करना जटिलता और लागत दोनों चुनौतियों को प्रस्तुत करता है। हाल के वर्षों में कई बैंकों का विलय हुआ है और उनके पास अपनी पारंपरिक एमआईएस, डेटा वेयरहाउस पुरानी तकनीक है जो यूएलआई प्लेटफॉर्म या डिजिटल प्लेटफॉर्म के नए इंटरफ़ेस या एपीआई के साथ आसानी से एकीकृत नहीं हो सकती है, इससे सम्भावित व्यवधान पैदा होंगे और सिस्टम अपग्रेड में पर्याप्त निवेश की आवश्यकता है। यह एकीकरण बाधा यूएलआई को निर्बाध रूप से अपनाने में बाधा डाल सकती है।
- **तकनीकी चुनौतियाँ:** यूएलआई प्लेटफॉर्म का क्रियान्वयन डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता और उचित नेटवर्क पहुंच,

पर्याप्त आईटी बुनियादी ढांचे की स्थापना पर निर्भर करेगा। दूरदराज या कम सेवा वाले क्षेत्रों में कृषि, एम.एस.एम.ई क्षेत्रों के उधारकर्ता सीमित इंटरनेट कनेक्टिविटी या अपर्याप्त डिजिटल साक्षरता और सेवाओं के बारे में जागरूकता के साथ संघर्ष कर सकते हैं, जो संभावित रूप से उन्हें प्लेटफॉर्म के लाभों से बंचित कर सकता है। डिजिटल चैनल बनाना और प्रौद्योगिकी के माध्यम से उचित पहुंच बनाना एक चुनौती होगी।

- **विनियामक और अनुपालन मुद्दे:** यूएलआई जैसे डिजिटल लेंडिंग प्लेटफॉर्म का क्रेडिट मूल्यांकन मौजूदा विनियामक ढांचे से आगे निकल सकता है, जिससे विकसित हो रहे वित्तीय विनियामक ढांचे के साथ अनुपालन बनाए रखने में चुनौतियां पैदा हो सकती हैं। नए नियमों को अपनाना और विभिन्न क्षेत्रों में अनुपालन सुनिश्चित करना जटिल और बोझिल हो सकता है, जिसके लिए निरंतर समायोजन और निगरानी की आवश्यकता होती है। विनियमित संस्थाओं को उचित दिशा-निर्देश और निरीक्षण तंत्र प्रदान करने में विनियामक संस्थानों की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। ग्राहक शिकायतों से निपटने और उपयुक्त दिशा-निर्देश और वसूली के तरीके और क्रण बंद करने की औपचारिकताएँ सभी के लिए पारदर्शिता और सख्त अनुपालन ढांचे की आवश्यकता होगी।
- **डेटा गुणवत्ता फ्रेमवर्क (DQ):** यूएलआई की सफलता आरबीआईएच (RBIH) की मजबूत डेटा प्रबंधन क्षमताओं और क्लाउड डेटा के साथ बैंक के ईटीएल तंत्र, उचित डेटा सेंटर प्रबंधन के बीच ग्राहकों के क्रेडिट इतिहास के बारे में डेटा की सटीकता और विश्वसनीयता पर भी निर्भर करेगी। गलत या अपूर्ण डेटा गलत क्रेडिट आकलन का कारण बन सकता है और क्रण स्वीकृति प्रक्रिया को प्रभावित कर सकता है। यूएलआई प्लेटफॉर्म की प्रभावशीलता और उधारकर्ता के विश्वास को बनाए रखने और डेटा सुरक्षा अधिकारी की स्पष्ट भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के साथ विनियमित संस्थाओं के डीपीडीपी अधिनियम 2023 के उचित कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए उच्च डेटा गुणवत्ता सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है।
- **डेटा गोपनीयता और सुरक्षा संबंधी चिंताएं:** जबकि यूएलआई दक्षता और पहुंच को बढ़ाता है, डिजिटल प्लेटफॉर्म पर संवेदनशील वित्तीय डेटा के साथ डेटा स्रोतों का एकीकरण पर्याप्त गोपनीयता और सुरक्षा संबंधी चिंताएँ पैदा करता है। इस डेटा को संभावित उल्लंघनों से बचाना और कड़े डीपीडीपी अधिनियम 2023 विनियमों का अनुपालन सुनिश्चित करना एक महत्वपूर्ण चुनौती है। डेटा चोरी या अनाधिकृत पहुंच के जोखिम के लिए मजबूत एन्क्रिप्शन और सूचना सुरक्षा,

उपयोगकर्ता/ग्राहक जानकारी की सुरक्षा के लिए साइबर सुरक्षा उपायों की आवश्यकता होती है, साथ ही इन संस्थानों के शीर्ष प्रबंधन से जुड़े बेहतर ग्राहक शिकायत निवारण समर्थन की भी आवश्यकता है।

क्या यूएलआई वित्तीय परिस्थितिकी तंत्र में यूपीआई तकनीक की तरह जबरदस्त सफलता प्राप्त कर सकती है?

आरबीआई गवर्नर का मानना है कि यूएलआई का भारत के क्रण परिदृश्य पर बहुत बड़ा परिवर्तनकारी प्रभाव होगा, ठीक वैसे ही जैसे यूपीआई ने भुगतान के लिए हुआ था। उन्होंने जेएएम (जन धन-आधार-मोबाइल), यूपीआई और यूएलआई के संयोजन को नई त्रिमूर्ति के रूप में संदर्भित किया जो भारत की डिजिटल अवसंरचना यात्रा को आगे बढ़ाएगा।

जेएएम (जनधन-आधार-मोबाइल) से तात्पर्य सरकारी सब्सिडी की चोरी रोकने के लिए भारतीयों के जनधन खातों, मोबाइल नंबरों और आधार कार्डों को जोड़ने की सरकारी पहल से है।

यूएलआई क्रणदाताओं को होने वाले संघर्ष कम कर सकता है और डेटा एग्रीगेटर और प्रदाताओं पर निर्भरता को कम करके अधिग्रहण लागत कम कर सकता है। इसके अतिरिक्त, एफआई ग्राहक खर्च व्यवहार और क्षेत्रीय डेटा जैसे कि भूमि रिकॉर्ड और मौसमी फसल समायोजन के लिए मौसम/उपग्रह इमैजिंग को समझने, वैकल्पिक डेटा तक पहुंचने के लिए यूएलआई का उपयोग कर सकते हैं, जिससे अधिक अभिनव अंडरराइटिंग सक्षम हो सकती है – विशेष रूप से नए क्रेडिट उपयोगकर्ताओं के लिए। यूएलआई के साथ डेटा एकत्रीकरण बुनियादी ढांचे में सुधार के साथ, क्रणदाता क्रेडिट चक्र में समाधान का सह-निर्माण कर सकते हैं, उदाहरण के लिए, डिजिटल/वीडियो केवाईसी के लिए एक एकल ढांचा, फसल बीमा के लिए विस्तार, आदि।

ज़ेस्ट फाइनेंस का उपयोग केस (Use case) उदाहरण।

विविध डेटा स्रोतों के एकीकरण ने क्रेडिट जाँच के लिए अपेक्षित समय को काफी कम कर दिया है और क्रण प्रसंस्करण दक्षता में सुधार किया है। पारंपरिक अंडरराइटिंग सिस्टम मुख्य रूप से क्रेडिट ब्यूरो से सीमित संब्यास में डेटा बिंदुओं का उपयोग करके क्रेडिट निर्णय लेते हैं। हालांकि, कई मिलेनियल्स के पास कोई क्रेडिट इतिहास नहीं है या उनकी क्रेडिट फाइलों में डेटा गुम है या गलत है। नतीजतन, उन्हें क्रण देने से मना कर दिया जाता है क्योंकि उन्हें पारंपरिक प्रणालियों द्वारा अंडरराइट नहीं किया जा सकता है। ZAML मशीन लर्निंग का उपयोग करके हजारों गैर-पारंपरिक और पारंपरिक रूप से विश्लेषण करता है ताकि उधारकर्ताओं को अधिक सटीक रूप से स्कोर किया जा सके, जिसमें लघु-फाइल और बिना-फाइल वाले उधारकर्ता शामिल हैं।

ZAML उपलब्ध सारे डेटा का विश्लेषण कर सकता है, जैसे कि ग्राहक सहायता डेटा, भुगतान इतिहास और खरीद लेनदेन। प्लेटफॉर्म पारंपरिक क्रेडिट जानकारी और गैर-पारंपरिक क्रेडिट को भी जोड़ सकता है, जैसे कि ग्राहक किसी फॉर्म को कैसे भरता है, वे क्रृदाता की साइट पर कैसे नेविगेट करते हैं, और बहुत कुछ।

निष्कर्ष

यूएलआई क्रण मूल्यांकन और क्रण देने की प्रक्रियाओं में एक महत्वपूर्ण प्रगति का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो पारंपरिक प्रसंस्करण को बदल देता है। पारंपरिक क्रेडिट रिपोर्ट, वैकल्पिक डेटा और व्यवहार पैटर्न सहित विभिन्न वित्तीय संस्थानों के डेटा स्रोतों, डेटा मार्ट, डेटावेयरहाउस के एक विस्तृत श्रृंखला को एकीकृत करके, यूएलआई प्लेटफॉर्म एक व्यक्तिगत उधारकर्ता और संस्थान की क्रण पात्रता के बारे में अधिक समग्र और सटीक दृष्टिकोण प्रदान करता है। एआई और मशीन लर्निंग का बेहतर एकीकरण क्रेडिट मूल्यांकन पद्धतियों को और अधिक परिष्कृत करने के लिए तैयार है, जिससे अधिक सटीक और व्यक्तिगत क्रेडिट मूल्यांकन प्रदान किया जा सके। बायोमेट्रिक और केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्रा लेनदेन सहित वैकल्पिक डेटा स्रोतों का विस्तार, वित्तीय व्यवहार, उधारकर्ता क्रेडिट इतिहास की व्यापक समझ प्रदान करने का वादा करता है। अंत में, एकीकृत क्रण इंटरफेस क्रेडिट मूल्यांकन और क्रण प्रथाओं को बदलने में सबसे आगे हैं। उन्नत प्रौद्योगिकियों और वैकल्पिक डेटा स्रोतों को एकीकृत करने की उनकी क्षमता वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र को नया रूप देगी। जैसे-जैसे तकनीक विकसित होती जा रही है, संबंधित चुनौतियों को सोच-समझकर और रणनीतिक रूप से नेविगेट करना महत्वपूर्ण है, यह सुनिश्चित करना कि यूएलआई के लाभों को वित्तीय समावेशन में मदद करने और भारत के लिए वित्तीय बाजार को विकसित करने के लिए बेहतर तरीके हैं।

संदर्भ।

- आरबीआई द्वारा यूनिफाइड लैंडिंग इंटरफेस क्या है? ललतेन्दु मिश्रा सितम्बर 03, 2024 द हिन्दू।
- आरबीआई गवर्नर ने बैंगलुरु में डीपीआई और उभरती प्रौद्योगिकियों पर वैश्विक सम्मेलन को संबोधित किया - <https://www.newsonair.gov.in>
- आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने यूएलआई का अनावरण किया, कहा 'जेएएम-यूपीआई-यूएलआई की नई त्रिमूर्ति क्रण क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम होगी' - शिवांगिनी, लाइवमिट दिनांक 27.08.2024।
- पीएसबी के लिए EASE सुधार मीट्रिक्स उपलब्ध।
- <https://www.businesswire.com/news/-बर्कशायर> हैथवे कंपनी।



कविता

ओरे की कहानी

कुमार गौरव

अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय विजयवाड़ा

मैं नहा सा इक पौधा था, वृक्षों से था मैं घिरा हुआ,
वो किस्से मुझे सुनाते थे, उनके बीच मैं बड़ा हुआ।
धीरे-धीरे उनसे मैंने, अपने अस्तित्व को पहचाना,
क्यों आया मैं इस धरती पर, उनको देख ये है जाना।
जब छोटा था उनसे पूछूँ इन पंछियों को क्यों सहते हो ?
वो हसकर इतना कहते थे तुम भी तो धरा पर बसते हो।
फिर धीरे-धीरे ज्ञान हुआ, मुझसे धरती की हरियाली
मुझसे ही तो है खुशहाली, मुझसे ही सुबह की है प्याली।
हो कोई पशु, या हो मनुष्य, वो मुझसे जीवन पाते हैं,
मैं सांस भरूँ तब साँसे लें, फिर लौट के मुझमें आते हैं।
जब भूख लगे, मैरे फल से, वो अपनी भूख मिटाते हैं,
जब धूप हुई, छाँव में वो, अपनी थकान मिटाते हैं।
एक रोज़ एक पंछी ने बोला, वो तुम्हें काटने वाले है,
मैं बोला, ये नामुकिन है, मेरे बिन, क्या जीने वाले हैं?
फिर रात हुई, सब सोते थे, मैं मूंदा अपनी नयना था,
थी खामोशी, था वही सुकून, खुद में मदहोश वो रैना था।
फिर धर्घ-धर्घ सी आवाज हुई, आधात वो करने कूदा था,
जिसे छाँव दिया, जिसे सांसे दी, वो मेरी जान का भूखा था।
इक तेज़ रोशनी अँखियों पर, उस रात न जाने कहाँ से थी ?
वो दीप थी या, थी कोई चिता ? उस रात जो रौशन करती थी।
मुझपर वार वो करने को, बड़ी मशीनें लाया था,
मैं फिर भी यूँ मुस्काता था, जाहिल वो, समझ ना पाया था।
मेरी लाशों पर से वो, खुद अपनी कब्र बिछाएगा,
हाँ मुझे मारने आया वो, पर खुद घुट-घुट मर जाएगा।
अब जाते-जाते सवाल यही, मैं उनसे पूछे जाता हूँ,
विकास जिसे ये कहते हैं, क्या मैं विनाश कह सकता हूँ?



आलेख

वित्तीय सेवाओं के प्रसार में सोशल मीडिया की भूमिका

परिचय:

आज के डिजिटल युग में, सोशल मीडिया ने व्यवसायों के अपने लक्षित दर्शकों के साथ जुड़ने के तरीके में क्रांति ला दी है। सोशल मीडिया की शक्ति सराहनीय है क्योंकि आप विज्ञापन पोस्ट करने के कुछ ही सेकंड के भीतर बड़ी संख्या में लोगों तक पहुंच जाते हैं जिससे आपको अपनी लागत कम करने में मदद मिलती है और आपके विज्ञापन इन सोशल मीडिया विज्ञापनों के माध्यम से आपके संभावित दर्शकों तक पहुंचते हैं।

यह बदलाव वित्तीय सेवा क्षेत्र में विशेष रूप से स्पष्ट है, जहाँ सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म परंपरिक मार्केटिंग रणनीतियों के पूर्क हैं। एक शक्तिशाली मार्केटिंग टूल के रूप में सोशल मीडिया के उभरने से वित्तीय सेवा प्रदाताओं के लिए नए अवसर और चुनौतियाँ सामने आई हैं। वित्तीय संस्थानों ने अपने ग्राहकों और संभावित ग्राहकों से जुड़ने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म की क्षमता को पहचाना है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में वित्तीय सेवा उद्योग में सोशल मीडिया के उपयोग के बारे में रोचक तथ्य

- जेन-एक्स के अधिकांश लोग वित्तीय जानकारी और सलाह के लिए सोशल मीडिया का सहारा लेते हैं और 70 प्रतिशत लोग पहले से ही सेवानिवृत्ति के लिए बचत कर रहे हैं।
- 40 प्रतिशत मिलेनियल्स को अपने पैसे का प्रबंधन करने के लिए व्यक्तिगत वित्तीय सलाहकार की सहायता की आवश्यकता होती है।
- अमेरिकन बैंकर्स एसोसिएशन की एक रिपोर्ट के अनुसार, संयुक्त राज्य अमेरिका में लगभग 10 में से 9 बैंक सोशल मीडिया पर अत्यधिक या कुछ हद तक सक्रिय हैं।



शशि कान्त पाण्डेय

वरिष्ठ प्रबन्धक
केनरा बैंक प्रबंधन संस्थान, मणिपाल

- वित्तीय सेवाओं की खरीदारी करने वाले उपभोक्ता अक्सर ऑनलाइन खोज के साथ अपनी यात्रा शुरू करते हैं।
- अमेरिकी वित्तीय उद्योग का डिजिटल विज्ञापन खर्च 2023 तक 30 बिलियन से अधिक होने का अनुमान है।

व्हाट्सएप, यूट्यूब, फेसबुक, एक्स (जिसे पहले ट्रिटर के नाम से जाना जाता था), लिंकडइन और इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफॉर्म वित्तीय सेवा प्रदाताओं को अपनी पेशकशों को प्रदर्शित करने, ब्रांड जागरूकता पैदा करने और वास्तविक समय में अपने दर्शकों के साथ बातचीत करने के लिए एक गतिशील स्थान प्रदान करते हैं। इन प्लेटफॉर्म पर उपभोक्ताओं से सीधे संवाद करने की क्षमता आधुनिक मार्केटिंग रणनीतियों की आधारशिला बन गई है।

वित्तीय उत्पादों और सेवाओं के प्रसार में सोशल मीडिया की भूमिका समझने से पहले, आइए वित्तीय उत्पादों और सेवाओं को समझें:

वित्तीय सेवाएं:

वित्तीय सेवाओं में अकाउंटेंसी, निवेश बैंकिंग, निवेश प्रबंधन और व्यक्तिगत धन प्रबंधन शामिल हैं, जबकि वित्तीय उत्पादों में बीमा, क्रेडिट कार्ड, सुरक्षित और असुरक्षित ऋण, पेंशन फंड आदि शामिल हैं।

वित्तीय उत्पादों और सेवाओं को अक्सर वित्तीय उद्योग में एक दूसरे के स्थान पर उपयोग किया जाता है क्योंकि सेवा एक प्रमुख घटक है, और वित्तीय उत्पादों को सेवा के बिना अकेले नहीं बेचा जा सकता है।

आम तौर पर, वित्तीय सेवाएँ वित्तीय संस्थानों द्वारा प्रदान की जाने वाली वित्त से संबंधित आर्थिक सेवाएँ हैं। वित्तीय सेवाएँ सेवा क्षेत्र की गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला को कवर करती हैं, विशेष रूप से वित्तीय प्रबंधन और उपभोक्ता वित्त से संबंधित गतिविधियाँ।

भारत में सोशल मीडिया का वर्तमान परिदृश्य

डेटा रिपोर्ट के अनुसार, जनवरी 2024 तक भारत में 751.5 मिलियन इंटरनेट उपयोगकर्ता थे और भारत में 460.2 मिलियन सक्रिय सोशल मीडिया उपयोगकर्ता थे जो भारत की कुल जनसंख्या का 32.2 प्रतिशत है। इस बीच, प्रमुख सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के विज्ञापन नियोजन टूल के डेटा से पता चलता है कि 2024 की शुरुआत में भारत में 18 वर्ष और उससे अधिक आयु के 383.0 मिलियन उपयोगकर्ता सोशल मीडिया का उपयोग करते थे जो उस समय 18 वर्ष और उससे अधिक आयु की कुल आबादी का 38.1 प्रतिशत था। इसे व्यापक दृष्टिकोण से देखें तो भारत के कुल इंटरनेट उपयोगकर्ता आधार (यदि उम्र को न देखा जाए तो) के 61.5 प्रतिशत ने जनवरी 2024 में कम से कम एक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग किया।

मेटा के स्वामित्व वाला व्हाट्सएप मुख्य रूप से इंस्टेट मैसेंजिंग सेवाओं के लिए लोकप्रिय है और भारत में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के उपयोग की बात करें तो यह शीर्ष स्थान पर है। रिपोर्ट बताती है कि फरवरी 2024 तक भारत में कुल 481.2 मिलियन एप्लिकेशन डाउनलोड हुए थे और भारत में व्हाट्सएप उपयोगकर्ताओं की संख्या सबसे अधिक थी, उसके बाद इंडोनेशिया (87 मिलियन) का स्थान था।

यूट्यूब को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के रूप में वर्गीकृत किया गया है क्योंकि यह उपयोगकर्ताओं को सब्सक्राइबर के साथ सामग्री साझा करने, समुदाय बनाने और दूसरों के साथ संवाद करने की अनुमति देता है। गूगल के विज्ञापन संसाधनों के अनुसार, यूट्यूब के 462.0 मिलियन उपयोगकर्ता थे, जो 2024 की शुरुआत में भारत में दूसरे सबसे अधिक थे। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि ये विज्ञापन पहुंच अनुमान मासिक सक्रिय उपयोगकर्ता आंकड़ों के अनुरूप नहीं हैं, और यूट्यूब के विज्ञापन दर्शकों के आकार और इसके कुल सक्रिय उपयोगकर्ता आधार के बीच महत्वपूर्ण विसंगतियां हो सकती हैं।

हालांकि, कंपनी के आंकड़ों के अनुसार, 2024 की शुरुआत में यूट्यूब की विज्ञापन पहुंच उस समय भारत की कुल आबादी के 32.2 प्रतिशत के बराबर थी। उन आंकड़ों को संदर्भ में रखने के लिए, जनवरी 2024 में यूट्यूब विज्ञापन भारत के कुल इंटरनेट उपयोगकर्ता आधार के 61.5 प्रतिशत तक पहुंच गए।



फेसबुक मेटा के स्वामित्व वाला एक और लोकप्रिय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म है। मेटा के विज्ञापन संसाधनों में सामने आए डेटा के अनुसार, फेसबुक के 366.9 मिलियन उपयोगकर्ता थे, जो 2024 की शुरुआत में अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म की तुलना में भारत में उपयोगकर्ताओं की तीसरी सबसे बड़ी संख्या थी। 2024 की शुरुआत में, भारत में फेसबुक की विज्ञापन पहुंच कुल आबादी का 25.6 प्रतिशत थी। हालांकि, मेटा केवल 13 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों को ही फेसबुक तक पहुंचने की अनुमति देता है, इसलिए यह ध्यान देने योग्य है कि 2024 में भारत की 32.4 प्रतिशत 'पात्र' आबादी ने फेसबुक (मेटा) का उपयोग किया।

'इंस्टाग्राम' मेटा के स्वामित्व वाला एक और लोकप्रिय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म है। मेटा के विज्ञापन टूल में प्रकाशित संख्याएँ बताती हैं कि इंस्टाग्राम के 362.9 मिलियन उपयोगकर्ता थे, जो 2024 की शुरुआत में भारत में चौथी सबसे बड़ी संख्या थी। यह भी ध्यान देने योग्य है कि 2024 की शुरुआत में भारत में इंस्टाग्राम की विज्ञापन पहुंच स्थानीय इंटरनेट उपयोगकर्ता आधार के 48.3 प्रतिशत के बराबर थी।

स्नैपचैट, फेसबुक मैसेंजर, लिंकडइन और एक्स (पूर्ववर्ती ट्विटर) भारत में उपयोगकर्ताओं की संख्या के मामले में 201 मिलियन, 121.6 मिलियन, 120 मिलियन और 26.08 मिलियन उपयोगकर्ताओं के साथ 5वें, 6वें, 7वें और 8वें स्थान पर थे।

वित्तीय उत्पादों और सेवाओं में, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म उपभोक्ताओं से जुड़ने, ब्रांड की दृश्यता बढ़ाने और ग्राहक अधिग्रहण को बढ़ावा देने के लिए अद्वितीय चैनल प्रदान करते हैं। आइए सोशल मीडिया मार्केटिंग की अवधारणाओं को समझें और जानें कि यह वित्तीय सेवाओं को कैसे लाभ पहुंचा सकता है।

सामाजिक मीडिया विपणन (एसएमएम)

सोशल मीडिया मार्केटिंग (एसएमएम) डिजिटल मार्केटिंग का एक रूप है जो लोगों को जोड़ने और मार्केटिंग उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग करता है जैसे कि कंपनी की ब्रांड उपस्थिति बढ़ाना, बिक्री उत्पन्न करना, वेबसाइट ट्रैफ़िक बढ़ाना, मजबूत ग्राहक संबंध बनाना आदि। यह सभी आकारों के संगठनों को ग्राहकों और संभावनाओं से जुड़ने में मदद कर सकता है।

सोशल मीडिया मार्केटिंग में अक्सर फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, लिंकडइन और अन्य सोशल मीडिया साइट्स पर इमेज, वीडियो, लेख और इन्फोग्राफिक्स जैसी विभिन्न सामग्री विकसित करना और साझा करना शामिल होता है। यह सामग्री अक्सर साझा करने योग्य और ब्रांड चर्चा उत्पन्न करने के लिए बनाई जाती है।

सामग्री बनाने के अलावा, सोशल मीडिया मार्केटिंग में टिप्पणियों, सीधे संदेशों और अन्य प्रकार के कनेक्शन के माध्यम से अनुयायियों के साथ बातचीत करना शामिल है। इससे आपको अपने फॉलोअर्स के साथ संबंध विकसित करने, ब्रांड के प्रति वफादारी स्थापित करने और अपने ब्रांड के ईर्द-गिर्द एक समुदाय बनाने में मदद मिल सकती है। एसएमएम की शक्ति सोशल मीडिया की ग्राहकों से जुड़ने, बातचीत करने और जानकारी एकत्र करने की बेजोड़ क्षमता से उत्पन्न होती है। आइए नीचे इन कारकों पर विस्तार से नज़र डालें:

✓ जुड़ाव

सोशल मीडिया न केवल व्यवसायों को पहले से अकल्पनीय तरीकों से ग्राहकों से जुड़ने की अनुमति देता है, बल्कि यह लक्षित दर्शकों से जुड़ने के लिए अविश्वसनीय तरीके भी प्रदान करता है, जिसमें कंटेंट प्लेटफॉर्म (जैसे यूट्यूब) से लेकर सोशल नेटवर्क (जैसे फेसबुक) और माइक्रोब्लॉगिंग सेवाएँ (जैसे एक्स) शामिल हैं।

✓ परस्पर संवाद

सोशल मीडिया पर बातचीत की गतिशील प्रकृति, चाहे वह प्रत्यक्ष बातचीत हो या निष्क्रिय पसंद, व्यवसायों को मौजूदा और भावी ग्राहकों के बीच इलेक्ट्रॉनिक वर्ड-ऑफ-माउथ अनुशंसाओं द्वारा प्रदान किए गए मुफ़्त विज्ञापन अवसरों का लाभ उठाने की अनुमति देती है। न केवल इसका सकारात्मक संक्रामक प्रभाव उपभोक्ता निर्णयों का एक महत्वपूर्ण प्रेरक है, बल्कि यह तथ्य कि ये बातचीत सोशल नेटवर्क पर होती है, उन्हें मापने योग्य बनाती है। उदाहरण के लिए, व्यवसाय अपनी सामाजिक इकिटी का आकलन कर सकते हैं, एक शब्द जिसका उपयोग उनकी सोशल मीडिया मार्केटिंग पहल से

निवेश पर रिटर्न (आरओआई) का वर्णन करने के लिए किया जाता है।

✓ ग्राहकों के बारे में जानकारी

एक अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई सोशल मीडिया मार्केटिंग रणनीति मार्केटिंग परिणामों को बेहतर बनाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण संसाधन प्रदान करती है, यानी उपभोक्ता डेटा। बड़े डेटा के तीन बी (वॉल्यूम, वैरायटी और वेलोसिटी) से अभिभूत होने के बजाय, एसएमएम उपकरण उपभोक्ता डेटा एकत्र कर सकते हैं और इसे उपयोगी बाजार विश्लेषण या यहां तक कि क्राउडसोर्स आविष्कारशील रणनीतियों में परिवर्तित कर सकते हैं।

सामाजिक मीडिया माध्यमों का लाभ:

1. ब्रांड जागरूकता में वृद्धि

सोशल मीडिया व्यवसायों को बड़ी संख्या में दर्शकों और संभावित ग्राहकों तक पहुंचने की अनुमति देता है, जो शायद उनके ब्रांड के बारे में नहीं जानते हों। व्यवसाय अक्सर आकर्षक सामग्री साझा करके और अपने ब्रांड के ईर्द-गिर्द एक समुदाय बनाकर ब्रांड जागरूकता और पहचान बढ़ा सकते हैं।

2. लागत प्रभावी विपणन

पारंपरिक तरीकों की तुलना में, सोशल मीडिया मार्केटिंग काफी कम खर्चीली हो सकती है। कई सोशल मीडिया नेटवर्क मुफ़्त ऑर्गेनिक पहुंच प्रदान करते हैं और भुगतान किए गए विज्ञापन विकल्प आम तौर पर पारंपरिक विज्ञापन रणनीतियों की तुलना में कम महंगे होते हैं।

3. बेहतर ग्राहक जुड़ाव

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म व्यवसायों और उनके ग्राहकों के बीच सीधे संचार की सुविधा प्रदान करते हैं। व्यवसाय ग्राहक टिप्पणियों और संदेशों पर प्रतिक्रिया करके ग्राहक संबंधों को मजबूत कर सकते हैं और ग्राहक संतुष्टि बढ़ा सकते हैं।

4. प्रतिस्पर्धी लाभ

सोशल मीडिया मार्केटिंग फर्मों को ग्राहकों के साथ अधिक व्यक्तिगत और आकर्षक तरीके से जुड़ने और पारंपरिक मार्केटिंग रणनीति की तुलना में बड़े दर्शकों तक पहुंचने की अनुमति देती है।

5. लीड जनरेशन में वृद्धि

सोशल मीडिया मार्केटिंग एक शक्तिशाली लीड-जनरेशन टूल हो सकता है, खासकर लक्षित विज्ञापन और लीड-कैचर फॉर्म के

साथ। व्यवसाय संभावित ग्राहकों को संपर्क जानकारी साझा करने के लिए राजी कर सकते हैं और उत्कृष्ट सामग्री और प्रोत्साहन प्रदान करके इसे लीड में बदल सकते हैं।

6. लक्षित विज्ञापन

कई सोशल मीडिया नेटवर्क में अनुकूलित विज्ञापन विकल्प शामिल होते हैं, जिससे फ़र्मों को उप्र, क्षेत्र, शौक और व्यवहार के आधार पर विशिष्ट दर्शकों तक पहुँचने की अनुमति मिलती है। इससे व्यवसायों को अपने विज्ञापन के पैसे से अधिकतम लाभ प्राप्त करने और सबसे प्रासंगिक दर्शकों को लक्षित करने में मदद मिल सकती है।

7. ग्राहक निष्ठा में वृद्धि

सोशल मीडिया पर नियमित जुड़ाव उपभोक्ताओं के बीच विश्वास और निष्ठा बढ़ा सकता है। इससे ग्राहकों की संख्या में वृद्धि हो सकती है और बार-बार व्यापार हो सकता है।

8. मापनीय परिणाम

सोशल मीडिया मार्केटिंग अभियान की सफलता को ट्रैक करने के लिए कंपनियों को सटीक जानकारी और अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। इससे संगठनों को अपनी रणनीतियों को बेहतर बनाने और डेटा-संचालित निर्णय लेने में मदद मिल सकती है।

9. बिक्री में वृद्धि

सोशल मीडिया मार्केटिंग व्यवसायों को सोशल मीडिया विज्ञापनों और उत्पाद लिस्टिंग के माध्यम से खरीदारी के लिए एक स्पष्ट चैनल देकर बिक्री बढ़ाने में मदद कर सकती है। व्यवसाय बिना किसी परेशानी के खरीदारी का अनुभव प्रदान करके बिक्री और रूपांतरण दर बढ़ा सकते हैं।

10. वास्तविक समय प्रतिक्रिया

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म व्यवसायों को अपने ग्राहकों के साथ जुड़ने का एक सीधा चैनल प्रदान करते हैं, जिससे उन्हें अपने उत्पादों और सेवाओं पर वास्तविक समय पर प्रतिक्रिया प्राप्त करने की अनुमति मिलती है। यह प्रतिक्रिया पूरे ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाने और उन्हें डेटा-संचालित निर्णय लेने में मदद कर सकती है।

11. विशाल और विविध श्रोतागण

वैश्विक स्तर पर अरबों उपयोगकर्ताओं के साथ, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म व्यवसायों को पहुँचने और उनसे जुड़ने के लिए बड़े पैमाने पर संभावित दर्शक वर्ग प्रदान करते हैं।

12. वैश्विक पहुँच

सोशल मीडिया मार्केटिंग आपको अपने आइटम को वैश्विक स्तर पर विज्ञापित करने की अनुमति देता है, चाहे वह किसी भी स्थान पर हो। वैकल्पिक रूप से, इस बात पर विचार करें कि आप अपने लक्षित ग्राहक तक कैसे पहुँचेंगे। सोशल मीडिया मार्केटिंग इंटरनेट मार्केटप्लेस के माध्यम से वैश्विक स्तर पर आपके बाजार हिस्से को सुरक्षित करती है।

वित्तीय सेवाओं के सफल सोशल मीडिया मार्केटिंग के लिए व्यावहारिक रणनीतियाँ

अब जब हम सोशल मीडिया मार्केटिंग की अवधारणा और इसके लाभों, वित्तीय सेवाओं के सोशल मीडिया मार्केटिंग से जुड़ी चुनौतियों और वित्तीय संस्थानों के लिए इसके द्वारा प्रस्तुत अवसरों को समझ चुके हैं, तो आइए वित्तीय सेवाओं के सोशल मीडिया मार्केटिंग को सफल बनाने के लिए लागू की जा सकने वाली प्रभावी रणनीतियों के बारे में जानें।

✓ अपने सोशल मीडिया लक्ष्यों और लक्षित वर्ग को परिभाषित करें:

जब आप अपने वित्तीय सोशल मीडिया मार्केटिंग के लिए स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करते हैं, तो आप नियोजित लाभ प्राप्त करने में सक्षम होंगे। आप विशिष्ट परिणामों के लिए लक्ष्य बना रहे हैं चाहे वह ब्रांड जागरूकता बढ़ाना हो, आपकी वेबसाइट पर ट्रैफ़िक लाना हो, लीड उत्पन्न करना हो या ग्राहक विश्वास का निर्माण करना हो। आप जानते हैं कि आप क्या लक्ष्य बना रहे हैं और हर पोस्ट, हर जुड़ाव, उन लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में एक कदम है।

✓ सही सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म चुनें:

वित्तीय सोशल मीडिया मार्केटिंग में उपयुक्त सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म चुनना एक महत्वपूर्ण कदम है। प्रत्येक प्लेटफॉर्म अद्वितीय सुविधाएँ, क्षमताएँ और सीमाएँ प्रदान करती हैं जो आपकी पहुँच, जुड़ाव और ब्रांड छवि को प्रभावित कर सकता है।

✓ आकर्षक और शिक्षाप्रद सामग्री बनाएँ:

चूंकि लोगों का ध्यान कम होता जा रहा है इसलिए सोशल मीडिया पर अपने दर्शकों का ध्यान आकर्षित करना काफी चुनौतीपूर्ण हो सकता है, खासकर तब जब आप सभी विषयों में से वित्त के बारे में बात कर रहे हों। हालाँकि, सही रणनीतियों के साथ, आप आकर्षक सामग्री बना सकते हैं जो न केवल आपके दर्शकों को जोड़ेगी बल्कि उनकी वित्तीय यात्रा में मूल्य भी जोड़ेगी।

✓ अपने श्रोताओं से जुड़ें और बातचीत करें

सोशल मीडिया पर अपने दर्शकों से जुड़ने का मतलब सिर्फ सामग्री पोस्ट करने से कहीं ज्यादा है। यह बातचीत शुरू करने, उनकी प्रतिक्रिया सुनने और दो-तरफा कनेक्शन बनाने के बारे में है।

✓ अपने सोशल मीडिया प्रदर्शन को मापें और उसका विश्लेषण करें

आजकल, सोशल मीडिया एनालिटिक्स को मापना सिर्फ एक चलन या कोई अच्छी बात नहीं रह गई है। कल्पना करें कि आप एक वित्तीय सेवा प्रदाता हैं जिसका मिशन निवेश सलाह प्रदान करना है। अपने सोशल मीडिया डेटा का विश्लेषण करके, आप पता लगा सकते हैं कि आपके दर्शकों की रुचि रिटायरमेंट प्लानिंग, स्टॉक या रियल एस्टेट निवेश में ज्यादा है या नहीं।

उपसंहार :

वित्तीय सेवाओं में चीजें तेजी से बदल रही हैं, क्रिप्टो के उदय से लेकर फिनटेक ऐप श्रेणी की वृद्धि से लेकर रोबो-सलाहकारों की वृद्धि तक। जैसे-जैसे वित्तीय सेवाएँ एक अधिक डिजिटल उद्योग बनती जा रही हैं, सोशल मीडिया मार्केटिंग इस क्षेत्र में प्रचार का एक अधिक महत्वपूर्ण साधन बनता जा रहा है।

सोशल मीडिया एक गतिशील परिदृश्य है, इसलिए इन संस्थाओं को अपने प्रदर्शन पर लगातार नजर रखनी चाहिए, अपनी सोशल मीडिया मार्केटिंग रणनीतियों को अनुकूलित करना चाहिए तथा वित्तीय सेवा उद्योग में प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त बनाए रखने के लिए नवीनतम रुझानों से अपडेट रहना चाहिए।

संक्षेप में, सोशल मीडिया मार्केटिंग वित्तीय संस्थानों को अपने लक्षित दर्शकों के साथ बातचीत करने, ब्रांड जागरूकता बढ़ाने और सार्थक संबंध विकसित करने के लिए शानदार अवसर प्रदान करती है। वित्तीय विपणक प्रभावी चैनलों का उपयोग करके, उभरते रुझानों को अपनाकर और बाधाओं का सामना करने के लिए नई रणनीति विकसित करके सोशल मीडिया के विकसित होते माहौल में सफलतापूर्वक नेविगेट कर सकते हैं।



तुम्हारा समय सीमित है,
इसलिए इसे किसी और
की जिंदगी जी कर व्यर्थ मत करो
— स्टिव जोब्स



गायत्री कांबले

अधिकारी

मुंगेली शाखा



कविता

हम औरतें हैं
जनाब....

खुद की उड़ान भरना जानते हैं।
हमें है कुछ मर्यादा ये भी मानते हैं॥

हमारे जैसे कोई होकर तो देखें।
जिंदगीभर दूसरों के लिए जीकर तो देखें॥

घर और नौकरी दोनों हैं संभालते।
रिश्तों को भी है बांधकर रखते॥

हमारा हम रहना भी है ज़रूरी।
ताकि रह ना जाए कहानी हमारी अधूरी॥

हर बार हमने कर दिखाया, हम हैं सबपे भारी।
शक्ति होती है नारी, समझो ना इन्हें कमज़ोरी॥

सपने भी देखें ऐसे जो कर सकें पूरे।
परिवार के लिए कुछ सपने छोड़ दें अधूरे॥

संसार और संस्कार अच्छे से हैं संभालते।
खुद की रक्षा करने को माँ काली भी हैं बनते॥

हमारा आत्मनिर्भर होना भी है आवश्यक।
ताकि काबिलियत पर हमारी करें ना कोई शक॥

अगर आ जाएं हम अपने पे।
कर दिखाएं पूरे हर सपने को॥

नहीं कर सकता कोई हमसे बराबरी।
क्योंकि हम औरतें हैं जनाब, खुद की उड़ान भरना जानते हैं।





आलेख

उच्च शिक्षा या कौशल अर्जन। समय की मांग क्या है?

प्रस्तावना

शिक्षित बेरोजगारी में वृद्धि को देखते हुए अब केवल डिग्री प्राप्त करना ही वांछनीय नहीं है। व्यक्तिगत और राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के अलावा कौशल की मांग हो रही है। डिग्री प्राप्त करना औपचारिक शिक्षा की निशानी है लेकिन यह अब व्यक्तिगत विकास, सामाजिक स्थिरता या वित्तीय सुरक्षा की गारंटी नहीं देती है। कौशल रखने वाला हर व्यक्ति शिक्षित नहीं है इसी तरह उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाला प्रत्येक व्यक्ति कुशल नहीं है। आज बिना शिक्षा के कौशल उतना ही अधूरा है जितना कि बिना कौशल के शिक्षा। शिक्षा या कौशल की आवश्यकता व्यावहारिक रूप से कार्य करने की प्रकृति पर निर्भर करती है।

उच्च शिक्षा का अर्थ:

उच्च शिक्षा किसी भी समाज की रीढ़ होती है। उच्च शिक्षा की गुणवत्ता किसी देश में मानव संसाधन की गुणवत्ता तय करती है। उच्च शिक्षा में विश्वविद्यालय में शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया शामिल है। उच्च शिक्षा गहन ज्ञान और समझ प्रदान करती है ताकि छात्र ज्ञान के नए मोर्चे पर आगे बढ़ सके। उच्च शिक्षा आजीवन सीखने के अवसर भी प्रदान करती है, जिससे लोगों को सामाजिक आवश्यकताओं के आधार पर समय-समय पर अपने ज्ञान को उन्नत करने का अवसर मिलता है। औपचारिक शिक्षा के सन्दर्भ में शिक्षा के तीन चरण होते हैं- प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा और उच्च या विश्वविद्यालय स्तर माध्यमिक शिक्षा के बाद डिग्री स्तर के स्नातकोत्तर तक शिक्षा के चरणों को उच्च शिक्षा माना जाता है। सरल शब्दों में, उच्च शिक्षा माध्यमिक शिक्षा से ऊपर की शिक्षा है, जो आमतौर पर ग्रेड 13 से शुरू होती है, जो कॉलेजों, विश्वविद्यालयों और स्नातक स्कूलों, जूनियर कॉलेजों द्वारा प्रदान की जाती है। उच्च शिक्षा को शिक्षा का तृतीय स्तर कहा जा सकता है, जो शिक्षा पिरामिड का शीर्ष है। उच्च शिक्षा सामान्य शिक्षा या गैर-तकनीकी शिक्षा के साथ-साथ तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा की हो सकती है।



मोहम्मद इमरान अंसारी

राजभाषा अधिकारी

क्षेत्रीय कार्यालय, मुरादाबाद

उच्च शिक्षा का मुख्य उद्देश्य समग्र अर्थव्यवस्था के लिए पर्याप्त और योग्य मानव संसाधनों का उत्पादन करना है। उच्च शिक्षा में इतनी गुणवत्ता हो कि वे देश का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, नागरिक और सांस्कृतिक बातावरण को आत्मनिर्भर और जीवंत कर सके। उच्च शिक्षा को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में माना जा सकता है जिसमें छात्रों को बाजार में समाहित करने के लिए उत्पाद के रूप में गिना जाता है। इस प्रकार उच्च शिक्षा व्यवसाय और उद्योग की वृद्धि और विकास के लिए महत्वपूर्ण इनपुट बन जाती है।

उच्च शिक्षा के उद्देश्य:

उच्च शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

- बदलती राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों में, राजनीति, प्रशासन, पेशे, उद्योग और वाणिज्य में स्वस्थ प्रतिनिधित्व प्रदान करना।
- विश्वविद्यालयों में, चीजों के प्रति बौद्धिक दृष्टिकोण विकसित करना और युवाओं में ज्ञान के विकास को प्रोत्साहित करना।
- दूरदर्शी, बुद्धिमान और साहसी नेतृत्व के निर्माण के माध्यम से समाज सुधार पर जोर देना।
- विश्वविद्यालयों को संस्कृति और सभ्यता पर बौद्धिक रूप में भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित करना।
- व्यक्तियों के जन्मजात गुणों की खोज करना और उपयुक्त प्रशिक्षण के माध्यम से उनका विकास करना।
- राष्ट्रीय अनुशासन, अंतर्राष्ट्रीय जागरूकता, बौद्धिक विकास, न्याय, स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे की भावना पैदा करना।

कौशल अर्जन का अर्थ:

कौशल को किसी जटिल कार्य को सरलतापूर्वक और पूर्ण दक्षता के साथ करने की योग्यता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। कौशल अर्जन एक सतत और गतिशील प्रक्रिया है जिसमें विशिष्ट और निश्चित चरण नहीं होते हैं। हालाँकि, सुविधा के लिए, कौशल अर्जन के कुछ 'सामान्य' परिवर्तनों को मोटे तौर पर तीन चरणों में खाल जा सकता है (1) संज्ञानात्मक (समझ) (2) साहचर्य (अभ्यास) (3) स्वायत्त (स्वचालित)। संज्ञानात्मक चरण सोच की विशेषता है, अर्थात् शिक्षार्थी कौशल को समझने की कोशिश करना है। इस चरण में शिक्षार्थी कौशल की एक संज्ञानात्मक तस्वीर बनाता है। साहचर्य चरण में, कौशल के मूल सिद्धांतों और यांत्रिकी को सीखा जाता है, इसमें विभिन्न प्रकार की संवेदिक सूचनाओं अथवा उद्दीपकों को उपयुक्त क्रियाओं के साथ जोड़ना होता है। स्वायत्त अवस्था में, पर्याप्त अभ्यास और अनुभव के बाद कौशल आदतन या स्वचालित हो जाता है। अधिकांश व्यक्ति कौशल अर्जन करते हुए इन चरणों से गुजरते हैं। प्रत्येक चरण में विशिष्ट विशेषताएं होती हैं जो एक शिक्षार्थी के कौशल या गतिविधि प्रदर्शन स्तर के सापेक्ष होती हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि देश के वर्तमान सामाजिक-आर्थिक संदर्भ में कौशल शिक्षा ने अधिक महत्व प्राप्त कर लिया है। अन्स्ट एंड यंग द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार, 2026 तक जनसांख्यिकीय रूप से, भारत एक लाभप्रद स्थिति में होगा, जिसमें हमारी लगभग 64 प्रतिशत आबादी 15-59 वर्ष की आयु वर्ग में होगी, जिसमें केवल 13 प्रतिशत जनसंख्या लगभग 60 वर्ष की होगी। इसलिए कौशल शिक्षा हमारे लिए अनिवार्य है ताकि हम जनसांख्यिकीय लाभांश प्राप्त करने में सक्षम हों, जो हमें युवा आबादी प्रदान करेगी। अगर शिक्षा हमारी जैसी बढ़ती अर्थव्यवस्था में कृशल जनशक्ति की आवश्यकता का जवाब नहीं होगी, तो यह अपने युवाओं को जीवन की बुनियादी और उच्च आकांक्षाओं दोनों को प्राप्त करने में विफल करेगी। इस संदर्भ में, माध्यमिक और तृतीयक शिक्षा दोनों स्तरों पर शैक्षिक उत्पादन के एक महत्वपूर्ण पहलू के रूप में कौशल अर्जन पर काफी जोर दिया गया है। कौशल अर्जन व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास के लिए रोजगार सुरक्षित करने में शिक्षार्थी की क्षमता को उन्नत करता है; उन्हें आर्थिक और सामाजिक दोनों स्तरों पर राष्ट्र के निर्माण में प्रभावी ढंग से योगदान करने में सक्षम बनाता है।

निष्कर्ष – समय की मांग क्या है?

उच्च शिक्षा केन्द्रों और कौशल संस्थानों तथा दूसरी ओर शैक्षणिक संस्थानों और उद्योग भागीदारों के बीच अधिक सहयोग की आवश्यकता है। इस तरह के सहयोग से आवश्यक कौशल की पहचान करने, विद्यालय और कॉलेज शिक्षा में पाठ्यक्रम में अंतर को



कम करने और उद्योग और अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक कौशल विकसित करने में मदद मिलेगी। वर्तमान समय की मांग यह सुनिश्चित करना है कि शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर राष्ट्र की कृशल जनशक्ति को बढ़ाने के लिए एक दूसरे के साथ शिक्षा और उद्योग साथ मिलकर काम करें। इसके लिए निश्चित रूप से शैक्षणिक संस्थानों और उद्योग दोनों के स्तर पर एक बड़ी सार्वजनिक-निजी भागीदारी की आवश्यकता है। परिणाम आधारित शिक्षा के लिए कौशल शिक्षा समय की मांग है जो वैश्विक वास्तविकता और शिक्षार्थियों की आकांक्षाओं का जवाब है।



‘विद्या विनयेन शोभते, नीरक्षीरविवेकवान।’

अर्थात :

ज्ञान और विनम्रता से मनुष्य की शोभा बढ़ती है,
जैसे कि दूध और पानी के मेल से दूध की
शुद्धता का पता चलता है।

– श्रीमद्भगवद्गीता



आलेख

हिंदी भाषा: एक विस्तृत विवेचना

प्रस्तावना :

हिंदी भाषा भारतीय उपमहाद्वीप की एक प्रमुख भाषा है, जो न केवल भारत में, बल्कि विश्व के कई हिस्सों में बोली जाती है। यह भाषा भारतीय संस्कृति, साहित्य और समाज का अभिन्न हिस्सा है। हिंदी का इतिहास, विकास, व्याकरण, साहित्य और वर्तमान स्थिति पर चर्चा करते हुए हम इसकी गहराई और महत्वपूर्ण योगदान को समझेंगे।

हिंदी भाषा का उद्गम :

हिंदी भाषा का उद्गम विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के समावेश से हुआ है।

प्राचीन काल में आधार- हिंदी की जड़ें संस्कृत में हैं, जो एक प्राचीन भारतीय भाषा है। संस्कृत का उपयोग वेदों, उपनिषदों और महाकाव्यों में किया गया है। यह भारतीय भाषाओं की मातृ भाषा मानी जाती है।

संस्कृत से प्राकृत: संस्कृत के साथ-साथ प्राकृत भाषाएँ भी अस्तित्व में आई। प्राकृत का उपयोग बौद्ध और जैन साहित्य में व्यापक रूप से किया गया। प्राकृत भाषाएँ धीरे-धीरे स्थानीय बोलियों में विकसित हुईं, जो आगे चलकर हिंदी की नींव बनीं।

हिंदी भाषा: अपभ्रंश और उसका योगदान :

अपभ्रंश का परिचय

अपभ्रंश, प्राकृत का एक रूप है, जो भारतीय उपमहाद्वीप में 6वीं से 12वीं शताब्दी के बीच विकसित हुआ। यह शब्द संस्कृत के भ्रंश से लिया गया है, जिसका अर्थ है विकृत। अपभ्रंश का विकास मुख्यतः शहरी और ग्रामीण बोलियों के संपर्क से हुआ, जिसने इसे स्थानीय भाषाओं से जोड़ा।



शुभम शर्मा

अधिकारी

क्षेत्रीय कार्यालय, बीकानेर

अपभ्रंश का महत्व

अपभ्रंश ने हिंदी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके कई पहलू हैं:

भाषाई समावेश: अपभ्रंश ने विभिन्न प्राकृत भाषाओं और स्थानीय बोलियों से शब्दों और वाक्य संरचनाओं का समावेश किया, जो बाद में हिंदी के विकास में मददगार साबित हुआ।

साहित्यिक योगदान: अपभ्रंश में लिखे गए कई ग्रंथों और काव्य रचनाओं ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। यह एक प्रमुख साहित्यिक माध्यम बन गया, जिसमें भक्ति आंदोलन के संत कवियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

भक्ति आंदोलन और अपभ्रंश

भक्ति आंदोलन के दौरान, अपभ्रंश ने धर्म और सामाजिक संदेशों को प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संत कवियों ने अपभ्रंश में गीत और कविताएँ लिखीं, जो आम लोगों के बीच लोकप्रिय हुईं।

कबीर, तुलसीदास और अन्य: कबीर ने अपने दोहों में अपभ्रंश का उपयोग किया, जिससे उनकी रचनाएँ सरल और समझने में आसान बनीं। तुलसीदास ने रामचरितमानस जैसे ग्रंथों में स्थानीय बोलियों के तत्वों को शामिल किया।

अपभ्रंश और हिंदी का विकास

अपभ्रंश के प्रभाव से हिंदी का विकास कई चरणों में हुआ:

क्षेत्रीय भाषाओं का समावेश: अपभ्रंश ने क्षेत्रीय बोलियों, जैसे अवधी और ब्रज को प्रभावित किया। इन बोलियों ने हिंदी की व्याकरण और शब्दावली को समृद्ध किया।

लिपि का विकास: अपभ्रंश ने देवनागरी लिपि के विकास में भी योगदान दिया, जो हिंदी की प्रमुख लिपि है।

अपभ्रंश की विशेषताएँ

अपभ्रंश की कुछ प्रमुख विशेषताएँ हैं:

सरलता: अपभ्रंश में रचनाएँ सरल और प्रवाहपूर्ण होती थीं, जो इसे आम जनता के बीच लोकप्रिय बनाती थीं।

धार्मिक और सामाजिक विषय: अपभ्रंश में रचित रचनाएँ धार्मिक, सामाजिक और नैतिक विषयों पर केंद्रित होती थीं, जो लोगों को प्रेरित करती थीं।

अपभ्रंश का योगदान – प्राकृत के बाद अपभ्रंश भाषा का विकास हुआ, जो कि प्राकृत का विकृत रूप था। 6वीं से 12वीं शताब्दी के बीच अपभ्रंश ने हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हिंदी का जन्म – हिंदी भाषा के प्रारंभिक रूप का उद्भव 13वीं सदी के आसपास हुआ, जब इसने शुद्ध देहाती बोलियों और अपभ्रंश के शब्दों को अपने में समाहित किया।

अवधी और ब्रज भाषा: हिंदी के प्रारंभिक रूप में अवधी और ब्रज भाषा का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इन क्षेत्रीय बोलियों ने हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और आज भी विभिन्न साहित्यिक रचनाओं में दिखाई देती हैं।

हिंदी का विकास :

नवजागरण काल – 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में हिंदी में साहित्यिक आंदोलन तेजी से बढ़ा। यह काल हिंदी भाषा के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर था।

हिंदी साहित्य सम्मेलन: 1910 में लखनऊ में पहले सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें हिंदी भाषा और साहित्य के विकास के लिए कई प्रस्ताव पारित किए गए।

स्वतंत्रता संग्राम – स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी भाषा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह केवल एक भाषा नहीं, बल्कि एक आंदोलन का प्रतीक बन गई।

पत्रकारिता: कई समाचार पत्रों और पत्रिकाओं ने हिंदी में स्वतंत्रता के लिए जन जागरूकता फैलाने का कार्य किया।

संविधान में संघ की राजभाषा के रूप में स्थापित करने के उपरांत उसके कार्यान्वयन के लिए राजभाषा अधिनियम/नियम पारित किए गए।

राजभाषा अधिनियम :

राजभाषा अधिनियम, 1963, भारतीय संविधान के तहत हिंदी को राजभाषा के रूप में स्थापित करने के उद्देश्य से लाया गया।

अधिनियम का उद्देश्य – इस अधिनियम का प्रमुख उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि हिंदी और अन्य भाषाएँ प्रशासन, शिक्षा, और न्यायिक कार्यों में समान रूप से उपयोग की जाएं।

दो भाषाओं का प्रयोग: अधिनियम ने यह भी प्रावधान किया कि हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में मान्यता दी जाएगी, जबकि अंग्रेजी का प्रयोग एक सहायक भाषा के रूप में जारी रहेगा।

अधिनियम के प्रावधान – राजभाषा नीति: सरकार ने हिंदी को विभिन्न सरकारी कामकाज में अधिकतम संभव उपयोग करने की नीति बनाई।

प्रशिक्षण: सरकारी कर्मचारियों के लिए हिंदी में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए ताकि वे हिंदी में बेहतर काम कर सकें।

प्रभाव – राजभाषा अधिनियम ने हिंदी को सरकारी कामकाज में महत्वपूर्ण स्थान दिलाया।

संविधान में संशोधन: समय-समय पर इस अधिनियम में संशोधन किए गए हैं ताकि हिंदी की स्थिति और मजबूत किया जा सके।

राजभाषा आयोग: इस आयोग का गठन किया गया है, जो राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की निगरानी करता है।

हिंदी साहित्य : हिंदी साहित्य की एक समृद्ध परंपरा है, जिसमें विभिन्न विधाएँ शामिल हैं।

कविता – हिंदी कविता में भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल की विशेषता है।

भक्तिकाल: इस काल में भक्त कवियों ने भक्ति के संदेश को फैलाया। कबीर और तुलसीदास की रचनाएँ इस काल की प्रमुखता को दर्शाती हैं।

गद्य – हिंदी गद्य का विकास भी महत्वपूर्ण है।

उपन्यास: प्रेमचंद के गोदान और गबन हिंदी गद्य के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

कहानी: हिंदी कहानी में कथा के शिल्प और विषयों में विविधता देखने को मिलती है।

महान लेखकों का योगदान – हिंदी साहित्य के विकास में कई महान लेखकों का योगदान रहा है।

प्रेमचंद: उन्होंने ग्रामीण जीवन के संघर्षों को उजागर किया और समाज की वास्तविकताओं को अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया।

हिंदी का वर्तमान परिदृश्य :

आज हिंदी न केवल भारत में, बल्कि विश्वभर में बोली जाती है।

टेक्नोलॉजी में हिंदी – इंटरनेट और मोबाइल के युग में हिंदी ने डिजिटल माध्यमों पर भी अपनी जगह बनाई है।

सोशल मीडिया: फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफॉर्म पर हिंदी में संवाद बढ़ा है।

ब्लॉगिंग: हिंदी ब्लॉगिंग का विकास हुआ है, जिसमें लोग अपनी राय और विचार व्यक्त कर रहे हैं।

शिक्षा – हिंदी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि हुई है।

विद्यालय और विश्वविद्यालय: कई विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में हिंदी को प्रमुख विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा है।

हिंदी की प्रमुख विशेषताएँ:

हिंदी भाषा की कई विशेषताएँ हैं, जो इसे अन्य भाषाओं से अलग बनाती हैं।

सरलता और लचीलापन – हिंदी भाषा की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सरलता और लचीलापन है। यह भाषा संवाद के लिए सहज है और आम जन की सोच और भावनाओं को व्यक्त करने में सक्षम है।

सांस्कृतिक समृद्धि – हिंदी भाषा भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। यह न केवल बोलने की, बल्कि सोचने और संप्रेषण करने का माध्यम है।

भाषाई विविधता – हिंदी की एक और महत्वपूर्ण विशेषता इसकी भाषाई विविधता है। विभिन्न क्षेत्रीय बोलियाँ जैसे कि भोजपुरी, अवधी और राजस्थानी ने हिंदी के विकास में योगदान दिया है।

हिंदी भाषा का वैश्विक विस्तार :

हिंदी का वैश्विक विस्तार तेजी से हो रहा है।

प्रवासी समुदाय – भारत के बाहर भी हिंदी बोलने वाले समुदाय हैं, जैसे कि अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया में। प्रवासी भारतीयों ने हिंदी को अपने बच्चों में संरक्षित करने का प्रयास किया है।

फिल्म और संगीत – हिंदी फिल्म उद्योग, जिसे बॉलीवुड कहा जाता है, ने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

हिंदी भाषा का भविष्य :

हिंदी भाषा का भविष्य उज्ज्वल दिख रहा है, बशर्ते इसे संरक्षण और प्रोत्साहन मिले।

शिक्षा में सुधार – यदि शिक्षा प्रणाली में हिंदी को उचित स्थान दिया जाए, तो इससे आने वाली पीढ़ी में भाषा के प्रति रुचि बढ़ेगी।

हिंदी माध्यम स्कूलों का विकास: हिंदी माध्यम स्कूलों की संख्या बढ़ाने से बच्चों को अपनी भाषा में पढ़ाई करने का अवसर मिलेगा। इसके साथ ही, विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन को प्रोत्साहित करने से छात्रों में हिंदी के प्रति जागरूकता बढ़ेगी।

तकनीकी विकास – डिजिटल माध्यमों में हिंदी का उपयोग बढ़ता जा रहा है।

वर्चुअल क्लासरूम: ऑनलाइन शिक्षा प्लेटफॉर्म पर हिंदी में पाठ्यक्रम उपलब्ध कराना महत्वपूर्ण है। यह वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा को सिखाने का एक प्रभावी माध्यम बन सकता है।

कंटेंट क्रिएशन: डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर हिंदी सामग्री का विकास, जैसे कि यूट्यूब चैनल और पॉडकास्ट, भी हिंदी के प्रचार में सहायक होगा।

सांस्कृतिक कार्यक्रम – सांस्कृतिक कार्यक्रमों और समारोहों में हिंदी साहित्य और भाषा को प्रोत्साहित करने से युवा पीढ़ी में जागरूकता बढ़ेगी।

हिंदी महोत्सव: विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में हिंदी महोत्सव का आयोजन कर भाषा की महत्ता को उजागर किया जा सकता है। इन महोत्सवों में साहित्य, कला और संगीत के माध्यम से हिंदी की समृद्धि को दर्शाया जा सकता है।

वैशिक संबंध – हिंदी का वैशिक स्तर पर प्रचार बढ़ाने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी अध्ययन कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता है।

संस्थान और विश्वविद्यालय: विदेशों में भारतीय संस्कृति और भाषा के अध्ययन के लिए हिंदी की पाठ्यक्रमों को शामिल करना चाहिए। इससे हिंदी भाषा की वैशिक पहचान बढ़ेगी।

राजनयिक प्रयास: भारत सरकार को हिंदी के प्रचार के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर राजनयिक प्रयास बढ़ाने चाहिए।

युवा पीढ़ी की भूमिका – युवा पीढ़ी हिंदी भाषा के भविष्य में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

रचनात्मकता: युवा लेखकों और कलाकारों द्वारा हिंदी में रचनाएँ, जैसे कि कहानियाँ, कविताएँ और गीत भाषा को नई दिशा में ले जा सकती हैं।

सामाजिक जागरूकता: युवा पीढ़ी को हिंदी भाषा की महत्ता के प्रति जागरूक करना और उसे एक सशक्त पहचान के रूप में प्रस्तुत करना आवश्यक है।

भाषा का संरक्षण : हिंदी भाषा का संरक्षण भी भविष्य की एक महत्वपूर्ण चिंता है।

संघटनात्मक समर्थन: सरकारी और गैर-सरकारी संस्थानों को हिंदी के संरक्षण के लिए कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए।

शोध और विकास: हिंदी भाषा और साहित्य पर शोध को प्रोत्साहित करने से भाषा की गहराई और समृद्धि को बढ़ाया जा सकता है।

अन्य देशों में हिंदी का प्रभाव :

हिंदी भाषा, जो भारत की एक प्रमुख भाषा है, का प्रचलन केवल भारत तक सीमित नहीं है। इसे विभिन्न देशों में बोला और समझा जाता है, विशेषकर उन देशों में जहाँ भारतीय प्रवासियों की संख्या अधिक है। फिजी, त्रिनिदाद और टोबैगो, गुयाना और अन्य राष्ट्रों में हिंदी का एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव है।

1. फिजी में हिंदी

फिजी में हिंदी का आगमन 19वीं सदी में भारतीय श्रमिकों के साथ हुआ। जब भारतीय लोग फिजी की चाय और शर्करा के बागानों में काम करने के लिए गए, तब उन्होंने अपनी भाषा और संस्कृति को भी वहाँ ले गए।

भाषाई स्थिति: आज फिजी में हिंदी को एक आधिकारिक भाषा का दर्जा प्राप्त है। यहाँ इसे फिजी हिंदी कहा जाता है, जो भारतीय हिंदी से थोड़ी भिन्न है। फिजी हिंदी में स्थानीय बोलियों का मिश्रण है, जिससे यह अनूठी हो गई है।

संस्कृत और परंपरा: फिजी में हिंदी भाषा न केवल संवाद का माध्यम है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, त्योहारों और परंपराओं का भी एक अभिन्न हिस्सा है। दीपावली, होली और अन्य धार्मिक समारोहों में हिंदी का महत्वपूर्ण योगदान है।

2. त्रिनिदाद और टोबैगो

त्रिनिदाद और टोबैगो में भी हिंदी का महत्वपूर्ण प्रभाव है। यहाँ के भारतीय समुदाय ने हिंदी भाषा और संस्कृति को बनाए रखा है।

साहित्य और कला: त्रिनिदाद में हिंदी साहित्य और नाटकों का आयोजन होता है, जो स्थानीय संस्कृति में भारतीय धरोहर को जीवित रखता है।

सांस्कृतिक पहचान: यहाँ की भारतीय जातियों ने हिंदी को अपनी पहचान और संस्कृति के प्रतीक के रूप में स्वीकार किया है।

3. गुयाना

गुयाना में भी हिंदी का प्रचलन देखने को मिलता है। यहाँ भारतीय प्रवासियों के कारण हिंदी भाषा का विकास हुआ।

सामाजिक समारोह: गुयाना में हिंदी भाषी लोग त्योहारों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, जिससे यह भाषा जीवंत रहती है।

शिक्षा: गुयाना के कुछ स्कूलों में हिंदी का शिक्षा माध्यम के रूप में उपयोग किया जाता है, जिससे युवा पीढ़ी इस भाषा से जुड़ी रहती है।

4. अन्य देश

हिंदी का प्रभाव अन्य देशों में भी देखने को मिलता है। अमेरिका, कनाडा और ब्रिटेन में बसे भारतीय प्रवासी समुदाय ने हिंदी को अपनी सांस्कृतिक धरोहर के रूप में संरक्षित किया है।

डिजिटल प्लेटफॉर्म: सोशल मीडिया और अन्य डिजिटल माध्यमों के कारण, हिंदी भाषा का वैशिक स्तर पर प्रचार-प्रसार हो रहा है।

संस्कृतिक आदान-प्रदान: विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम और महोत्सवों में हिंदी का उपयोग बढ़ता जा रहा है, जिससे हिंदी का सांस्कृतिक प्रभाव भी बढ़ रहा है।

फिजी और अन्य देशों में हिंदी का प्रभाव एक उल्लेखनीय पहलू है, जो न केवल भाषा के विकास को दर्शाता है, बल्कि भारतीय संस्कृति और पहचान को भी जीवित रखता है। हिंदी ने इन देशों में सांस्कृतिक विविधता और एकता को बढ़ावा दिया है। यदि इसे और प्रोत्साहित किया जाए, तो यह भविष्य में और भी व्यापक रूप से प्रचलित हो सकती है, जिससे विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद और समझ बढ़ेगी।

हिंदी भाषा की कमियाँ और उनके निवारण :

हिंदी भाषा भारत की प्रमुख भाषाओं में से एक है, लेकिन इसके विकास में कई कमियाँ भी हैं। इन कमियों का समाधान करना आवश्यक है ताकि हिंदी भाषा को और अधिक प्रगति और स्वीकार्यता मिल सके।

हिंदी भाषा के लिए चुनौतियाँ :

हालांकि हिंदी का विकास हुआ है, लेकिन इसके सामने कई चुनौतियाँ भी हैं।

अंगीकृत भाषा – हिंदी को अन्य भाषाओं के साथ प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है, जैसे कि अंग्रेजी। कई युवा अंग्रेजी को प्राथमिकता देते हैं, जिससे हिंदी भाषा की स्थिति कमज़ोर होती जा रही है।

शहरीकरण का प्रभाव – शहरीकरण के चलते, लोग अपनी मातृभाषा को छोड़कर अंग्रेजी का प्रयोग करने लगे हैं, जिससे हिंदी की बोलचाल में कमी आई है।

आधुनिकता का दबाव: वैश्वीकरण और आधुनिकता के प्रभाव ने युवा पीढ़ी को अपने पारंपरिक भाषाई ज्ञान से दूर कर दिया है। यह प्रवृत्ति भाषा के संरक्षण के लिए खतरा बन सकती है।

शिक्षा प्रणाली – शिक्षा प्रणाली में हिंदी का स्थान अक्सर कमज़ोर होता है।

अंग्रेजी माध्यम का प्रचलन: कई संस्थानों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होता है, जिससे हिंदी बोलने और लिखने की क्षमता कम होती जा रही है।

निवारण :

1. शिक्षा का सुधार: हिंदी भाषा की शिक्षा को प्राथमिक स्तर से ही सुदृढ़ करना आवश्यक है। स्कूलों में बेहतर शिक्षक, पाठ्यक्रम और संसाधनों का विकास करना चाहिए ताकि बच्चे हिंदी में दक्षता हासिल कर सकें।

2. साहित्यिक गतिविधियाँ: हिंदी साहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए साहित्यिक प्रतियोगिताएँ, पुस्तक मेलों और लेखन कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना चाहिए। इससे नए लेखकों को प्रेरणा मिलेगी और साहित्य का विकास होगा।

3. टेक्नोलॉजी का उपयोग: डिजिटल प्लेटफॉर्मों का उपयोग करके हिंदी भाषा का प्रचार किया जा सकता है। मोबाइल एप्स, वेबसाइट्स और सोशल मीडिया पर हिंदी सामग्री का विस्तार इसे और अधिक लोकप्रिय बना सकता है।

4. भाषाई समावेशिता: विभिन्न बोलियों और भाषाओं के बीच संवाद स्थापित करने के लिए बहुभाषी कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए। इससे लोग हिंदी को समझेंगे और अपनाएंगे।

हिंदी भाषा में कई कमियाँ हैं, लेकिन यदि सही कदम उठाए जाएँ, तो इसे दूर किया जा सकता है। शिक्षा, साहित्य और आधुनिक तकनीक के माध्यम से हम हिंदी को एक समृद्ध और प्रगतिशील भाषा बना सकते हैं। हिंदी का विकास न केवल भाषा का विकास है, बल्कि यह भारत की सांस्कृतिक एकता को भी मजबूत करता है।

निष्कर्ष :

हिंदी भाषा का विकास सदियों से हो रहा है और यह आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। इसकी समृद्ध संस्कृति, साहित्य और व्याकरण इसे एक अद्वितीय भाषा बनाती है। हिंदी केवल एक संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि यह एक सांस्कृतिक धरोहर है, जिसे संजोकर रखना हमारी जिम्मेदारी है।

संविधान में महत्व व राजभाषा अधिनियम के माध्यम से हिंदी को जो स्थान मिला है, वह इसे सरकारी कामकाज में अधिकृत बनाता है। साथ ही, इसकी आधुनिकता और डिजिटल युग में तेजी से बढ़ती स्वीकार्यता इसे भविष्य में भी प्रासंगिक बनाए रखेगी।

इस प्रकार, हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है, बशर्ते हम इसे प्रोत्साहित करें और इसे अपने जीवन का हिस्सा बनाएं। हिंदी भाषा न केवल हमारे पहचान है, बल्कि यह हमारे विचारों और भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम है।

यदि हम अपने जीवन में हिंदी को अपनाते हैं, इसे शिक्षा, तकनीकी, और सांस्कृतिक क्षेत्रों में प्रोत्साहित करते हैं, तो यह न केवल हमारे लिए, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक महत्वपूर्ण धरोहर बनी रहेगी।

हिंदी भाषा हमारी पहचान है और इसे सशक्त बनाना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है।



संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति का निरीक्षण- तिरुपति



दिनांक 25.10.2024 को संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा हमारे अंचल कार्यालय तिरुपति का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। निरीक्षण कार्यक्रम के समापन पर उप समिति के संयोजक माननीय सांसद सदस्य श्री अप्पा बन्ने से सफल निरीक्षण हेतु प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए श्री पांडुरंग मिथन्थाया, महाप्रबंधक, अंचल कार्यालय तिरुपति साथ में उपस्थित हैं श्री टी. के. वेणुगोपाल, महाप्रबंधक, मानव संसाधन विभाग, प्रधान कार्यालय, बेंगलूरु, श्री ई. रमेश, सहायक महाप्रबंधक/पर्यवेक्षी कार्यपालक राजभाषा, प्रधान कार्यालय, श्री जी अशोक कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक(राजभाषा) एवं डॉ. सुरेश कुमार, प्रबंधक (राजभाषा), अंचल कार्यालय तिरुपति।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति का निरीक्षण - हैदराबाद



दिनांक 23.10.2024 को संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा हमारे अंचल कार्यालय हैदराबाद का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। निरीक्षण कार्यक्रम के समापन पर उप समिति के माननीय सांसद उपाध्यक्ष श्री भट्टूहरि महताब से सफल निरीक्षण हेतु प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए श्री बी. चंद्रशेखर, मुख्य महाप्रबंधक, अंचल कार्यालय हैदराबाद साथ में उपस्थित हैं श्री टी. के. वेणुगोपाल, महाप्रबंधक, मानव संसाधन विभाग, प्रधान कार्यालय, बैंगलुरु, श्री सुप्रिय मैत्र, सहायक महाप्रबंधक, श्री ई. रमेश, सहायक महाप्रबंधक/पर्यावरकी कार्यपालक, राजभाषा, प्रधान कार्यालय, श्री जी अशोक कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक(राजभाषा) एवं श्री रवि कुमार सिन्हा, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), अंचल कार्यालय हैदराबाद, श्रीमती अंकिता रानी, प्रबंधक(राजभाषा), क्षेत्रीय कार्यालय हैदराबाद (दक्षिण)।



यात्रा वृत्तांत

मेरी पहली अंतरराष्ट्रीय यात्रा

तो शुरुआत होती है भारत देश के शहर नवी दिल्ली से, जहाँ से मेरी विमान थी दुबई के लिए दिनांक 6 अप्रैल 2024 को। चूँकि ये मेरी पहली अंतरराष्ट्रीय यात्रा थी तो हृदय में थोड़ी घबराहट सी भी थी परन्तु उसके साथ ही मैं बहुत उत्साहित भी था इस यात्रा के लिए। सारी प्रक्रियाएं खत्म करने के साथ ही मैंने विमान में प्रवेश किया और अपनी मनपसंद खिड़की वाली सीट ली। अंततः विमान ने अपनी उड़ान भारतीय समयानुसार प्रातः 7 बजे भरी। हालाँकि मैं बहुत थका हुआ था परन्तु उत्साह इतना था कि मैं कोई भी दृश्य विमान से छोड़ना नहीं चाहता था। आखिरकार 4 घंटे के सफर के बाद मेरा विमान दुबई इंटरनेशनल हवाईअड्डे पर दुबई के समयानुसार सुबह के 9 बजकर 30 मिनट पे उतरा। विमान से बाहर आते ही मानो दृश्य मेरे हृदय को इस प्रकार अर्चभित कर दिया हो कि मानो मैं किसी विमानपत्तन नहीं किसी शहर में आ गया, इतना विशालकाय विमानपत्तन और तो और एक स्थान से दूसरे स्थान जाने के लिए विमानपत्तन के अंदर ही मेट्रो सेवाएं। एक छोटे शहर संबंध रखने वाले लड़के के लिए ये बहुत ही शानदार अनुभव था। मन तो कर रहा था कि पुरे विमानपत्तन का अन्वेषण करूँ परन्तु समय का अभाव था क्योंकि बाहर मेरी होटल की गाड़ी मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। सारी प्रक्रियाएं पूरी करने के पश्चात मुझे इमीग्रेशन डेस्क पे ही यूनाइटेड अरब एमिरेट्स सरकार द्वारा एक यात्री मोबाइल सिम दिया गया जो की एक बहुत ही सराहनीय कदम था। अंततः होटल के कर्मचारी जो कि मेरी प्रतीक्षा में था, उनसे मिला और अपना सामान लेकर गाड़ी में बैठ के होटल के लिए प्रस्थान किया। विमानपत्तन से निकलते ही दृश्य सच में कमाल के थे। चौड़ी चौड़ी सड़कें और उनपे तेज़ रफ़तार से दौड़ती टेस्ला, लेम्बोर्गिनी, मर्सिडीज़ जैसी गाड़ियां जैसे मानो ये वहाँ के लिए आम बात हो, ड्राइवर से बात के दौरान पता चला कि ये सारी गाड़ियां यहाँ आम बात है। विमानपत्तन से होटल तक की दूरी 25 किलोमीटर थी जिसे लगभग हम लोगों ने सिर्फ़ आधे घंटे में ही पूरा कर लिया, पर इस आधे घंटे में ड्राइवर साहब जो कि बांग्लादेश के ढाका शहर के थे, उनसे कई मजेदार और अच्छी जानकारियां भी हाँसिल की। चूँकि ड्राइवर साहब भी मुझसे हिंदी में वार्तालाप कर रहे थे तो बहुत ही



निलेश कुमार श्रीवास्तव

अधिकारी

एच.एस.आर. लोआउट शाखा

अच्छा अनुभव हुआ मानो पराये देश में कोई अपना मिला हो। खैर दुबई शहर की कुछ झलकियां देखते हुए होटल तक की दुरी तय हुई और होटल पहुँच कर रूम में आराम किया।

तो शुरुआत होती है अब दुबई को अपने नज़र से आंकने की, होटल में दिन में चैन की नींद पूरी करने के पश्चात मेरा पहला पड़ाव था रात में ढोव क्रूज का अनुभव लेने का जो कि दुबई मरीना इलाके में स्थित था जिसकी दूरी मेरे होटल से 30 किलोमीटर थी। ढोव क्रूज की व्याख्या करूँ तो शब्द जरूर काम पड़ जायेंगे लेकिन कम शब्दों में बताऊँ तो चांदनी रात में गगनचुम्बी इमारतों के बीच एक अनेक व्यवस्थाओं से सुसज्जित नाव में रात्रि भोजन मधुर अरबिक संगीत के साथ सही होगा। इस गतिविधि को सम्पूर्ण करने के पश्चात मैं वापस अपने होटल आया और चैन की नींद ली।

अब होती है शुरुआत मेरे दूसरे दिन की, दूसरे दिन की पहली गतिविधि मेरी दुबई शहर के भ्रमण की थी। तो मैं समय से तैयार होकर अपने ट्रॉरिस्ट गाइड की प्रतीक्षा में खड़ा हो गया। फिर मैं और साथ में बहुत यात्री जो कि विभिन्न देशों से थे, उनमें से कुछ लोग भारत के विभिन्न स्थानों से भी थे जिनसे वार्तालाप करने में काफी अपनापन महसूस हुआ, हम सभी की यात्रा का पहला पड़ाव था जबील पैलेस नामक जगह जो कि दुबई के राजकुमार का निवास स्थान है, ये जानकारी सभी यात्रियों को काफी आश्चर्य हुआ कि इस पैलेस में कुल 220 कमरे थे पूरी व्यवस्थाओं से सुसज्जित परन्तु रहने वाले सिर्फ़ 14 लोग। खैर ये पैलेस की खूबसूरती देखने लायक ही थी। वहाँ से निकलने के बाद हम पहुँचे विश्व प्रसिद्ध दुबई फ्रेम जो कि विश्व की सबसे बड़ी और लंबी फ्रेम के आकार की प्रतिमा है। ये मेरा व्यक्तिगत विचार है कि अगर कोई दुबई फ्रेम की खूबसूरती देखना

चाहता है तो वो रात के समय में वहाँ जाये, लाइट के साथ दुबई फ्रेम की खूबसूरती देखते ही बनती है। उसके बाद हमारा अगला पड़ाव था विश्व प्रसिद्ध और एक मात्र सात सितारा होटल बुर्ज अल अरब। शायद ही कोई व्यक्ति हो जो कि इस होटल को नहीं जानता हो, थोड़ी जानकारी इकट्ठा करने के पश्चात हमें पता लगा कि इस होटल में कई ऐसे कमरे भी हैं जिनका एक रात का किराया भारतीय रूपए के अनुसार 26 लाख है। ये अपने आप में बहुत आश्चर्य वाली बात थी। यहाँ से निकलने के बाद हम जा पहुंचे प्राचीन दुबई को आंकने जो था दुबई का गोल्ड सौक बाजार और मीना बाजार। गोल्ड नाम से ही अपने आप में ये समझ लेने वाली बात है कि ये गोल्ड सौक बाजार किस लिए प्रसिद्ध है। हमने संपूर्ण बाजार भ्रमण किया तो पता लगा कि अपने भारत देश के गुजरात प्रान्त के दुकानदार बहुतायत में वहाँ उपस्थित हैं। मैंने भी एक गोल्ड की अंगूठी खरीदी। मूल्य की बात की जाये तो आपको भारत देश के मुकाबले यहाँ गोल्ड काफी सस्ता पड़ेगा और तो और शुद्धता के मामले में भी शायद ही कोई देश यहाँ की तुलना कर पाए। इस बाजार से निकलने के बाद हम पहुंचे मीना बाजार जिसकी प्रतीक्षा बेसब्री से मानो अधिकांश लोग कर रहे थे, करें भी क्यों ना आखिर सबका चहेता एप्पल आई फोन इस बाजार में सस्ता जो मिलता था। इस बाजार में पहुंचते ही अधिकांश लोगों ने अपने-अपने पसंदीदा आई फोन खरीदे, उन व्यक्तियों में मैं भी एक इंसान था। मीना बाजार से सटे ही एक जगह है अल सीफ़ जो कि प्रसिद्ध है विश्व प्रसिद्ध कॉफ़ी उत्पादक स्टारबक्स के सबसे पुराने आउटलेट के लिए। अंततः ये दिन काफी थकावट भरा रहा और मैं अपना थका हुआ शरीर लेकर वापस होटल आकर भरपूर आराम किया और अगले दिन की तैयारी में लग गया, क्योंकि अगला दिन मेरे लिए मानो सबसे महत्वपूर्ण दिन था जिसकी प्रतीक्षा सही मायने में अगर बोला जाए तो मैंने बचपन से की थी।

तो शुरुआत होती है मेरे तीसरे दिन की और मेरा पड़ाव था दुबई मॉल और उसके साथ ही साथ विश्व प्रसिद्ध इमारत बुर्ज खलीफा। मुझे बचपन से ही गगनचुम्बी इमारतों में बहुत ही दिलचस्पी रही है, तो मेरे लिए बुर्ज खलीफा जो कि ठहरी विश्व की सबसे ऊँची इमारत, की अहमियत कोई भी आसानी से समझ सकता। पहली नज़र में मानो मुझे मेरी नज़रों पे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि इतनी ऊँची इमारत का निर्माण हुआ कैसे होगा। बुर्ज खलीफा में जाने का रास्ता दुबई मॉल के अंदर से ही है, चूँकि मेरा टिकट बुर्ज खलीफा के 124वे फ्लोर पर जाने का शाम के 6 बजे का था क्योंकि मैं उतनी ऊँचाई से दुबई को जगमगाती रोशनी में देखना चाहता था, तो मैं पहले पूरा मॉल घुमा। पर यकीन मानिए दुबई मॉल इतना बड़ा है कि आप एक क्या, अगर आप लगातार तीन दिन भी आये तो भी पूरा का पूरा मॉल नहीं घूम पाएंगे। मॉल के अंदर विश्व के हर एक महंगे महंगे ब्रांड जैसे गुच्छी, अरमानी, रोलेक्स जैसे ब्रांड आम बात है। दुबई मॉल के अंदर

ही बहुत बड़ा दुबई एक्वेरियम था जो कि मानो इतना आश्चर्यचकित करने वाला था जिसकी कल्पना कर पाना मुश्किल था। आप ही सोचिये एक मॉल के अंदर इतना बड़ा एक्वेरियम बनाना और उस एक्वेरियम में बड़ी-बड़ी मछलियां जिसमें शार्क मछलियों की प्रजाति तक मौजूद थी, अपने आप में बड़ी बात थी। उसी एक्वेरियम के अगले हिस्से में मगरमच्छ की प्रजातियां और पेंगुइन भी मौजूद थे जो कि सिर्फ बर्फले इलाके में पाए जाते परन्तु ये दुबई की ही देन है कि उसने बर्फले जानवर को भी अपने यहाँ जीवित रखा है वहाँ के वातावरण को उनके अनुसार बना के। चूँकि मॉल धूमते-धूमते शाम के 6 बजने वाले थे तो मैं चला गया बुर्ज खलीफा की तरफ जिसका मेरा टिकट था। टिकट की जांच पूरी करने के पश्चात हम अंदर गए और एक बड़ी सी लिफ्ट में प्रवेश किए जो कि हमें 124वे मंज़िल पर ले जाने वाली थी। लिफ्ट जैसे ही चली मानो सभी लोग अचंभित हो गए, लिफ्ट की गति इतनी तेज़ी थी कि 124वी मंज़िल मात्र 2 मिनट में आ गया। और लिफ्ट से बाहर निकलते ही जो नज़ारा था उसका वर्णन किसी भी शब्दों में नहीं किया जा सकता। मैं मानो अपने बचपन से लेके बड़े होने तक के सपने को एक साथ जी रहा था उस दौरान। लगभग एक घंटे तक वह ऊपर समय बिताने के बाद मैं वापस लिफ्ट के द्वारा नीचे आया क्योंकि अगला आकर्षण दुबई फाउंटेन जो कि दुबई मॉल के अंदर ही स्थित है, वहाँ पर रोशनी और ध्वनि का कार्यक्रम का आयोजन होता है शाम के 7 बजकर 30 मिनट पर रोज़ाना जो कि हर एक आधे घंटे पर होता है। हर आधे घंटे विभिन्न देश को समर्पित होते हैं और मुझे ये जान कर बहुत ही खुशी हुई क्योंकि उसकी शुरुआत हुई हमारे भारत देश के विश्व प्रसिद्ध कलाकार शाह रुख खान जी के गाने को बजा कर। इन सभी चीज़ों का आनंद लेकर मैं दुबई मॉल मेट्रो स्टेशन जो कि पास में ही था की तरफ बढ़ा और मेट्रो लेकर अपने होटल के पास वाले मेट्रो स्टेशन अल सलाह दिन आया और वहाँ से पैदल अपने होटल आया और चैन की नींद ली।



तो अब शुरुआत होती है मेरे चौथे दिन की जो कि थी एक और विश्व प्रसिद्ध होटल द अटलांटिस और पाम जुमेरा। द अटलांटिस होटल की व्याख्या भी कर पाना मुश्किल है, एक कृत्रिम समुद्र तट पर बनाया गया विशालकाय होटल जिसमें 1548 कमरे हैं और तो और इस होटल की खूबसूरती देखने के लिए एक विशेष मेट्रो ट्रेन भी चलती है। वैसे अगर आपने शाह रुख जी की हैप्पी न्यू ईयर मूवी देखी है तो ये वही वाला होटल है। अब बात करते हैं पाम जुमेरा जो कि एक कृत्रिम द्वीप है जिसमें बड़े-बड़े व्यापारियों एवं कलाकारों के फार्म हाउस है। इन दोनों जगह देखने में ही आधा दिन बीत गया। उसके पश्चात अब बारी थी एक और अद्भुत स्थान देखने की जो कि था म्यूजियम ऑफ द फ्यूचर। हमने टिकट शाम के स्लॉट वाली बुक की थी समय के आधार के कारण, अंदर पहुँचते ही मुझे अंदाज़ा हो गया कि इसका ये नाम क्यूँ पड़ा। अंदर विभिन्न प्रकार के यन्त्र जो कि मानो भविष्य से हो और आधुनिक प्रकार के कार। म्यूजियम ऑफ द फ्यूचर से बाहर आते ही भीड़ लगी हुई थी और सभी लोगों में फोटो खिचवाने की होड़ क्योंकि म्यूजियम ऑफ द फ्यूचर की इमारत एक अंडाकार आकार की बहुत खूबसूरत तरीके से बनायी हुई है जो कि रात के अँधेरे में देखते ही बनती है।

इन सब चीजों को हम देख के अंततः मैं वापस अपने होटल की ओर निकला चूँकि थकावट इतनी ज्यादा थी कि मैं थोड़ा भी पैदल चलने

की स्थिति में नहीं था तो इसीलिए मैंने वहां की लोकल टैक्सी कर ली अपने होटल तक परन्तु किराया देते वक्त ये जरूर महसूस हुआ कि थोड़ा पैदल चल सकते थे क्योंकि मात्र 6 किलोमीटर की यात्रा का मैंने भारतीय रूपए के अनुसार 800 रूपए का भुगतान किया। इसके बाद अपने कमरे में पहुँच कर मैं जल्दी ही सो गया क्योंकि अगला दिन और भी थकावट भरा होने वाला था जिसका मुझे बेसब्री से इंतज़ार भी था।

अगली सुबह मैं जल्दी तैयार होकर और जलपान करके 8:30 बजे होटल के नीचे खड़ा हो गया। जल्दी निकलने की वजह ये थी कि हमें आज के दिन यात्रा करनी थी अबू धाबी शहर की जो कि दुबई से 140 किलोमीटर की दूरी पर है। मेरी बस 9 बजे आ गयी और मैंने देखा कि बस मैं और भी बहुत यात्री थे मेरी तरह जिसमें अपने भारत देश के भी बहुत लोग थे तो उन लोगों से बातचीत में कब 140 किलोमीटर की दूरी खत्म हो गयी पता ही नहीं चला। खैर यूनाइटेड अरब एमिरेट्स की सड़कें तो ऐसी हैं कि 140 किलोमीटर की दूरी कोई दूरी नहीं लगती और मात्रा हमने ये सफर 1 घंटा और 10 मिनट में तय कर लिया। अबू धाबी में प्रवेश करते ही हमारा पहला पड़ाव था शेख ज़ायेद ग्रैंड मस्जिद जो कि मुसलिम समुदाय के लिए बहुत ही पवित्र स्थान माना जाता है और ये पुरे विश्व में स्थित सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक है और विश्व प्रसिद्ध है।

यहाँ एक घंटा बिताने के बाद हम बढ़े मेरे अबू धाबी शहर की पसंदीदा जगह जो कि था यस आइलैंड। यस आइलैंड में 3 तरह के पार्क हैं जो एक से बढ़ कर एक हैं। 3 पार्कों में : फेरारी वर्ल्ड, वार्नर ब्रोस और सी वर्ल्ड आता है। मैंने वार्नर ब्रोस की टिकट ली थी जो कि मुझे एक दिन की पड़ी थी भारतीय रूपए के अनुसार 10000 रूपए। पर यकीन मानिये इतना रूपए लगा के मैंने जिस तरह से अपने बचपन को जिया वो किसी लिखावट में व्यक्त नहीं कर सकता। मैं सबको ये बोलना चाहंगा अगर आप कभी अबू धाबी आये तो ये पार्क्स जरूर आएं। यहाँ मैंने विभिन्न प्रकार के कार्टून के कैरेक्टर जैसे टॉम जेरी, स्कूबी डू, बैटमैन आदि प्रकार के कैरेक्टर थे। यहाँ पूरा दिन बिताने के बाद अब हम जाने वाले थे वाप्स हिन्दू टेम्प्ल जो कि सबसे बड़ा हिन्दू टेम्प्ल था इस देश का जिसका अनावरण हमारे देश के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा हाल ही में किया गया था। चूँकि उस दिन नवरात्री का पहला दिन था तो मानो यूनाइटेड अरब एमिरेट्स के सारे हिन्दू आज ही दर्शन लेने आ गए हो पर यकीन मानिये ये दृश्य भी भावुक कर देने वाला था, एक पराये देश में इतनी बड़ी मात्रा में जय माता दी की जयकार सुनके मन एकदम खुश हो गया। मंदिर की तारीफ करते ही बनती है, इतनी खूबसूरत नकाशी से तराशा गया था एक एक दीवारों को मंदिर की की यकीन मानिये की मन यहीं कर रहा था कि बस यहीं 3-4 घंटे बैठा रहु चुप चाप। परन्तु समय के अभाव के कारण निकलना था





क्योंकि हमे वापस दुबई शहर पहुंचना था। अबू धाबी से दुबई आते वक्त रास्ते में शारजाह शहर भी पड़ता है और शारजाह जो कि दुबई शहर से एकदम सटा हुआ है वहाँ मैंने अपने केनरा बैंक की एक शाखा देखी जिसको देखते ही मैं चिल्हा सा उठा। खैर अंततः हमारी बस दुबई पहुंची रात्रि के 10 बजे। मैं होटल पहुंच के अपने कमरे में गया और कल की तैयारी में लग गया क्योंकि कल मेरी विमान थी वापस भारत के नयी दिल्ली शहर के लिए। मैंने पैकिंग पूरी की और सो गया।

अगली सुबह आराम से उठा और जलपान करके और तैयार होकर निकल पड़ा विमानपत्तन के लिए। मन उदास भी था क्योंकि इतने दिन



कैसे बीत गए पता ही नहीं चला और खुशी भी थी अपने देश में वापस पहुंचने की मेरी विमान थी दुबई के समयानुसार 4 बजे शाम की। सारी प्रक्रियाएं मैंने खत्म की और बैठ गया वापस विमान में। अंततः मैं नयी दिल्ली पहुंच गया। भारतीय समयानुसार रात्रि के 9 बजे दुबई की ढेर सारी यादें अपने हादय में लिए। इसी प्रकार मैंने अपनी पहली अंतर्राष्ट्रीय यात्रा पूरी की।



कविता

वनवास : एक युग

मेघाली सरकार

अधिकारी

कॉटाई शाखा

एक युग बिता वनवास में, सिर्फ जीत के ही आस में।
क्यों रुका है तू दहलीज पर, जब मंजिल हैं तेरे पास में॥

क्या थक गाया तू चलते चलते, क्या और अब ना चल सकेगा।
क्या वर्षों की मेहनत को तू आलस के बदले कुचल सकेगा॥

सोच कितना कष्ट होगा, जब सूर्य कल को अस्त होगा।
जब रजनी काली आएगी, आरोप तुझपे लगाएगी॥

क्या हार का मुख देख कर, आराम तब तू कर सकेगा।
मंजिल निकट हैं अब न रुक, क्या मौका फिर से आएगा॥
एक युग बिता वनवास में, क्या वनवास फिर तू जायेगा!!

**“हतो वा प्राप्यसि स्वर्गम्,
जित्वा वा भोक्ष्यसे महिम्।”**

अर्थातः

जीवन के संघर्ष से घबराने से नहीं,
अपितु उसका सामना करने से सफलता मिलती है।

— श्रीमद्भगवद्गीता



कविता

जीवन एक संघर्ष



प्रबीण दुबे
प्रबंधक (विपणन)
क्षेत्रीय कार्यालय, कोटा



प्रतिभा राजपूत
प्रबंधक
जी.टी.रोड शाखा



कविता

जीवन की धूप छाँव

जीवन एक संघर्ष है।
उत्कर्ष है अपकर्ष है॥
शिव धनुष की प्रत्यंचा चढ़ा।
तू ही रघुकुल का वंश है॥

सुगम पथ हो यदि कहीं।
विश्राम ले तब भी नहीं॥
चल निरंतर लक्ष्य साधे।
विजयश्री तब है कहीं॥

तू हलाहल पान कर।
अपमान न अभिमान कर॥
शिख बांध भागीरथी।
जगत का कल्याण कर॥

जब अज्ञातवास होगा।
विलास का जब हास होगा॥
तब खिलेगा ब्रह्मपुष्प।
हस्तिनापुर का ग्रास होगा॥

अर्जुन रहे या कर्ण रहे।
ये वचन स्मरण रहे॥
विजयी सत्य और धर्म हों।
दोनों सदा धारण रहें॥

ऊँची नीची पगड़ंडी पे
छोटे-छोटे पैर जमाए
कभी फिसलते, कभी संभलते
पहली डगर हम पार कर पाये।

अभी मंजिले बहुत पड़ी थी
कौन सी मंजिल को हम जाए
ज़रा सोचते फिर बढ़ जाते
मन चंचल है, ठहर ना पाये।

उमर हमारी बड़ी सयानी
जब -जब हम भूलें याद दिलाए
जो मन में है, तुम वो कर लो
समय जो बीता वापस ना आए।

खूब मशक्त कर ली हमने
शिखर पताका हम लहराए
घूम-घूम कर ढोल बजाया
हारा मन मेरा उठ जाए।

गिरकर उठना बहुत जरूरी
बिना गिरे कुछ समझ ना आए
जो जीवन में बढ़ना चाहे
हर पग उसके मील समाये।

गिरना, उठना और संभालना
दृढ़ संकल्प को दर्शाये
कहीं धूप हो कहीं छाँव हो
जीवन का पहिया चलता जाये।





यात्रा वृत्तांत

सोमनाथ ज्योतिर्लिंग और देवभूमि द्वारिका: एक श्रद्धा की यात्रा

भारत जो अपनी समृद्ध संस्कृति विरासत ऐतिहासिक महत्व और धार्मिक स्थलों के लिए प्रसिद्ध है, जो मुझे हमेशा आकर्षित किया है। हाल ही में मैंने अपने परिवार के साथ अत्यंत प्रसिद्ध व प्राचीन सोमनाथ ज्योतिर्लिंग और देवभूमि द्वारिका की यात्रा की जो गुजरात के दक्षिणी तट पर स्थित हैं। यह यात्रा मेरे लिए एक अविस्मरणीय अनुभव था जिसने मुझे भारत की ऐतिहासिक और धार्मिक विरासत के बहुत करीब लाया तथा भगवान की तरफ़ मेरी श्रद्धा को और गहरा बनाया। इस यात्रा के दौरान मैंने कई अद्भुत अनुभव प्राप्त किये जो मैं आप सभी के साथ साझा करना चाहुंगी।

गुजरात की पावन भूमि में स्थित सोमनाथ ज्योतिर्लिंग और द्वारका की यात्रा का सपना वर्षों से मेरे मन में था। इन दोनों स्थानों का धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व इतना विशाल है कि यहाँ की यात्रा हर हिंदू के जीवन में एक विशेष स्थान रखती है। सोमनाथ की धरती पर पौराणिक कथाओं का प्रभाव और द्वारका में भगवान श्रीकृष्ण की उपस्थिति की अनुभूति, यह सब अनुभव करने के लिए मैंने मेरे परिवार के साथ यह यात्रा प्रारंभ की।

चूँकि मैं अहमदाबाद में कार्यरत हूँ हमने अपनी यात्रा अहमदाबाद से आरम्भ की। सुबह लगभग 6 बजे हम अपनी गाड़ी द्वारा भगवान शिव की नगरी सोमनाथ की ओर अग्रसर हुए। बारिश के दिन थे मौसम सुहावना था काले बादलों और हल्की बारिश के साथ बहुत सुखद वातावरण प्रतीत हो रहा था। गुजरते हुए हरे भेरे खेत नदियाँ और गाँवों के दृश्य ने मन को शांति दी। हम एक खुशनुमा माहौल के साथ आगे बढ़ने लगे। हमने कुछ स्थानों पर रुककर गुजरात के पारंपरिक नाश्ते फाफड़ा जलेबी व प्रसिद्ध काठियावाड़ी भोजन का लुत्फ उठाया। कुछ देर आराम किया और लगभग 3 बजे सोमनाथ पहुंचे।

सोमनाथ सौराष्ट्र के वेरावल के निकट स्थित भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। शहर के बाहरी किनारों तक पहुँचने से ही हमें एक सुखद अनुभव प्राप्त होने लगा। मंदिर के निकट पहुँच कर हमने मंदिर की पार्किंग में अपना वाहन पार्क किया और हाथ मुँह धो कर मंदिर की ओर प्रस्थान किया। वहाँ पहुँच कर मंदिर की खूबसूरती



अंशिता सिंह

अधिकारी

क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

ने हमें आश्चर्यचकित कर दिया। मंदिर की वास्तुकला और दीवारों पर की गई कारीगरी ने हमें मंत्रमुग्ध कर दिया।

ऐसा माना जाता है कि भगवान शिव का यह प्राचीन मंदिर 600 ई.पू. से भी पुराना है जिसे ना जाने कितनी बार खंडित करने की कोशिश की गई। कहते हैं कि यह प्राचीन मंदिर सोने से भरपूर हुआ करता था जिसे महमूद गज़नी द्वारा 17 बार लूटा गया। लेकिन इन लूट के बावजूद खूबसूरती का प्रतीक यह मंदिर अरब सागर के तट पर आज भी मज़बूती के साथ अडिंग खड़ा है। कुछ देर कतार में खड़े रहने के पश्चात हमने मंदिर में प्रवेश किया और भगवान शिव के ज्योतिर्लिंग के दर्शन किए। भक्तों का उत्साह देखते ही बनता था। मंदिर का परिसर विशाल और भव्य था। सोने से सजाए गए गुंबद और मंदिर की अद्भुत वास्तुकला देखकर हम मंत्रमुग्ध हो गये।

चूँकि देश भर से भक्त भगवान के दर्शन प्राप्त करने हेतु सोमनाथ आते हैं, मंदिर का प्रशासन किसी को ज्यादा समय तक शिवलिंग के आगे रुकने नहीं देता जिससे कि सभी भक्तों को सामान्यतः दर्शन प्राप्त हो सकें। परंतु इतने कम समय के दर्शन से भी हमें अत्यंत अनुभूति की प्राप्ति हुई व बहुत आनंद मिला। ऐस लग रहा था कि मानो भगवान शिव खुद अपनी उपस्थिति से हमें आशीर्वाद दे रहे हों।

दर्शन के पश्चात कुछ समय तक हमने मंदिर के दक्षिणी भाग से दिखने वाले समुंदर में उठती हुई ऊँची-ऊँची लहरों को देखने का आनंद उठाया। समुद्र की लहरें मंदिर की पवित्रता से मेल खा रही थीं रिमझिम गिरती बारिश की बूंदों के बीच लहरों की तीव्रता व ज्वार भाटे ने हमें आकर्षित कर लिया और हमारे हृदय को हर्ष से भर दिया। तत्पश्चात हमने देवभूमि द्वारिका की ओर बढ़ने का फैसला कियाए और प्रसाद लेकर मंदिर से बाहर निकल कर अपने वाहन तक पहुँचे।

सोमनाथ के बाद हमारी अगली मंजिल थी - द्वारका। सोमनाथ से द्वारका की दूरी लगभग 230 किलोमीटर है। मौसम इतना सुहावना हो चुका था कि उस पावन नगरी से आगे बढ़ने को मन जैसे मान ही नहीं रहा था। परंतु भगवान कृष्ण की नगरी पहुँचने की उत्सुकता के साथ हम आगे बढ़े और लगभग 6 बजे हमने द्वारका की ओर प्रस्थान किया।

सोमनाथ से द्वारिका तक का सड़क मार्ग एक बहुत सुंदर दृश्य प्रस्तुत करता है। नारियल के बड़े बड़े बाणीचों से घिरी हुई यह नई सड़क एक अत्यंत मनोरम दृश्य प्रस्तुत कर रही थी। रास्ते की सुंदरता हमारे उत्साह को बढ़ा रही थी लेकिन हमे आगे आने वाले तूफान का अंदाज़ा अभी नहीं था। हम गूगल मैप्स की मदद से आगे बढ़ते रहे। वह रास्ता अत्यंत अद्भुत मालूम हो रहा था। हम समंदर के किनारे एवं करीब बढ़ते जा रहे थे। कुछ दूरी का रास्ता तय कर हम माधवपुर बीच पर रुके। माधवपुर बीच सड़क के किनारे पर ही है जहाँ हम जैसे बहुत से अन्य यात्री रुककर उसकी सुंदरता की सराहना कर रहे थे और अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरे में उसको कैप्ट कर रहे थे। शाम होने लगी थी, अंधेरा गहराने लगा था। काले बादल और तेज हवाएं एक अजीबोगरीब वातावरण बना रही थीं। खराब मौसम व मौसम विभाग की चेतावनी को ध्यान में रखते हुए प्रशासन सभी को पानी के करीब जाने से रोकने लगा। हमारी राह अभी लंबी थी इसलिए कुछ देर रुक कर हम फिर अपनी मंजिल की ओर आगे बढ़ने लगे।

जब हम पोरबंदर के निकट पहुँचे तो भारी वर्षा होने लगी और तेज हवाएं चलने लगीं। अंधेरा धना हो चला था और हम समुंदर किनारे बढ़ते जा रहे थे। स्ट्रीट लाइट्स भी तूफान के कारण बंद हो चुकी थीं ना ही सड़क पर कोई दूसरा वाहन नज़र आ रहा था। दृश्यता कम होते होते मात्र 25-30 मीटर्स तक सीमित रह गई थी। बारिश रुकने का नाम नहीं ले रही थी। मात्र कुछ ही पलों में कई इंच पानी बरस चुका था और अभी भी वर्षा अपने चरम पर थी। मार्ग के एक और खायी थी जो अब पानी से भरकर समुंदर में मिल चुकी थी और यह पानी अब सड़क मार्ग पर चढ़ने लगा था तथा दूसरी ओर बड़ी-बड़ी पवन चक्की के ढुङ्ड नज़र आ रहे थे जो हवा के दबाव को और तीव्र बना रहे थे। पवन चक्की की गति इतनी तीव्र थी कि हमारा वाहन हवा के कारण थोड़ा डगमगाने लगा और समुंदर की ओर उसका झुकाव बढ़ने लगा। यह नज़ारा देख कर मेरे हृदय में डर समाने लगा। एक अनजान प्रदेश में ऐसी परिस्थिति बहुत भयावह मालूम हो रही थी। उस वक्त मेरी मां के शब्दों ने मुझे शांत किया और मेरा साहस बाँधा। उन्होंने मुझे समझाया कि यदि हमारी श्रद्धा सच्ची होगी व मन साफ होगा तो ईश्वर अपने द्वार पर आनेवाले भक्तों पर अपनी कृपा ज़रूर रखेंगे। गाड़ी की पिछली सीट पर बैठी मैं अपनी आँखें मीच कर मन ही मन भगवान शिव के नाम का जाप करने लगी। भारी वर्षा के बावजूद भी हम आगे बढ़ते रहे क्योंकि यदि हम कुछ समय भी वहाँ रुकने का निर्णय लेते तो वह मार्ग पूर्णतः पानी में डूब जाता। लगभग 35-40 मिनट की उस कड़ी



जद्दोजहद के बाद हमें कुछ रोशनी नज़र आने लगी। बारिश की गति कुछ कम होने लगी थी तब गूगल मैप्स ने हमें बताया कि हम शहर के निकट पहुँच चुके हैं। यह देख भी जान में थोड़ी जान वापस आई और मेरे मन को कुछ सुकून हुआ। धीरे-धीरे आगे बढ़ते हमने शहर में प्रवेश किया अपने निर्धारित होटल पर पहुँचे। रात बहुत हो चुकी थी इसलिए हमें भोजन के लिए फिर से होटल के बाहर जाना पड़ा। बारिश अब भी हो रही थी। हम भीगे कपड़ों के साथ रात्रिभोज करके वापस लौटे और आराम करने लगे। सहमी हुई मैं पूरी रात बस बारिश को देखती रही परंतु बारिश तो रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। पूरे शहर में पानी भर चुका था और देवभूमि द्वारका में बाढ़ की अफवाहें फैलने लगी थी। मेरे हृदय में असमंजस जारी थी।

अगली सुबह लगभग 6 बजे हल्की बारिश के बावजूद हमने द्वारिकाधीश मंदिर की ओर बढ़ने का निर्णय किया और बैटरी से संचालित रिक्शा द्वारा हम मंदिर के द्वार पर पहुँचे। घने काले बादल व लगातार गिरती हुई बारिश में प्रातः काल में भी अंधेरा छाया हुआ था। हम अपने मोबाइल, घड़ी इत्यादि वस्तु अमानती समानघर में जमा करने के बाद मंदिर की तरफ बढ़े।

द्वारका शहर में भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी नगरी बसाई थी। यह धरती कृष्ण भक्तों के लिए एक स्वर्ग है द्वारकाधीश मंदिर भगवान कृष्ण को समर्पित है। भगवान श्री कृष्ण का यह मंदिर अतुलनीय है। कहा जाता है कि यहाँ से भगवान श्री कृष्ण ने अपने राज्य को संचालित किया था। करीब 78 मीटर ऊँचा यह मंदिर भी सोमनाथ की तरह अरब सागर के तट पर स्थित है और अपनी वास्तुकला से मोहित कर देता है। हमने मंदिर में प्रवेश किया और कतार में लग कर भगवान के दर्शन प्राप्त करने के इंतजार में जाप करते हुए आगे बढ़ते रहे। मंदिर का एक अन्य उल्लेखनीय प्रसंग है उसकी चोटी पर फहराता हुआ ध्वज। प्रतिदिन 4 बार एक व्यक्ति उस ऊँचाई पर चढ़ कर एक नए ध्वज को मंदिर की चोटी पर स्थापित करता है। हर उस ध्वज पर सूर्या व चंद्रमा की छवि होती है जो ये बतलाती है कि जब तक संसार में सूर्य और चंद्रमा रहेंगे तब तक भगवान श्री कृष्ण अपने भक्तों के साथ रहेंगे। उस बारिश का लाभ हमको इतना मिला कि मंदिर के बाहर तक लगने

वाली लंबी क़तार आज कुछ ही भक्तों तक सीमित थी और हमें जल्दी और बहुत ही अद्भुत दर्शन की प्राप्ति हुई। मंदिर में भगवान श्री कृष्ण की मूर्ति को देखकर ऐसा महसूस हुआ कि मानो वे साक्षात् वहा विराजमान हो। समुद्र की लहरों की आवाज़ मंदिर के घंटों की ध्वनी और भजनों की गूंज ने वहाँ की भक्ति को और भी गहन बना दिया। हम बारिश में भीग हुए थे लेकिन भगवान के दर्शन होते ही हमारा मन प्रफुल्लित हो उठा था और हमे ऐसा प्रतीत हुआ कि हमारी यात्रा सफल हुई। फिर हमने प्रसाद ग्रहण किया और अत्यंत संतुष्ट महसूस किया। द्वारका में रुक्मिणी देवी मंदिर व गोपी तालाब जैसे अन्य कई प्रमुख स्थल भी वहाँ की शोभा को और अधिक बढ़ाते हैं लेकिन मौसम की गम्भीरता को ध्यान में रखते हुए हमने वहाँ न जाने का निरण लिया।

मंदिर से बाहर निकल कर हमने नागेश्वर ज्योतिर्लिंग और बेट द्वारिका की यात्रा के लिए टैक्सी बुक की। पिछली रात से चालू बारिश की बजह से टैक्सी वाले भी आगे जाने में हिचकिचा रहे थे पर अंत में वह हमें ले कर जाने को तैयार हो गए और करीब 8 बजे हम ने भगवान शिव के नागेश्वर ज्योतिर्लिंग की ओर प्रस्थान किया। नागेश्वर ज्योतिर्लिंग को जाने वाला मार्ग बारिश की बजह टूट चुका था और बहुत सी जगह पानी सड़क के ऊपर से टूसरी तरफ पार हो रहा था। अब तक कोई वाहन इस मार्ग से आगे नहीं गया था। फिर भी हम प्रभु के दर्शन के लिए बढ़ते रहे।

कुछ दूरी चलने के बाद हम नागेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर के द्वार पर पहुँचे। बारिश अब रुकने की जगह और तेज़ हो चुकी थी जिसकी बजह से मंदिर के बाहर घुटनों तक पानी जमा हो गया था। उसको पार करके हम भीगते हुए मंदिर के भीतर पहुँचे और भगवान शिव के आगे न तमस्तक हुए। यहाँ भी बारिश के फलस्वरूप भक्तों की संख्या नाममात्र की ही थी। हमने जल, दूध, शहद, चंदन व भगवान शिव की अन्य प्रिय वस्तुओं से शिवलिंग का अभिषेक किया व प्रसाद ग्रहण किया। इतने अच्छे से दर्शन पाने के पश्चात हम खुशी-खुशी मंदिर से बाहर निकले और भीगते हुए वापस टैक्सी में आए और बेट द्वारका जाने को और अधिक उत्सुकता के साथ आगे बढ़े। हम सभी बारिश में इतना भीग चुके थे कि अब हमारे कपड़े से भी पानी टपकने लगा था।

बेट द्वारका समुद्र में स्थित एक टापू है जिसे भगवान श्री कृष्ण का निवास स्थल माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि यह वही स्थान है जहाँ भगवान कृष्ण ने अपनी पटरानियों के साथ समय बिताया था। अतः भगवान के उस महल के दर्शन हेतु हम ओखा पहुँचे। पिछले वर्ष तक ओखा से बेट द्वारका तक जाने के लिए नाव का उपयोग किया जाता था। एक ही नाव में करीब 120 से 140 व्यक्तियों को लेकर नाविक ओखा से बेट द्वारका और वापसी की यात्रा करते थे। मगर सुदामा सेतु के उद्धाटन के पश्चात हम स्वयं अपने वाहन से बेट द्वारका ले पहुँचे। टैक्सी वाले भैया हमको सुदामा सेतु के ऊपर से बेट द्वारका ले

गए। समुद्र के बीचों बीच बना यह सेतु भारतीय वास्तुकला के एक अद्भुत नमूने का प्रदर्शन करता है। धीमी बारिश व हल्के काले बादलों के नीचे और समुद्र के ऊपर उस सेतु को देखने मात्र से बहुत सुखद अनुभव हुआ। बेट द्वारका पहुँच कर हमने श्री कृष्ण के दर्शन किए। भक्तगणों की संख्या यहाँ भी न्यूनतम थी हम बहुत तसल्ली के साथ प्रभू के आगे न तमस्तक हुए, प्रार्थना की व प्रभू के आभारी हुए जो उन्होंने हमें वहा तक आने का और अपने दर्शन का सौभाग्य प्राप्त करने का यह मौका प्रदान किया। भले ही हमारे कपडे व शरीर बारिश के पानी से पूरी तरह गीले थे लेकिन हम सभी के मन खुशी से पूले नहीं समा रहे थे क्योंकि इतने सुखदायक दर्शन शायद ही कभी हो सकता है। अब हमारी यात्रा पूर्णतः सफल हो गई थी। मंदिर से बाहर निकल कर अपने शरीर को सर्दी से थोड़ा आराम देने के लिए हमने गरमा-गर्म चाय की चुस्की ली और टैक्सी लेकर अपने होटल की ओर प्रस्थान किया। हमने सुदामा सेतु पर रुककर उस मनोहरी दृश्य को अपनी यात्रा की यादों के रूप में अपने मोबाइल कैमरे में कैद कर लिया।

होटल पहुँच कर हमने चैन की सांस ली, कुछ देर आराम किया और फिर अहमदाबाद वापसी को निकल पड़े। बारिश अभी भी रुकी नहीं थी, पर हमारी दृढ़ श्रद्धा के सामने वह हमारे मार्ग में बाधा नहीं बन पायी।

लगभग 7-8 घंटे की यात्रा के बाद हम वापस अहमदाबाद पहुँचे पर हमारे अंदर थकान का कोई निशान भी नहीं था। हमारी श्रद्धा अटल रही और हमने प्रत्येक स्थल पर भगवान के दर्शन किए।

यह यात्रा मुझे विश्वास दिलाती है कि अगर हम सच्चे मन से भगवान पर भरोसा रखते हैं तो वह हमेशा हमारे साथ होते हैं। इसलिए जहाँ इच्छा होती है वहाँ रास्ता भी होता है।

द्वारका की इस पावन भूमि से लौटते समय मेरे मन में एक असीम शांति और संतोष था। सोमनाथ और द्वारका की यात्रा न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से बल्कि एक आध्यात्मिक यात्रा भी थी। इन दोनों पवित्र स्थानों पर जाकर मैंने जो अनुभव किया वह मेरे जीवन का एक अनमोल हिस्सा बन गया।

गुजरात की यह यात्रा मेरे लिए एक आत्मिक अनुभव था जहाँ मैंने भगवान शिव और श्रीकृष्ण की उपस्थिति को महसूस किया। यह यात्रा केवल मंदिरों के दर्शन की नहीं बल्कि अपनी आत्मा की खोज की यात्रा भी थी।

जब कभी आपको भी इस पवित्र स्थल पर जाने का अवसर मिलें तो अवश्य दर्शन करें। यह यात्रा वृतांत उस अनुभव को बयान करता है जो मैंने सोमनाथ और द्वारका की यात्रा के दौरान अनुभव किया। आशा है आपको यह पसंद आया होगा।





लघु आलेख

डोरस्टेप बैंकिंग

2011 में एमबीए कॉलेज के दाखिले के बाद मुझे याद है पहला ही चैप्टर जो पढ़ाया गया था उसमें सिखाया कस्टमर इंज किंग ग्राहक ही राजा है ये लाइन प्रत्येक संस्था के लिए ग्राहकों के महत्व को प्रतिबिंबित करती है, चाहे वह किसी भी प्रकार या आकार की हो। मजबूत ग्राहक संबंधों को किसी भी संस्था की रीढ़ की हड्डी माना जाता है। वक्त के साथ ग्राहक सेवा में काफी परिवर्तन व बदलाव आए। पीढ़ी दर पीढ़ी आधुनिकता आती चली गई। हाल ही में सबसे उपयोगी, सहायक व सार्थक सेवा जो चलन में है वो है डोरस्टेप बैंकिंग।

डोरस्टेप बैंकिंग – बैंक जाने का नहीं है समय, चलो बैंक को बुला लेते हैं अपने द्वार पर।

डोरस्टेप बैंकिंग, बैंकिंग की एक अद्भुत और नयी पहल है जिसके तहत ग्राहक नियमित बैंकिंग गतिविधियों के लिए बिना बैंक जाए, अपने घर पर ही बैंकिंग की कई सुविधाओं का लाभ उठा सकते हैं। डोरस्टेप बैंकिंग की सुविधा, पीएसबी एलायंस प्राइवेट लिमिटेड की बैंकों के साथ एक वित्तीय साँझा व्यवस्था है। इस पहल का मकसद बैंकिंग सेवाओं को ग्राहकों के लिए ज्यादा सुलभ यानी एक्सेसिबल बनाना है।

शुरूवात: डोर स्टेप बैंकिंग सर्विस एन्हैन्सड सर्विस एक्सीलेंस के अंतर्गत शुरू की गयी है, जिसे वित्तीय सेवा विभाग ने वर्ष 2018 में पेश किया था। कोविड-19 महामारी के दौरान सरकार ने सितंबर 2020 में डोरस्टेप बैंकिंग की शुरुआत की थी। ग्रांम में वरिष्ठ नागरिकों, गंभीर बीमारी से ग्रस्त लोग, दिव्यांग, नेत्रहीन आदि ग्राहक इसमें शामिल थे। लेकिन अब कुछ बैंक अपने सभी ग्राहकों के लिए ये सेवाएं उपलब्ध करवा रहा है।

डोरस्टेप बैंकिंग की कुछ सेवाएं ये हैं:

- नकदी जमा करना
- नकदी निकालना



स्नेहा

ग्राहक सेवा सहयोगी
जगतपुरा - II शाखा

- चेक जमा करना
- डिमांड ड्राफ्ट बनाना
- चेक बुक मंगवाना
- जीवन प्रमाणपत्र मंगवाना
- सावधी जमा
- खाता खोलने/आवेदन/प्रपत्रों की डिलीवरी
- बीमा और म्यूचुअल फंड एप्लिकेशन
- दस्तावेजों की डिलीवरी और संग्रहण
- वित्तीय सेवाएं
- आरटीजीएस/एनईएफटी फंड ट्रांसफर अनुरोध
- 15जी/15एच फॉर्म



डोरस्टेप बैंकिंग सर्विस की खासियत : डोरस्टेप बैंकिंग सर्विस सिर्फ रजिस्टर्ड एड्रेस पर ही उपलब्ध कराई जाएगी। डोरस्टेप बैंकिंग की सुविधा का लाभ उठाने के लिए, आपको अपने बैंक के टोल-फ्री नंबर पर कॉल करके अप्लाई करना होता है। किसी भी तरह की धोखेबाजी से बचने के लिए बैंक ग्राहक को व्यक्तिगत रूप से डोरस्टेप सर्विस एजेंट के सर्विस कोड को सत्यापित करना होगा, जो कि ग्राहकों के पंजीकृत मोबाइल नंबर पर एसएमएस द्वारा भेजा जायेगा। इस सुविधा की सबसे खास बात यह है कि आपको डोरस्टेप सर्विस एजेंट से खाता संख्या, एटीएम कार्ड या इसके पिन से सम्बंधित कोई जानकारी साझा नहीं करना होगा। सटीक सर्विस सुधारों के रूप में, ग्राहक कॉल सेंटर, वेब पोर्टल या मोबाइल एप के सार्वभौमिक माध्यम से अपने सेवा अनुरोध को भी ट्रैक कर सकते हैं।

डोरस्टेप बैंकिंग की शर्तें : बैंक से डोरस्टेप सेवाएं प्राप्त करने के लिए कुछ बातों का ध्यान रखना जरुरी है जैसे ये सेवाएं निःशुल्क नहीं हैं हर बैंक ने इसके लिए निर्धारित शुल्क तय किये हैं। उसी तरह ये सेवाएं एक निश्चित दायरे में ही दी जाएगी। जैसे बैंक की ब्रांच के 4-5 किलोमीटर के दायरे में रहने वाले लोग ही डोरस्टेप बैंकिंग सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। यह सेवा केवल बैंकिंग कारोबार के समय तक ही सीमित है और खासकर यदि दोपहर 3 बजे के बाद अनुरोध किया जाता है, तो बैंक उसी दिन सेवाएं प्रदान करने में सक्षम नहीं होगा।

डोरस्टेप बैंकिंग सेवा की आवश्यकता : आम आदमी तक बैंकों की पहुंच बनाने के लिए डोर स्टेप बैंकिंग सेवा की शुरुआत की गई है। महत्वाकांक्षी भारत के भविष्य को डिजिटल बैंकिंग में परिवर्तन के लिए डोर स्टेप बैंकिंग लाई गई है। भारत के गांवों में बैंकिंग के प्रति एक आंतरिक अविश्वास है। सामाजिक-आर्थिक कारकों के कारण उत्पन्न वित्तीय निरक्षरता के कारण यह और बढ़ गया है। डोरस्टेप बैंकिंग इन बाधाओं को दूर कर सकती है।



डोरस्टेप बैंकिंग सेवाएं

चुनौतियां : डोरस्टेप बैंकिंग सेवा की कुछ चुनौतियां भी उजागर हुई, जैसे ग्राहकों में रुचि की कमी, बैंकों के पास संसाधन की कमी। ग्राहकों में विश्वास की कमी। तमाम कठिनाईयों के बाद भी ये तेजी से पैर पसार रहा है।

सार : डोरस्टेप बैंकिंग सेवा उत्कृष्ट सेवा है। बढ़ते भारत की आधुनिक पहल का प्रतीक डोरस्टेप बैंकिंग सर्विस हमारी उन्नति और समृद्धि को दर्शाता है।



नितिन गुसा

अधिकारी
वास्को डा गामा I शाखा



कविता

तुम होते
कौन हो

नहीं परी हूँ मैं, नाज़ो से पली हूँ मैं,
नखरों में खिली हूँ मैं, गुड़िया सी ढली हूँ मैं,
मुझे प्यारी है, आजादी मेरी
मुझे पिंजरे में, कैद करने वाले,
तुम होते कौन हो

मैं इस रास्ते से स्कूल जाऊं, या उस रास्ते से,
मैं बाहर रिक्शे से जाऊं, या बस से
मैं स्कूल से मंदिर जाऊं, या सीधा घर जाऊं,
मेरी हर जगह ठेकेदारी करने वाले,
तुम होते कौन हो

मैं एम ए करूं या बीएड पढ़ूं,
मैं इंजीनियर बनूं या डाक्टर,
मैं चूड़ीदार पहनूं या जीन्स पैटं,
मुझे देखकर सीटी मारने वाले,
गलियों में रोक कर छेड़ने वाले,
तुम होते कौन हो

मैं हर किसी से मिठी बातें क्यूं करूं,
हर किसी को सम्मान क्यूं बांटती फिरूं,
मेरे आत्मसम्मान कि ज़रा भी कद्र नहीं,
मेरे सम्मान को ठेस पहुँचाने वाले,
तुम होते कौन हो

मैं चारदिवारी में बंध कर क्यूं रहूं,
इस आज़ाद देश में भी गुलाम बनकर क्यूं रहूं,
ताने और अत्याचार क्यूं सहूं,
सरेआम इज़त कि नीलामी करने वाले,
मुझे बेआबरु करने वाले,
तुम होते कौन हो



आलेख

आधुनिक बैंकिंग के नवीन आयाम

पिछले दशक में भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में एक बड़ा परिवर्तन हुआ है। डिजिटल तकनीकों, नियामक सुधारों और बदलती ग्राहक अपेक्षाओं के साथ, आधुनिक बैंकिंग भारत में तेजी से बदल रही है। हम इस निबंध में भारत की आधुनिक बैंकिंग के नए आयामों का गहन विश्लेषण करने का प्र्यास करेंगे, जिसमें प्रमुख रुझानों, नवीनीकरण और इनके अर्थव्यवस्था तथा समाज पर पड़ने वाले प्रभावों को उजागर किया गया है।

डिजिटल परिवर्तन

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण बदलावों में से एक डिजिटल परिवर्तन है। बैंक, ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाने, परिचालन को सुव्यवस्थित करने और नए वित्तीय उत्पादों एवं सेवाओं को प्रस्तुत करने के लिए प्रौद्योगिकी का व्यापक उपयोग कर रहे हैं।

I. ऑनलाइन और मोबाइल बैंकिंग: स्मार्टफोन और इंटरनेट कनेक्टिविटी की उपलब्धता ने ऑनलाइन और मोबाइल बैंकिंग के विस्तार को गति दी है। भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के अनुसार, 2023 में मोबाइल बैंकिंग लेनदेन की मात्रा में 100% और मूल्य में 80% की वृद्धि हुई। केनरा बैंक, एचडीएफसी, आईसीआईसीआई और एसबीआई जैसे बैंकों ने मजबूत मोबाइल बैंकिंग ऐप्स विकसित किए हैं, जो ग्राहकों को अपने स्मार्टफोन के माध्यम से विभिन्न बैंकिंग गतिविधियाँ करने की सुविधा प्रदान करते हैं। उदाहरण स्वरूप आप हमारे केनरा बैंक का मोबाइल बैंकिंग ऐप (Ai1) को ले लीजिये जो कि एक बेहद प्रभावी व लोकप्रिय मोबाइल बैंकिंग ऐप है, जिसमें बैंकिंग सेवाओं का आनंद लेने के लिए 300 से अधिक आकर्षक सुविधाएँ जैसे कि (सावधि जमा और आरडी को खोलना/बंद करना, सावधि जमा पर क्रण, भारत क्यूआर का उपयोग करके क्यूआर कोड को स्कैन और भुगतान करना, संपर्क या मोबाइल नंबर पर भुगतान करना, प्रीमियम पेरोल खातों के लिए तत्काल ओडी, मोबाइल के माध्यम से पूर्व-अनुमोदित क्रेडिट कार्ड/डेबिट कार्ड के लिए आवेदन



पुष्कर पाण्डेय

प्रबंधक

महाराणा प्रताप नगर शाखा, भोपाल

करना बैंकिंग, क्रेडिट कार्ड स्टेटमेंट देखने की सुविधा और ईमेल स्टेटमेंट के लिए अनुरोध, वर्चुअल डेबिट कार्ड, कार्ड रहित नकद निकासी, मोबाइल रिचार्ज, फ्लाइट/कैब बुकिंग, लॉकर सुविधा, क्रण भुगतान, क्रेडिट स्कोर जनरेशन, फास्टैग के लिए आवेदन, बिल भुगतान सुविधा, लॉकर सुविधा इत्यादि) उपलब्ध हैं, जिनके लिए अब आप को बैंक शाखा जाने की आवश्यकता नहीं है।

II. डिजिटल-ऑनली बैंक: डिजिटल-ऑनली बैंकों की अवधारणा भारत में तेजी से लोकप्रिय हो रही है। ये बैंक पूरी तरह से ऑनलाइन संचालित होते हैं और इनकी कोई भौतिक शाखाएं नहीं होतीं। उदाहरण के लिए, पेटीएम पेमेंट्स बैंक और एयरटेल पेमेंट्स बैंक, अमेज़न बैंक आदि डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से बचत खाते, फिक्स्ड डिपॉजिट, और मनी ट्रांसफर जैसी सेवाएं प्रदान करते हैं। डिजिटल-ऑनली बैंक कम लागत में उच्च सेवा स्तर प्रदान करने में सक्षम होते हैं, जिससे अधिक से अधिक ग्राहक उनकी ओर आकर्षित हो रहे हैं।

III. कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और मशीन लर्निंग (ML): बैंक व्यक्तिगत सेवाओं की पेशकश, धोखाधड़ी का पता लगाने और ग्राहक सहायता में सुधार के लिए एआई और एमएल का उपयोग कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, आईसीआईसीआई बैंक, कोटक महिंद्रा व एक्सिस बैंक एआई-संचालित चैटबॉट्स का उपयोग ग्राहकों की पूछताछ में सहायता के लिए करता है, जबकि एचडीएफसी बैंक धोखाधड़ी लेनदेन का पता लगाने के लिए एमएल एल्गोरिदम का उपयोग करता है। इस प्रकार की तकनीकों का उपयोग करके बैंक, अपने ग्राहकों के लिए तेज और अधिक कुशल सेवाएं सुनिश्चित कर रहे हैं।

अभी हाल में ही बैंगलूरु में, हमारे अपने केनरा बैंक ने डेटा और एनालिटिक्स सेंटर (DnA) का उद्घाटन किया। इस सेंटर को एक उत्कृष्टता केंद्र के रूप में स्थापित किया गया है, जिसमें नवीकरण और सहकार्यता को समर्थन देने के लिए अत्याधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं। केनरा बैंक में ग्राहक अनुभव और संचालन में सुधार के लिए एनालिटिक्स का उपयोग करके डेटा-ड्रिवन बैंकिंग के भविष्य को अपना रहा है। एआई हमारे जीवन को अभूतपूर्व तरीकों से बदल रहा है और हम व्यापार वृद्धि को प्रोत्साहित करने के लिए इसे अपनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं, साथ ही यह बैंक और ग्राहकों से संबंधित डेटा गोपनीयता और सुरक्षा को सुनिश्चित करते हैं। नैतिक एआई का उपयोग दुनिया को गोमांचक बना रहा है, और केनरा बैंक इसके साथ पूरी तरह से तैयार है।

केनरा बैंक ने डेटा लेकहाउस कार्यान्वयन और उन्नत एनालिटिक्स प्लेटफॉर्म और क्लाउड में डेटा लेक की स्थापना के लिए साझेदारियों में प्रवेश किया है। ग्राहक अनुभव, व्यापार उत्पन्न करने और एआई/एमएल का उपयोग करके कर्मचारियों के कौशल विकास के क्षेत्रों में कई एनालिटिक्स पहलों की भी शुरुआत की गई है।

हमारे केनरा बैंक ने अपने डीएसीओईथॉन – डेटा एनालिटिक्स सेंटर ऑफ एक्सीलिंस हैकाथॉन के भव्य फिनाले का भी आयोजन किया, जहां देश भर के फाइनलिस्ट्स ने ग्राहक अनुभव, धोखाधड़ी की रोकथाम और डिफॉल्ट भविष्यवाणी जैसे विषयों पर प्रतिस्पर्धा की। टीमों ने अपने प्रोटोटाइप प्रस्तुत किए, जिन्हें एक तकनीकी जूरी शरा मूल्यांकित किया गया और विजेताओं को आकर्षक नकद पुरस्कार दिए गए। केनरा बैंक के हैकाथॉन इवेंट (डीएसीओई-थॉन), जिसमें 2899 प्रतिभागियों की प्रभावशाली पंजीकरण संख्या देखी। उनमें से, 256 नवोन्मेषी विचारों को अगले चरण में जाने के लिए चुना गया। 13 से 30 नवंबर-2023 के बीच, 24 प्रोटोटाइप प्रमुख समाधान के रूप में उभरकर सामने आए, जिससे बैंक के डिजिटल भविष्य का मार्ग प्रशस्त हुआ है और ये काफी उत्साहजनक है।

केनरा बैंक के आधुनिक बैंकिंग भविष्य की वर्तमान रूपरेखा –

▲ केनरा बैंक डीएनए (डेटा और विश्लेषण)

केनरा बैंक डैशबोर्ड

▲ विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि डैशबोर्ड –

- प्रॉस्पर लीड डैशबोर्ड, बिजनेस पूर्वनुमान, एसबी, सीए, आरटीडी इनसाइट, एसएमए और कैश रिकवरी इनसाइट, एनपीए अपग्रेडेशन।

▲ प्रमुख व्यवसाय संकेतक डैशबोर्ड –



- एटीएम मॉनिटरिंग डैशबोर्ड
- डिजिटल उत्पाद डैशबोर्ड
- एनपीए डैशबोर्ड
- ब्रांच बैच स्थिति
- डेटा गुणवत्ता सूचकांक (डीक्यूआई) डैशबोर्ड
- नकारात्मक कारोबार शाखाएं
- शून्य ऋण संख्या वाली शाखाएं
- खुदरा ऋण डैशबोर्ड
- पीएमजेडीवाई डैशबोर्ड
- समाधान पैकेज ट्रैकिंग
- गोल्ड लोन डैशबोर्ड
- अग्रिमों की क्षेत्रवार तैनाती
- सीपीजीआरएस डैशबोर्ड
- एसएलबीसी डैशबोर्ड
- सरकारी योजना की डिजिटल ऑन बोर्डिंग
- ▲ एनालिटिक्स और पावर बीआई
- ▲ मार्केटिंग ऑपरेशंस अनुभाग द्वारा आई-लीड (प्रेरणादायक लीड सिस्टम) संस्करण-2.0
- ▲ टैब बैंकिंग व सीपीएच (केंद्रीकृत प्रोसेसिंग हब) की स्थापना
- ▲ ऋण प्रसंस्करण के लिए लैप LPs सॉफ्टवेयर
- ▲ संपत्तियों की ई-नीलामी
- ▲ सूचना सुरक्षा जागरूकता
- ▲ जैव उपस्थिति पोर्टल
- ▲ आरोहण (मानव संसाधन के लिए एक नया प्रयोग)

वित्तीय समावेशन

वित्तीय समावेशन, भारतीय बैंकिंग क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण लक्ष्य बना हुआ है। औपचारिक वित्तीय प्रणाली में बैंक सुविधाओं से वंचित आबादी को शामिल करने के प्रयास सरकार की पहलों और तकनीकी नवाचारों के माध्यम से तेज हो गए हैं।

- I. प्रधानमंत्री जन धन योजना (PMJDY):** 2014 में शुरू की गई। PMJDY का उद्देश्य हर घर को बैंकिंग सेवाओं तक पहुंच प्रदान करना है। 2023 तक, इस योजना के तहत 45 करोड़ से अधिक बैंक खाते खोले गए हैं, जिनका कुल बैलेंस ₹ 1.5 लाख करोड़ से अधिक है। यह योजना न केवल वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देती है, बल्कि प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (DBT) के माध्यम से सरकार की विभिन्न योजनाओं के तहत लाभार्थियों को सीधे वित्तीय सहायता प्रदान करती है।
- II. माइक्रोफाइनेंस और स्मॉल फाइनेंस बैंक:** माइक्रोफाइनेंस संस्थान और स्मॉल फाइनेंस बैंक जैसे बंधन बैंक और उज्जीवन स्मॉल फाइनेंस बैंक, कम आय वाले व्यक्तियों को माइक्रो-लोन, बचत खाते और बीमा उत्पाद प्रदान करते हैं। ये बैंक ग्रामीण और कम सेवा प्राप्त आबादी को वित्तीय सेवाएं प्रदान कर रहे हैं, जिससे वित्तीय समावेशन को और अधिक बढ़ावा मिल रहा है।
- III. डिजिटल भुगतान समाधान:** यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI) ने भारत में डिजिटल भुगतान में क्रांति ला दी है। 2023 में, UPI लेनदेन की मात्रा 50 अरब को पार कर गई, जिसका कुल मूल्य ₹ 84 लाख करोड़ से अधिक था। गूगल पे, फोनपे और पेटीएम जैसे प्लेटफार्मों ने डिजिटल भुगतान को लाखों भारतीयों के लिए अधिक सुलभ और सुरक्षित बना दिया है। UPI का तेज और सुरक्षित तरीका विशेष रूप से छोटे व्यापारियों और व्यक्तियों के लिए उपयोगी साबित हुआ है।

तकनीकी नवीकरण

तकनीकी नवाचार भारतीय बैंकिंग परिवृश्य को अधिक कुशल, सुरक्षित और ग्राहक-अनुकूल बना रहे हैं।

- I. ब्लॉकचेन तकनीक:** टेक्नोलॉजी अडवांसमेंट की दिशा में आगे बढ़ते हुए देश के 15 बैंकों ने मिलकर ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी को अपनाने का फैसला किया है यह वहीं टेक्नोलॉजी है जिस पर बिटकॉइन, इथीरियम, डोजिकॉइन जैसी क्रिप्टोकरेंसी आधारित है। दरअसल केनरा बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, कोटक महिंद्रा बैंक, एक्सिस बैंक समेत देश के 15 प्रमुख बैंकों ने मिलकर एक नई कंपनी बनाई है जिसका नाम इंडियन बैंक्स

ब्लॉकचेन इन्फ्रास्ट्रक्चर कंपनी प्राइवेट लिमिटेड (IBBIC) रखा गया है। माना जा रहा है कि इस टेक्नोलॉजी की मदद से एमएसएमई सेक्टर का कायाकल्प होगा साथ ही फ्रॉड की संभावना शून्य हो जाएगी। IBBIC मूल रूप से लेटर ऑफ क्रेडिट (Letters of Credit (LCs), जीएसटी इनवॉयस, ई-वे बिल संबंधी समस्याओं को टेक्नोलॉजी के माध्यम से हल करेगी। इसके कारण कागजी कार्बाई काफी कम हो जाएगी साथ ही ट्रांजैक्शन प्रोसेस में समय भी कम लगेगा। इसके अलावा हर तरह का ट्रांजैक्शन ऑन रिकॉर्ड और सिक्यॉर्ड होगा। ब्लॉकचेन का उपयोग विभिन्न बैंकिंग अनुप्रयोगों में किया जा रहा है, जैसे कि क्रॉस-बॉर्डर भुगतान, ट्रेड फाइनेंस और केवाईसी प्रक्रियाएं।

- II. साइबर सुरक्षा:** डिजिटल लेनदेन में वृद्धि के साथ, साइबर सुरक्षा बैंकों के लिए एक शीर्ष प्राथमिकता बन गई है। बैंक बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण, एन्क्रिप्शन, और रियल-टाइम धोखाधड़ी का पता लगाने वाले सिस्टम जैसे उन्नत सुरक्षा उपायों में निवेश कर रहे हैं ताकि ग्राहक डेटा की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके और साइबर हमलों को रोका जा सके। इस क्षेत्र में अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग बैंकों को सुरक्षा के उच्च मानक प्रदान करने में सहायता है।

- III. 5G तकनीक:** 5G तकनीक का रोलआउट डिजिटल बैंकिंग अनुभवों को और अधिक प्रभावी बनाने की उम्मीद है। यह तकनीक तेज और अधिक विश्वसनीय इंटरनेट कनेक्टिविटी प्रदान करेगी, जिससे संवर्धित वास्तविकता (AR) और वर्चुअल वास्तविकता (VR) बैंकिंग जैसी नवीन सेवाओं के विकास को बढ़ावा मिलेगा। 5G के माध्यम से बैंकिंग सेवाएं अधिक इंटरएक्टिव और ग्राहक-केंद्रित बनेंगी।

ग्राहक-केंद्रित सेवाएं

भारत में आधुनिक बैंकिंग तेजी से ग्राहक-केंद्रित सेवाएं प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। बैंक ग्राहक प्राथमिकताओं को समझने और व्यक्तिगत उत्पादों और सेवाओं की पेशकश करने के लिए डेटा एनालिटिक्स का लाभ उठा रहे हैं।

- I. व्यक्तिगत बैंकिंग:** बैंक व्यक्तिगत वित्तीय उत्पादों और सेवाओं की पेशकश करने के लिए डेटा एनालिटिक्स का उपयोग कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, केनरा बैंक ग्राहक डेटा का उपयोग करके अनुकूलित निवेश सलाह और उत्पाद सिफारिशें (आई-लीड सिस्टम) संस्करण-2.0 द्वारा प्रदान करता है। इससे ग्राहकों को उनके निवेश और वित्तीय प्रबंधन में अधिक स्पष्टता और सुविधा मिलती है।

II. उन्नत ग्राहक समर्थन: बैंक डिजिटल चैनलों के माध्यम से ग्राहक समर्थन में सुधार कर रहे हैं। चैटबॉट्स, वर्चुअल असिस्टेंट, और एआई-संचालित ग्राहक सेवा प्लेटफॉर्म का उपयोग ग्राहकों को त्वरित और कुशल समर्थन प्रदान करने के लिए किया जा रहा है। इससे ग्राहक अनुभव में सुधार हो रहा है और बैंकिंग सेवाओं का उपयोग अधिक सुविधाजनक बन रहा है।

III. ओमनीचैनल बैंकिंग: बैंक कई चैनलों, जैसे ऑनलाइन, मोबाइल और भौतिक शाखाओं में एक सहज बैंकिंग अनुभव प्रदान करने के लिए ओमनीचैनल दृष्टिकोण अपना रहे हैं। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि ग्राहक कभी भी, कहीं भी बैंकिंग सेवाओं तक पहुँच सकते हैं। इस प्रकार, ग्राहक की संतुष्टि और वफादारी में वृद्धि होती है।

स्थिरता और नैतिक बैंकिंग

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में स्थिरता और नैतिक बैंकिंग प्रथाओं का महत्व बढ़ रहा है। बैंक अपने संचालन और निवेश निर्णयों में पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ESG) कारकों पर विचार कर रहे हैं।

I. ग्रीन बैंकिंग: बैंक अपने पर्यावरणीय पदचि को कम करने के लिए ग्रीन बैंकिंग पहलों को बढ़ावा दे रहे हैं। उदाहरण के लिए, यस बैंक ने नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं को वित्तपोषित करने के लिए ग्रीन बॉन्ड लॉन्च किए हैं। यह पहले बैंकों को समाज में सकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव डालने में सक्षम बनाती है।

II. कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR): बैंक शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और ग्रामीण विकास जैसे क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हुए CSR गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल हैं। केनरा बैंक की CSR पहलों में रुडसेटी के माध्यम से कौशल विकास कार्यक्रम और वित्तीय साक्षरता अभियान शामिल हैं। यह बैंकिंग क्षेत्र को सामाजिक रूप से जिम्मेदार बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

III. सतत वित्त: बैंक अपने क्रूण और निवेश निर्णयों में ESG मानदंडों को शामिल कर रहे हैं। केनरा बैंक ने उन परियोजनाओं को वित्तपोषित करने के लिए प्रतिबद्ध किया है जो सतत विकास को बढ़ावा देती हैं और कार्बन उत्सर्जन को कम करती हैं। इससे बैंकिंग क्षेत्र में सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण बदलाव हो रहा है।

नियामक सुधार

नियामक सुधार भारत में बैंकिंग क्षेत्र को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) और अन्य

नियामक निकायों ने बैंकिंग प्रणाली की स्थिरता, पारदर्शिता, और दक्षता बढ़ाने के लिए कई उपाय पेश किए हैं।

I. बेसल III मानदंड: भारतीय बैंकों को बेसल III मानदंडों का पालन करना आवश्यक है, जो उच्च पूंजी आवश्यकताओं और बेहतर जोखिम प्रबंधन प्रथाओं को अनिवार्य करते हैं। इससे बैंकिंग क्षेत्र की लचीलापन और स्थिरता में वृद्धि हुई है। बेसल III मानदंडों का अनुपालन करने से बैंकों की वित्तीय स्थिति में सुधार हुआ है और उन्हें वैश्विक स्तर पर अधिक प्रतिस्पर्धी बनाया है।

II. दिवाला और दिवालियापन संहिता (IBC): IBC ने गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों (NPAs) को हल करने और खाराब क्रोणों की वसूली में सुधार की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित किया है। इससे बैंकों को अपनी बैलेंस शीट को साफ करने और परिसंपत्ति गुणवत्ता में सुधार करने में मदद मिली है। इसके अलावा, IBC ने उधारकर्ताओं को समयबद्ध समाधान प्रदान करने के लिए एक संरचित तंत्र की स्थापना की है।

III. डिजिटल केवाईसी: आरबीआई ने बैंकों को डिजिटल केवाईसी प्रक्रियाओं का उपयोग करने की अनुमति दी है, जिससे ग्राहकों के लिए खाते खोलना और बैंकिंग सेवाओं तक पहुँचना आसान हो गया है। इससे भौतिक दस्तावेजों पर निर्भरता कम हो गई है और ग्राहक ऑनबोर्डिंग की दक्षता में सुधार हुआ है। डिजिटल केवाईसी का उपयोग करके बैंकों ने कागजी कार्रवाई कम की है और ग्राहक अनुभव में सुधार किया है।

निष्कर्ष

भारत में आधुनिक बैंकिंग के नए आयाम, इस क्षेत्र को एक अधिक गतिशील, समावेशी और ग्राहक-केंद्रित उद्योग में बदल रहे हैं। डिजिटल परिवर्तन, वित्तीय समावेशन, तकनीकी नवाचार, ग्राहक-केंद्रित सेवाएं, स्थिरता और नियामक सुधार इस बदलाव के प्रमुख प्रेरक कारक हैं। बैंकिंग क्षेत्र में इन परिवर्तनों के कारण न केवल ग्राहकों के अनुभव में सुधार हुआ है, बल्कि भारत की अर्थव्यवस्था को भी स्थिरता और विकास की दिशा में बढ़ावा मिला है।

आने वाले वर्षों में, भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में और अधिक नवीनीकरण और बदलावों की उमीद की जा सकती है, जो इसे और अधिक कुशल, समावेशी, और टिकाऊ बनाएंगे। इस विकास प्रक्रिया में बैंकिंग क्षेत्र को अपने ग्राहकों, समाज और पर्यावरण के लिए एक स्थायी और जिम्मेदार दृष्टिकोण को अपनाना होगा।



लघु कथा

समानुभूति

जैसे विचारों की कोई भाषा नहीं होती वैसे आशाओं की कोई सीमा नहीं होती। हम हमेशा ही आशाएँ करते हैं परंतु दूसरों की आशाओं की कल्पना नहीं करते। यदि विभिन्न आशाओं में एक समानता खोजी जाए तो वह होगी समानुभूति की आशा।

किसी के कष्ट को खुद महसूस करना समानुभूति है, किसी के त्याग की सराहना करना समानुभूति है, किसी के आँखों के पीछे छुपे कारण को समझना समानुभूति है। उसी प्रकार किसी के मुस्कुराहट के पीछे उसके द्वारा किए गए अनेक भले कार्य की अनुभूति करना भी समानुभूति है।

मैंने जीवन में ऐसे कुछ खास क्षणों को सहेज कर अपने हृदय में रखा है, जिन्हें याद करते ही मन आनंदित हो उठता है। बैंक में कार्य करते हुए हम ऐसे कई ग्राहकों तथा सहकर्मियों के सम्पर्क में आते हैं जो हमें एक दिन या कुछ क्षण में ही बड़ी शिक्षा दे जाते हैं या हमारे प्रेरणास्रोत बन जाते हैं। ऐसा ही एक किस्सा मुझे अक्सर खुशी तथा दुख दोनों की अनुभूति कराता है।

बात ऐसे ही एक व्यस्तता से भरे दिन की है जब हम टेबल पर अनेक कार्य और सामने खड़े व्याकुल ग्राहकों से धिरे हुए थे। भीड़ के छंटते ही मुझसे थोड़े दूर दूसरे काउंटर पर एक वृद्ध और कमज़ोरसा हाथ सामने आया। हाथ में पासबुक लिए एक बहुत ही बुर्जुगसी महिला ने हाथ में लाठी लिए मेरे सहकर्मी से पूछा कि क्या मेरे वृद्धावस्था पेंशन की राशि आई है?

खाता देख कर मेरे सहकर्मी ने उनको राशि न आने की सूचना दी। यह सुनते ही वह वृद्ध मायूस होकर यह कहने लगी कि घर जाने के लिए भी पैसे नहीं है और न मैं ठीक से चलने में समर्थ हूँ। यह सुन मेरे सहकर्मी ने उन्हें कुछ देर बैठने के लिए आग्रह किया ताकि उनका पासबुक छाप सकें।



रीमा बैनर्जी

अधिकारी

एस.एम.ई. झारसुगुडा

मैं यह सब थोड़े दूर बैठे देख रही थी और जब मैं उस काउंटर तक पहुँची तो देखा कि पासबुक छापने के बाद मेरे सहकर्मी ने अपने जेब से पैसे निकाले और उसे पासबुक में रखकर उस वृद्धा को पासबुक लौटाने लगे। वृद्धा ने जब पासबुक को खोल कर देखा तो उन्हें एक रु.100/- का नोट मिला, यह देखते ही वह आश्चर्यचकित होकर पूछने आयी कि यह पैसे किसने रखें? मेरे सहकर्मी ने भी मुस्कुराते हुए निःस्वार्थ भाव से कहा कि यह आपके पासबुक में दबे हुए थे। यह सुनकर वृद्धा की आँखों में सुकून की रौशनी आ गई।

यह देख मेरा हृदय भी संवेदना और स्नेह से भर गया और इस करुणामयी और निश्छल कार्य के लिए मैंने अपने सहकर्मी की सराहना की। प्रेरित और भावनात्मक होकर मुझे यह समझ आया कि इस दुनिया में समानुभूति की अनुभूति ही अनुभूति की पराकाष्ठा है। किसी के कष्ट को समझकर उसे कम करने का प्रयास ही अत्यन्त प्रशंसनीय है तथा मन में समानुभूति का भाव सर्वोत्तम गुण का परिचय है।

“सर्वभूतेषु येनिकंत भावो ज्ञानसमान्वितः।”

अर्थात्:

जो मनुष्य सभी जीवों में समान भाव से देखता है और ज्ञान के साथ समानुभूति रखता है, वही सच्चा ज्ञानी है।

– श्रीमद्भगवद्गीता



लघु आलेख

सुंदरवन

दुनिया हमने धूमी पूरी, अपनी ही दुनिया, अपना भारत ही न धूम पाये। बंगाल टाइगर, सुंदरी वृक्ष, मधुमक्खी, मछली, नाव, पर्यावरण, डेल्टा, गंगा, डॉलफिन, चिड़िया, बन, मगरमच्छ आदि अगर देखना हो या अनुभव करना हो तो आप सुंदरवन अवश्य जाएं। सुंदरवन पश्चिम बंगाल के दक्षिण 24 परगना जिले में स्थित एक विशाल मैंग्रोव वन है, जो अपनी अनोखी प्राकृतिक सुंदरता और जैव विविधता के लिए प्रसिद्ध है। यह वन भारत का सबसे बड़ा मैंग्रोव वन है और दुनिया के सबसे बड़े मैंग्रोव वनों में से एक है।

विश्व की सबसे लम्बी नदियों में से एक, सबसे पवित्र नदियों में से एक गंगा, ब्रह्मपुत्र और मेघना नदियों के संगम से बने डेल्टा को सुंदरवन का डेल्टा कहते हैं। यहां मुख्य रूप से खारी जलोढ़ मिट्टी है जो मिट्टी, गाद, महीन रेत और मोटे रेट के कण से मिलकर बनी होती है। यह वन गंगा नदी के डेल्टा में स्थित है, जहां गंगा नदी बंगाल की खाड़ी में मिलती है। सुंदरवन की जलवायु गर्म और आर्द्ध है, जो मैंग्रोव वनों के लिए उपयुक्त है।

102 से 115 द्वीप से सुसज्जित है अपना सुंदरवन। अगर सटीक विश्लेषण किया जाय तो संभवतः यह मोतियों की माला है हमारे भारत के लिए। 100 से ज्यादा रॉयल बंगाल टाइगर, चालाक टाइगर यहां पाया जाता है जो किसी एक क्षेत्र में बाघों की सबसे बड़ी आबादी में से एक है। सुंदरवन में लगभग 200 प्रजातियों के पौधे और लगभग 400 प्रजातियों के जानवर पाए जाते हैं। यह वन रॉयल बंगाल टाइगर, जगुआर, हाथी और कई अन्य विलुप्तप्राय प्रजातियों का घर है। सुंदरवन के मैंग्रोव वन भी विभिन्न प्रकार के पक्षियों, मछलियों, और अन्य जलीय जीवों के लिए एक महत्वपूर्ण आवास हैं।

सटीक तो नहीं परंतु हाल के अध्ययनों से पता चला है कि वर्तमान में यहां बाघों की संख्या 100 से 105 के बीच है। सिर्फ चालाक कहना ही सही नहीं होगा इन बाघों के बारे में, ये एक ही समय में सुंदर और भयंकर लगते हैं। ओलम्पिक तैराक से भी ज्यादा तेज तैरने में माहीर



गौरव कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय कोलकाता



होते हैं। बाघों के मामले में ये एक मात्र मैंग्रोव वन है जहां बाघ पाये जाते हैं।

सुंदरवन दो देशों की सबसे बड़ी नदी डेल्टा है। भारत और बंगलादेश में फैले बंगाल की खाड़ी के मुहाने पर स्थित कई द्वीपों के संग्रह को सुंदरवन कहते हैं। इसकी कई विशिष्टताएं हैं जिसमें से तो एक बाघ है, जिसके बारे में जितना लिखा जाए उतना कम है। इसके अलावा ये जो जंगल है, वह वास्तव में द्वीपों का है। सभी अलग-अलग आकार के, अलग प्रकार के, अंतहीन चैनल, नुक़ड़, गड्ढे, खूबसूरत से दिखने वाले पेढ़, झाड़ियां, पौधे, जीवों की भूल-भूलैया, गाद की मिट्टी, दस हजार वर्ग किलोमीटर में फैला जंगल, एस्टुअरीन मगरमच्छ, गंगा डॉलफिन से भरे पड़े हैं।

बाघ के बाद सबसे आकर्षक और रहस्यमयी चीज अगर सुंदरवन में है तो वह है मैंग्रोव वृक्ष खारे जल और मीठे जल के पास अपनी



रहस्यमयी जड़ों को दलदली मिट्टी पर लगाकर अगर कोई वृक्ष रह सकता है तो वह है सुंदरी। आँकसीजन का समुद्र प्रदान करने वाली और करोड़ों की जन जाति को सुरक्षा प्रदान करने वाली है सुंदरी वृक्ष। इसके जड़ों में जो छिद्र होते हैं वह खारे पानी को रोककर सांस के लिए बने होते हैं। अनुमान ये कि लगभग 70 प्रजातियों की यह सरंचना में अब तक बहुत ज्यादा बदलाव नहीं आया है। यह बदलाव नहीं होने का गुण बहुत से मछली के रहने का कारण है जैसे झींगा, केकड़ा आदि।

अद्वितीय संसाधनों से भरपूर है अपना सुंदरवन। आप कहीं भी रहें पर सिर्फ तीन से चार दिन का प्लान बनाकर आप यहां आ सकते हैं।

हावड़ा रेलवे स्टेशन या एयरपोर्ट से अस्सी किलोमीटर की दूरी पर स्थित है सुंदरवन का इलाका। बस या कार से आप यहां दो से तीन घंटे में पहुंच सकते हैं। फिर वहां शुरू होता है अंतहीन नाव का सफर वैसे पांच हजार रुपए में अपना पर्सनल नाव लेकर आप पूरे क्षेत्र में धूम सकते हैं। अगर आप मांसाहारी हैं तो ताजी मछलियों का भरपूर स्वाद आपको यहीं मिलेगा। सिर्फ सरसों के तेल में ताजी मछली में नमक और हल्दी लगाकर आप इसका आनंद उठा सकते हैं। केकड़ा भी यहां उच्चस्तरीय मिलता है, उसका स्वाद भी कुछ अलग ही है। भेटकी मछली भी यहां की सबसे बेहतरीन बंगाली व्यंजन में से एक है। प्रॉन मलाई वही जो नारियल के दूध से बनता है और चावल के साथ परोसा जाता है, ये यहां का प्रसिद्ध व्यंजन है। यहां आपने हिलसा नहीं खाया तो मतलब आपने कुछ नहीं खाया। यह कम से कम पांच तरीके से बनता है। इसके अलावा नो..... बेरी (दालों के पेस्ट से बना), यहां का प्रमुख खाद्य है। आप अपना खाना रसगुल्ले से खत्म कर सकते हैं, साथ ही मिठी दोई से।

इन सबके अलावे यहां खास है शहद – नाम सुनकर ही मुंह में मिठास आ जाती है, पर यह सुंदरवन वासियों के लिए इतना आसान नहीं है। दुनियाभर के शहद संग्रह करने वाले लोग सिर्फ मधुमक्खी से ही डरते हैं, परंतु यहां मधुमक्खी के अलावा बाघ के हमले को भी झेलना है या यूं कहें कि जान जोखिम में डालकर यह शहद एकत्र करना पड़ता है।

सुंदरवन के मैंग्रोव वन तटीय क्षेत्रों को तूफानों और बाढ़ से बचाने में मदद करते हैं। ये वन भी जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, क्योंकि वे कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं और आँकसीजन का उत्पादन करते हैं। सुंदरवन के संरक्षण के लिए भारत और बांग्लादेश सरकारें विभिन्न प्रयास कर रही हैं। सुंदरवन टाइगर रिजर्व और सुंदरवन नेशनल पार्क जैसे संरक्षित क्षेत्रों की स्थापना की गई है, जो बन्यजीवों और उनके आवासों की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं। सुंदरवन एक अद्वितीय और महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है, जो भारत और बांग्लादेश की प्राकृतिक धरोहर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।



“अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।”

अर्थात्:

जो मनुष्य सभी जीवों के प्रति

द्वेष नहीं रखता,

जो मैत्री और करुणा से भरा हुआ है,

वही सच्चा प्रकृति प्रेमी है।

— श्रीमद्भगवद्गीता



लघु कथा

नौकरी का साहस

आज अभय को बैंक में नौकरी करते हुए पूरे 10 साल हो गए हैं। अभय की बैंक ईमेल आईडी पर एक बधाई ईमेल बैंक की ओर से आया, ईमेल को पढ़ते ही अभय उस दिन को याद करता है जिस दिन उसका बैंक परीक्षा का परिणाम आया था और उसे बेरोजगारी के कालखंड और समाज की घूरती नजरों से आजादी मिल गई थी। तब अभय ऐसा न था जो वह आज है। 10 साल पहले का अभय ऊर्जावान और अनुशासित था, वह हर सरकारी परीक्षा की तैयारी करता था। तब लक्ष्य केवल एक था नौकरी पाना कभी यह नहीं सोचा कि यह नौकरी उसके लायक है या नहीं या जिस नौकरी की परीक्षा वह बड़े जोर शोर से तैयारी कर रहा है उस नौकरी की क्या मांगे हैं, कितना काम करना होगा, क्या चुनौतियां होंगी, इन सब बातों से अनभिज्ञ वह केवल परीक्षा की तैयारी में जुटा रहता।

आज अभय 10 साल से बैंक में अधिकारी है प्रबंधक बनने के लिए वह 8 साल से योग्य है, किंतु वह पदोन्नति की परीक्षा में केवल 2 बार ही बैठा है, वह भी किसी तैयारी के बिना क्योंकि नौकरी के शुरुआती वर्षों में ही अभय ने यह देख लिया था कि प्रबंधक बनने पर कई कार्यों का भार, शाखा की पूरी जिम्मेदारी प्रबंधक पर आ जाती है। बड़े अधिकारियों की कड़वी बातें, ग्राहकों का गुस्सा, हर तरह के बैंक सेवाओं को प्रदान करने की जिम्मेदारी, शाखा के व्यवसाय को आगे बढ़ाना, क्रूण की वसूली करना, अन्य सभी कार्य के लिए सीधे तौर पर शाखा प्रबंधक ही जिम्मेदार होता है। इन सभी बातों के मैट्टेनजर उसे यह यकीन हो गया था कि अगर वह प्रबंधक बन गया तो जीवन भवर में फंसी नाव की तरह हो जाएगा, सारा समय, सारी ऊर्जा केवल बैंक के कार्यों को करने में ही निकल जाएगा और उसके बाद भी कार्य उतने ना हो पाएंगे जितने आवश्यक हैं। इन्हीं बातों के चलते अभय पदोन्नति के अवसर को टाल देता है और यह बात सोचने वाला केवल अभय इकलौता ना था ज्यादातर बैंक शाखों के बैंक अधिकारी यहीं सोच रखते थे कि अगर पदोन्नति हो गई तो स्थानांतरण के साथ यह सारी जिम्मेदारियां भी उन पर आ जाएंगी। हालांकि बैंक में पदोन्नति में दिलचस्पी रखने वालों की भी संख्या कम न थी हर वर्ष पदोन्नति की



अमित शर्मा
प्रबंधक (विपणन)
खुदरा आस्ति केन्द्र, गच्छबौली

परीक्षा में कई अधिकारी, प्रबंधक और उच्च प्रबंधन पदोन्नति के लिए आवेदन करते, परीक्षा देते और उत्तीर्ण होते थे।

कभी-कभी अभय अपने साथ बैंक में आए सहकर्मियों को देखता, जो आज बैंक के विभिन्न विभागों में उच्च पदों पर आसीन हैं। वह सब भी अभय की तरह बैंक परीक्षा उत्तीर्ण कर बैंक में आए थे पर वह शाखा की जिम्मेदारियों और चुनौतियों से डरे नहीं। उन्होंने जिम्मेदारियों को संभाला और चुनौतियों का सामना किया एवं बैंक की गरिमा एवं प्रतिष्ठा के लिए हमेशा प्रयासरत रहें। यह सोचकर अभय को यह लगने लगा कि वह अपने ही बनाएं मानसिक आचरणों के जाल में फंस गया है, उसमें परिस्थितियों का सामना करने का साहस नहीं रहा और मन ही मन उसे यह लगने लगा कि उसकी नैतिकता का पतन हो गया है। यह सोचते हुए अभय अपनी कुर्सी से प्रबंधक महोदय के कक्ष की तरफ देखता है और सोचता है प्रबंधक उससे उम्र में 2 से 5 वर्ष छोटे होंगे किंतु वह कितनी अच्छी तरह से शाखा को संभाल रहे हैं, ग्राहकों को संभाल रहे हैं और बैंक की प्रगति में सहयोग कर रहे हैं। ऐसा नहीं है कि उनके पास चुनौतियां नहीं आती किंतु वह डरने की जगह उनका डटकर सामना करते हैं। प्रबंधक को देखकर अभय भी मन बनाता है कि इस साल आने वाले पदोन्नति परीक्षा में वह भी पूरी तैयारी से बैठेगा और उत्तीर्ण होगा उसकी आंखों में एक चमक सी आ गई मन में फिर वही उत्साह और उमंग उत्पन्न हुए जो आज से 10 वर्ष पूर्व बैंक भरती की परीक्षा के समय हुआ करते थे। अभय अब यह समझ चुका है कि जीवन सदैव आगे बढ़ते रहने का नाम है, बहता पानी निर्मल होता है और ठहरा हुआ पानी अक्सर दूषित हो जाता है।



कहानी

जीवट

बैंक में मेरी पहली पोस्टिंग एक ग्रामीण शाखा में थी। शाखा से घर की दूरी ज्यादा नहीं थी पर रास्ता कुछ ऐसा था कि घर से आना-जाना संभव नहीं था। ग्रामीण क्षेत्र में रहना भी आसान नहीं था पर इलाका पिछड़ा हुआ नहीं था इसलिए सुविधाओं की कमी होने के बावजूद मैंने वहाँ रहने का फैसला किया। शाखा जॉइन करने के कुछ दिन बाद ही मुझे एहसास हो गया था कि शहरी और ग्रामीण शाखाओं की कार्यशैली में कितना अंतर होता है। मेरे ही बैच के दूसरे लोग जो शहरी शाखाओं में कार्यरत थे वो बहुत-सी ऐसी समस्याओं के बारे में बताते थे जो हमसे काफी अलग थी। हममें से जिन कर्मचारियों ने ग्रामीण शाखाओं में काम किया है वो बता सकते हैं कि वहाँ के लोग आज भी बैंक वालों को आदर करते हैं। कोई खेत से अमरुद ले आता है तो कोई गन्ने। एक माताजी तो वृद्ध पेंशन आने की खुशी में शाखा में सबके किए धी का हलवा बना लाई थी। कुल मिलाकर घर से दूर होने का मन में ख्याल होने के बाद भी वहाँ के सामाजिक परिवेश ने मुझे बहुत कुछ सिखाया।

शाखा में सेवा काल की अवधि खत्म करके अगली पोस्टिंग मुझे अपने ही शहर में एक शहरी शाखा में मिली। घर के पास पहुँच जाने की खुशी में मैंने अगले ही दिन शाखा जॉइन कर ली। पहले कुछ दिनों में मैं अपनी पुरानी शाखा की भीड़-भाड़ भूल गई। आवासीय क्षेत्र में होने की वजह से और ज्यादातर ग्राहक सेनानिवृत होने की वजह से इस शाखा में ऋण की तुलना में एफ.डी. और अन्य जमा योजनाएँ ज्यादा थी। ग्रामीण शाखा में तो के.सी.सी. और बुध-बाजार लगने के कारण कैश काउन्टर पर आई भीड़ में ही दिन निकल जाता था, पर यहाँ या तो किसी को टी.डी.एस. की कटौती से समस्या थी तो किसी को बयाज दर से। शुरू के कुछ दिन में ही मुझे समझ आ गया था कि यहाँ के 80% ग्राहक, जो 70 वर्ष से ऊपर थे, उन्हें काम से ज्यादा कोई बतियाने वाला चाहिए था।

एक दिन काम के दौरान मुझे किसी के तेज़-तेज़ बोलने की आवाज आई। भीड़ से उचककर देखा तो एक बुजुर्ग व्यक्ति हमारे अधिकारी से



अल्पना शर्मा

ग्राहक सेवा सहयोगी
गंगानगर मेरठ शाखा

ब्याज की दर को लेकर उलझ रहे थे। बहुत कोशिश के बाद भी अधिकारी उन्हें समझा नहीं पा रहे थे। खैर, बात प्रबंधक के कमरे तक पहुँच गई, पर उस दिन बात सुलझाई नहीं जा सकी और वो बुजुर्ग एफ.डी. कराए बिना ही वापस चले गए। अगले दिन वो फिर आए और इस बार सीधे हमारी शाखा के अटेंडर के पास पहुँच गए। ना कोई चिल्हाने की आवाज़ आई, ना समझाने की और एफ.डी. का भरा हुआ फॉर्म मेरे पास आ गया। मुझे बहुत हैरानी हुई। फॉर्म भी इतना सही से भरा हुआ था कि लगा जैसे पहली बार पूरा फॉर्म भरा हुआ देखा हो। दोपहर जब हम सब खाना खाने बैठे तो मैंने अटेंडर से पूछा कि वो कौन थे और उसने उनको संभाल कैसे लिया ? उसने बताया कि उनका नाम आनंदपाल सिंह है और वो हमारी शाखा के सबसे उप्रदाज्ज ग्राहक हैं, 95 वर्ष के।

95 साल ? मैंने उससे चौंककर पूछा।

हाँ फिट रहते हैं और अपने सारे काम खुद करते हैं। यहाँ तक कि गाड़ी भी खुद ही चलाते हैं।

मैंने मन ही मन सुबह से अपनी गर्दन और पैर में होने वाले दर्द को हँस के याद किया।

वो तो ठीक है, पर तुम उनको कैसे समझा पाए ?

मैडम, उनको ज्यादा कुछ थोड़े ही चाहिए। बस कोई उनकी बात सुन ले और अंकल जी करके बात कर ले। अब आप देखो, यहाँ के पढ़े-लिखे स्टूडेंट्स भी वैसे फॉर्म नहीं भर सकते, जैसे उन्होंने भर के दिया है।



यह थे आनंदपाल जी। झुकी हुई कमर और आवाज़ में सख्ती। वो कभी भी पारंपरिक बैंकिंग के लिए शाखा में नहीं आते थे। ना मैंने उन्हें कभी पैसे निकालते देखा और ना पैसे जमा करते। शायद ए.टी.एम. का इस्तेमाल करते होंगे, जो उनकी उम्र के लोग करने से घबराते हैं। कभी अगर मेरे काउन्टर पर आए तो मैं झट से उनका काम करके दे देती थी और अटेन्डर के कहे अनुसार उनकी पूरी बात सुन लेने के बाद ही अपनी बात कहती थी। धीरे-धीरे अब तो वो काम के लिए मेरे पास ही आते और मेरे खाली हो जाने तक शांति से इंतज़ार करते रहते।

एक शाम 5 बजे के बाद एक अधेड़ उम्र का कोई ग्राहक किसी काम के लिए आया। समय खत्म हो जाने के बाद भी उसे अंदर बुला कर बात पूछी, पर वो शायद झगड़ने ही आया था। बात छोटी सी थी, शायद उसको कोई पासबुक एंट्री करानी थी और बात खत्म करने के लिए मैंने एंट्री करने के लिए पासबुक ले ली। खोल कर नाम देखा-आनंद पाल सिंह। बिना कुछ कहे मैंने एंट्री करके पासबुक उनको वापस थमा दी और वो बड़बड़ाता हुआ चला गया। बाद में पता चला कि वो आनंदपाल जी के बड़े बेटे थे। कुछ दिन बाद आनंदपाल जी किसी काम से शाखा में आए तो अटेन्डर ने उनको सारी बात बताई। शाखा में उस समय ज्यादा लोग नहीं थे।

आनंदपाल जी काउन्टर के पास आकर हाथ जोड़कर बोले- अपने बेटे के व्यवहार के लिए मैं शर्मिंदा हूँ। उसको ऐसे नहीं करना चाहिए था। कल शाम मुझसे लड़-झगड़ कर पासबुक ले गया था। मुझे पता नहीं था कि यहाँ आ रहा है। अब तो वापस चला गया। मैं आप सबसे उसके व्यवहार के लिए माफी माँगता हूँ।

इससे पहले कि हम उनको रोकते, वो सिर झुकाकर चले गए। हम सब सन्न थे।

अभी पिछले महीने मेरे पिता ने एक दिन अचानक सीने में दर्द की शिकायत बताई। आनन-फानन में हम उन्हें पास के अस्पताल ले गए। पता चला, कुछ दिन पहले दिल का दौरा पड़ा था और उनको पता नहीं चला। घर से अस्पताल के लिए भाग-दौड़ के लिए समय बँट गए। किसी ने रसोई संभाल ली तो किसी ने आई. सी. यू. के बाहर की कुर्सी। ऐसे ही एक दिन जब मैं बैग लिए कुर्सी पर सिर टिकाए बैठी थी तो सामने से आनंदपाल जी आते दिखाई दिए। साथ में उन्हीं की उम्र की एक महिला थीं, जो शायद उनकी पत्नी थीं। मैंने उठकर उनको नमस्ते की तो उन्होंने मुस्कुराकर जवाब दिया और आगे बढ़ गए, जैसे मुझे पहचाना ही ना हो। मैं उस समय ज्यादा बात करने की मनःस्थिति में भी नहीं थी इसीलिए फिर शांति से बैठ गई।

थोड़ी देर बाद आहट से आँखें खोली तो आनंदपाल जी बराबर में आकर बैठ गए थे।

यहाँ कैसे ? उन्होंने पूछा।

पापा ऐड्मिट हैं। सर हार्ट अटैक आया था। स्टंट पड़ा है।

अब कैसे हैं ?

अभी तो बेहतर हैं। अभी मैं याद कर रही थी कि दो दिन पहले हम कितने परेशान थे उन्हें लेकर उम्र ज्यादा हैं ना सर, 76 साल डॉक्टर ने कहा था कि 75 साल की उम्र होने के बाद स्टंट डालना खतरे की बात है। बस हमने ऊपर वाले को याद किया और स्टंट डालने को हाँ कर दी। ऑपरेशन तो सही से हो गया, पर संभालने में समय लगेगा। कहते-कहते मेरी आँखें भर आईं।

मुझे भी हार्ट अटैक पड़ चुका है। आज आपके सामने बैठा हूँ।

कब ? मैंने हैरानी से पूछा

पड़ा था कोई 10-12 साल पहले

मैंने मन ही मन अटैक के समय की उम्र का हिसाब लगाया। शायद 80 की उम्र में स्टंट पड़ा होगा उन्हें और वो तो एक सामान्य ज़िंदगी बिता रहे हैं।

जितनी मेरी उम्र है, आपके पापा तो मेरे बेटे से कुछ साल ही बड़े हैं। कोई बात नहीं, सब ठीक होगा उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा।

आपने इतनी रिकवरी कैसे की सर

बस डाइट और एक्सर्साइज़ घर में ही जिम बना रखा है। रोज 10 से 20 किलो का वज़न उठा लेता हूँ। एक घंटा सुबह, एक घंटा शाम। बस ये तो पत्नी को कुछ समय से सर्वाइकल की दिक्कत हो रही थी

और मेरे कहे से वो चलती नहीं है इसीलिए फ़िज़ियोथेरेपी के लिए लाया था।

उन्होंने मुझे ओमेगा-3, विटामिन, फाइबर के बहुत से स्रोतों के बारे में बताया, जो हम रोज के खाने में ले सकते हैं। उनकी जानकारी और ज्ञान को देखकर मुझे काफी हैरानी हुई। 95 वर्ष की उम्र में मेरे सामने वो बिना चश्मे के बैठे थे और मेरे तो शायद म्यारहवीं में ही चश्मे लग गए थे। मुझे रिकवरी की और बहुत-सी बातें समझाकर वो थोड़ी देर में चले गए।

कुछ दिन बाद पापा डिस्चार्ज होकर घर वापस आ गए तो मैंने आॅफिस जॉइन करते ही अटेन्डर से उनके बारे में पूछा। पता चला कि उनके दो बेटे हैं— एक इंजीनियर, एक डॉक्टर और दोनों ही बाहर रहते हैं। आनंदपाल जी यहाँ पत्नी के साथ अकेले ही रहते हैं और बेटों से ज्यादा कोई संपर्क भी नहीं है।

पर अकेले तो बहुत दिक्षत होती होगी ?

ये तो आजकल सबका ही हाल है मैडम। अपने माता-पिता के साथ तो कोई रहता ही नहीं है। शायद पिछले 10-20 सालों में उन्होंने अपने बेटों की शक्ति तक नहीं देखी। बस वो एक बेटा यहाँ आया तो पासबुक अपडेट कराने। पता है वो ऑस्ट्रेलिया से आया था। सोचता होगा, आनंदपाल जी खुद को संभाल लें, वही काफी है, पेशन का इतना पैसा कैसे संभालेंगे। जब बात नहीं बनी तो अगले ही दिन वापस चला गया। मैंने एक दिन आनंदपाल जी से पूछा तो हँसकर बोले थे, दुनिया में कोई किसी का होता है क्या ? सब अकेले ही होते हैं।

कुछ समय बाद ही दिवाली थी। मुझे उसी दिन से आनंदपाल जी से कुछ लगाव-सा हो गया था। मैंने अटेन्डर से उनका पता लिया और एक मिठाई का डिब्बा लेकर उनके घर पहुँच गई। दरवाजा खटखटाया तो मिसेज़ आनंदपाल ने दरवाज़ा खोला। मैंने अपना परिचय दिया तो उन्होंने बताया कि पिता की बीमारी के समय आनंदपाल जी ने मेरा जिक्र उनसे किया था। उन्होंने मुझे अंदर बिठाया और आनंदपाल जी को बुलाने चली गर्या। मैंने डिब्बा टेबल पर रख दिया और बैठकर उनका इंतज़ार करने लगी। मैंने महसूस किया कि घर में एक अलग ही शांति और सुकून था।

थोड़ी देर बाद जब आनंदपाल जी आए तो मैंने उठकर उन्हें मिठाई का डिब्बा देते हुए कहा,

दिवाली की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

आप यहाँ ?

बस आपसे मिलने चली आई।

आपके पिताजी कैसे हैं ?

अच्छे हैं। आपके कहे अनुसार उन्हें भी सुबह की सैर पर लगा दिया है मैंने।

इतने में उनकी पत्नी चाय ले आई और हमने बहुत-सी बातें कीं।

घर आकर सोचा तो लगा ही नहीं जैसे किसी अनजान से मिल कर आई हैं। लगा जैसे, हम सब अपने आसपास ऐसे ही परिवारों और लोगों से धिरे हैं। आनंदपाल जी से मिलने के बाद मैंने शाखा में ही ऐसे बहुत से लोगों को देखा, जो ऐसे ही जी रहे हैं। आप भी बात करके देखिए, आपकी शाखा में भी होंगे। कोई परिवार के होते हुए वृद्ध-आश्रम में रह रहा है तो कोई आत्म-सम्मान की रक्षा के लिए अकेला। कोई घर-घर जाकर बच्चों को पढ़ा रहा है तो किसी ने अपना सब माल-असबाब बच्चों के हवाले कर दिया है, जिससे उनकी दो बक्त की रोटी सुरक्षित रह सके। आजकल की भाग-दौड़ वाली ज़िंदगी में माता-पिता कहीं पीछे छूट जाते हैं। हम मन को समझा लेते हैं कि समय की मांग ही कुछ ऐसी है। हर कोई घर से दूर है, कोई काम के सिलसिले में तो कोई लड़-झगड़ कर किसी को घर के पास पोस्टिंग नहीं मिलती तो कोई छोटे शहर में रहना नहीं चाहता। फिर बेटों और बेटियों का अंतर कोई कहता है, अजी ! बेटियाँ थीं, चली गई अपने घर, बेटा होता तो सेवा करता। अब आनंदपाल जी की तो बेटियाँ नहीं थीं। हम तो दो ही बहने हैं और बचपन से भाई ना होने पर अफसोस भी हमें भरपूर रहा। समाज का ढाँचा ही कुछ ऐसा है, पर बहुत सी जगह हम दोनों ने बेटों से बढ़कर माँ-पिता को संभाला है और कितने ही भरे-पूरे परिवार इसमें पीछे रह जाते हैं। इस सब में नुकसान किसका होता है ? वो माँ-बाप, जिन्होंने हमें इस लायक बनाया कि हम उन्हें देख सकें, सिर्फ उनका।

पर आनंदपाल जी जैसे परिवार क्या करें ? बच्चों से उपेक्षित होने के बाद खुद जीना छोड़ दें ? ऐसे में सामने आता है ‘जीवट’। समस्याओं से ज़द्दने का ‘जीवट’, ज़िंदगी को पूरी ऊर्जा के साथ जीने का ‘जीवट’। आनंदपाल जी को क्या जरूरत थी, जो जिम बनाकर खुद को फिट रखते ? पर वो ऊर्जा और हिम्मत की मिसाल हैं। वो खुद भी जीना जानते हैं और दूसरों को ये कला सिखा भी सकते हैं। यही ‘जीवट’ आज की युवा पीढ़ी में मुश्किल से मिलता है। शाखा में काम करते समय ऐसे सेनानिवृत लोग आपको भी बहुत मिल जाएंगे, जो ऐसे ही कहीं ना कहीं से दूरे हैं और अगर आप खुद घर से दूर हैं तो आप उनमें अपना खुद का एक परिवार खोज सकते हैं। पर जब भी समय मिले, अपने माँ-पिता से मिल के आयें, उनकी बढ़ती उम्र के साथ उनकी परेशानियों को समझें। उनको आपसे ज्यादा की अपेक्षा नहीं है, बस महीने-दो महीने में एक बार मिल आइये, कभी उनके साथ ही तीज-त्योहार मना लीजिए और नहीं तो एक फोन ही कर लीजिए। इससे उन्हें खुशी मिलेगी और आपको सुकून।





कविता

संघर्ष

आरोहण से अवरोहण तक
हर पड़ाव के रंग है,
जीवन बहता नीर है,
और संघर्ष एक तरंग है।
इस तरंग के स्पंदन का,
सुख और दुख के क्रंदन का,
भावनाओं के विस्पन्दन का,
कुछ अश्रु के विष्यंदन का,
कुछ सार के विस्तार का,
कुछ विस्तार के परिहार का,
जीवन के कई अलंकार है,
पर पराक्रम इनका कर्णधार है।
वह शूरवीर है
जो इस रणक्षेत्र में धीर है,
विपदा से पार पाने का
यह एकमात्र झीर है
कुछ शत्रु ज्ञात हैं,
पर कुछ तो अज्ञात हैं।
इस युद्ध के खलनायक
हर जगह व्याप हैं।
शारीरिक वेदना और मानसिक घात हैं,
यह नवकिरण के उगने से पहले की रात है।
संध्या से जो संघर्ष खत्म हुआ
सूर्योदय से नया संग्राम है,
यह युद्ध का अंत नहीं
मात्र युद्ध विराम है।
हार जीत का निर्णय
समय पर छोड़ दो,



दिव्या प्रजापति

अधिकारी
जी.टी. रोड, एटा शाखा

पर युद्ध ऐसा लड़ो कि
हर अनुग्रह अपनी तरफ मोड़ दो।
संघर्ष की अग्नि में तप कर
एक दिन जब कुंदन बन जाओगे,
मात्र जीत से नहीं हार से भी
अपना अभिनन्दन करवाओगे।

“सुखदुःख सेम कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवां पापमवाप्यसि।”

अर्थात्:

तुम्हें सुख और दुःख को समान रूप से स्वीकार करना चाहिए। लाभ और हानि को भी समान रूप से देखना चाहिए। तुम्हें जय और पराजय को भी समान रूप से स्वीकारना चाहिए। तुम्हें इस तरह से युद्ध करना चाहिए कि पाप नहीं लगे।

— श्रीमद्भगवद्गीता



आलेख

डिजिटल बैंकिंग को समाज के निचले स्तर तक पहुंचाने के उपाय

डिजिटल बैंकिंग का अर्थ है बैंकिंग की विभिन्न सेवाओं व उत्पाद ऑनलाइन और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से प्रदान तथा संचालित करना। अपने खाते से राशि भेजना, बिल भुगतान, खाते की जानकारी लेना यहां तक कि ऋण आवेदन जैसी सुविधायें अब हमारी जेब में हैं।

डिजिटल बैंकिंग किसी क्रांति से कम नहीं हैं, जिसने आज बैंकिंग का नक्शा ही बदल दिया। प्रौद्योगिकी ने कई कार्यों को बस एक क्लिक में बदल दिया जो कभी हस्तचालित रूप से हुआ करती थी। कभी जिसकी कल्पना करना भी असंभव था वह अब हमारी दिनचर्या में समा चुका है।

विकिपीडिया की माने तो भारत में इंटरनेट बैंकिंग ने सन् 1996 में आई.सी.आई.सी.आई. बैंक के माध्यम से प्रवेश किया था। सन् 2010 तक डिजिटल बैंकिंग से हमारा परिचय होने लगा, शुरुआत कुछ सहज सेवाओं के साथ हुई थी जिनमें खाते की जानकारी, स्टेटमेंट लेना जैसी सेवाएं अधिक प्रचलित थी। हमने ए.टी.एम. चलाना तो सीख लिया था किंतु पैसे भेजने के लिए अभी भी बैंक शाखा तक दौड़ लगाना ज्यादा सरल प्रतीत होता था। ग्राहकों का ध्यान तो आकर्षित हुआ किंतु भारतीयों के लिए अपने पारम्परिक बैंकिंग तरीकों को छोड़ना इतना आसान नहीं था।

डिजिटल बैंकिंग के महत्व को समझते हुए तथा वैश्विक अर्थव्यवस्था में अपना स्थान मजबूत करने हेतु सरकार इसे बढ़ावा देने के प्रयास में थी। डिजिटल बैंकिंग को लेकर विशेषज्ञों में भी मतभेद रहे किन्तु कोविड 19 की परिस्थिति ने हर तर्क को परे कर दिया। कोविड 19 के समय डिजिटल बैंकिंग एक वरदान के रूप में सामने आया और हम अपने वित्तीय कार्यों को जारी रख पाएं।

अब तो डिजिटल बैंकिंग के चमत्कार हम हर दिन देखते हैं। आज क्यू आर कोड स्कैनर बाजारों की शोभा बढ़ा रहे हैं तो पी.आ.एस. मशीन



शुचि पाराशर

अधिकारी

भोपाल विद्या नगर शाखा

दुकानों पर सुसज्जित हैं। बैंकिंग सुविधाएं रात दिन हमारी उंगलियों पर है।

कुछ इस तरह डिजिटल बैंकिंग ने भारतीय अर्थव्यवस्था में जड़ें फैलाना प्रारंभ कर दिया है परन्तु अगली चुनौती देश के मूलभूत व ग्रामीण स्तरीय नागरिकों को जोड़ने की दिखाई बनती है। मानना कठिन है परंतु देश कि आबादी का एक हिस्सा आज भी डिजिटल बैंकिंग के लाभ से वंचित है। यह चुनौती भी सरल नहीं होगी, जब हम पढ़े लिखे लोगों को डिजिटल बैंकिंग अपनाने में इतना समय लगा तो जमीनी स्तर पर यह झिझक होना स्वाभाविक है।

देश के समग्र विकास और विश्व प्रतिस्पर्धा करने के लिए हर वर्ग के नागरिकों का डिजिटल बैंकिंग की दौड़ में शामिल होना आवश्यक है जिसे पूरा करने का प्रमुख उत्तरदायित्व बैंक कर्मचारियों के मजबूत कंधों पर टिका है। बैंक वह सेतु के समान है जो लोगों को देश की अर्थव्यवस्था से जोड़े रखता है तथा उनकी वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। अतः बैंकों के पास डिजिटल बैंकिंग को विस्तृत करने की अपार क्षमता है।

डिजिटल बैंकिंग को समाज के निचले एवं वंचित स्तर तक पहुंचने के लक्ष्य को ध्यान में रख बैंक व सरकार अनेक मार्ग बना रही हैं।

इस प्रक्रिया में वित्तीय समावेशन एक महत्वपूर्ण नीति है। यह रिजर्व बैंक द्वारा सन् 2005 में लाया गया था और मुख्य उद्देश्य समाज के आर्थिक रूप से वंचित वर्गों को बुनियादी वित्तीय सेवा व समाधान प्रदान करने पर केंद्रित है।

बैंक के माध्यम से सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएं जैसे प्रधान मंत्री जन धन योजना, अटल पेंशन योजना, प्रधान मंत्री जीवन ज्योति योजना आदी सफल कदम हैं जो वित्तीय समावेशन की दिशा में उठाएं गए हैं।

वित्तीय समावेशन से वंचित लोगों को मुख्य धारा से जोड़ा जा सकता है। इस नीति का सहारा लेकर हम न सिर्फ उन्हें बैंक से बल्कि डिजिटल बैंकिंग की दुनिया से संपर्क में ला सकते हैं। खाता खुलते ही एटीएम कॉर्ड हाथ में आ जायेगा और डिजिटल बैंकिंग के सफर की शुभ शुरुआत हो जायेगी।

डिजिटल बैंकिंग को जमीनी स्तर पर बढ़ावा देने के लिए इसके प्रति ज्ञान और जागरूकता फैलना अत्यंत महत्वपूर्ण हैं जिसे पूरा करने का अहम तरीका है डिजिटल वित्तीय साक्षरता।

डिजिटल वित्तीय साक्षरता एक उभरती हुई अवधारणा है जो डिजिटल प्लेटफॉर्म पर वित्तीय लेन-देन करने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल पर जोर देती है।

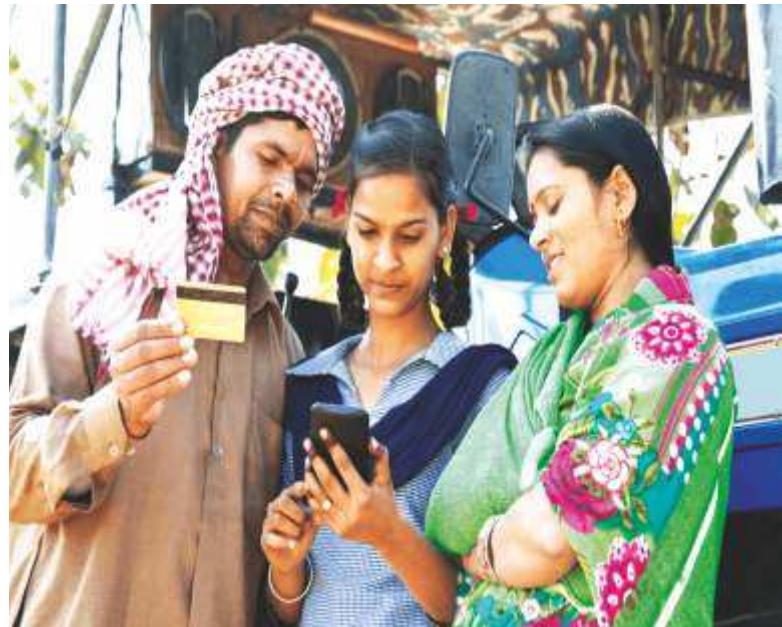
डिजिटल बैंकिंग के लिए प्रोत्साहित करने के साथ-साथ इससे जुड़ी सावधानियाँ, नियम, लाभ, हानि आदि से अवगत कराना है, ताकि वे सही व सटीक निर्णय ले सकें।

इसके लिए बैंक द्वारा समय-समय पर छोटे इलाकों व ग्रामीण क्षेत्रों में शिविर आयोजित किया जा सकता है। डिजिटल बैंकिंग के उत्पादों व एप्स कैसे प्रयोग करना है, क्रमशः प्रदर्शित किया जा सकता है। यह उन्हें अपनी शंकाएं दूर करने और कठिनाई व प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने में सहायता करेगा। साथ ही साथ उन्हें अपनी पूँजी को बेहतर ढंग से संभालने और जिम्मेदार वित्तीय व्यवहार पर सलाह देकर आर्थिक दायरों का विस्तार कर सकते हैं।

तीसरा महत्वपूर्ण मार्ग डिजिटल बैंकिंग की सरलता एवं सहजता से जुड़ा है।

बुनियादी स्तर के लोगों की आवश्यकतायें भी बुनियादी होती हैं, जो मुख्यतः राशि का स्थानांतरण, निकाशी, खाते की जानकारी तक सीमित है। ऐप्स व उत्पादों में जटिलता उन्हें भ्रमित कर सकती है तथा त्रुटि होने की संभावना भी अधिक बन सकती है। अतः हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि सरल ऐप्स और चैनलों का विकास हो, जो कि आम लोगों की समझ में आ सकें और जिनपर वे विश्वास कर सकें। एक तटस्थ बाजार या प्लेटफॉर्म का निर्माण हो जो सभी के लिए आसानी से और कम लागत पर सुलभ हो।

भीम ऐप इसका सबसे अच्छा उदाहरण है। इसी प्रकार एटीएम कॉर्ड, ऐईपीएस, क्यूआर कोड स्केनर यूपीआई जैसे माध्यम अपनी सहजता के कारण ही लोकप्रिय हैं।



अब चौथी बात आती है शिकायतों के शीघ्र निवारण पर।

ऑनलाईन बैंकिंग के क्षेत्र में त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। गलत राशि का लेन-देन, गलत खाते में लेन-देन, आईडी का ब्लॉक होना आदि आम स्थितियाँ हैं।

हमारा उद्देश्य बेहतर ग्राहक निवारण प्रणाली की दिशा में होना चाहिये तत्परता एवं सकारात्मक प्रतिक्रिया के साथ शिकायतों का समाधान प्रदान करना आवश्यक है।

शिकायतों का सही व शीघ्र निवारण ना होने की स्थिति में ग्राहक डिजिटल बैंकिंग के प्रयोग को लेकर हतोत्साहित हो सकता है। उन्हें यह भरोसा दिलाना आवश्यक है कि उनकी शिकायतें सुनी जाएंगी और समाधान खोजा जाएगा। हेल्पलाईन नंबर या ऑनलाईन शिकायत दर्ज करने के माध्यम भी मौजूद है, मूलभूत लोगों के लिए शाखा में बैठे कर्मचारी द्वारा दिया गया आश्वासन अधिक महत्व रखता है। हमारे बैंक के डिजिटल मित्र या ग्राहक सहयोगी यहाँ प्रमुख भूमिका रखते हैं जो समाधान के साथ सही सलाह भी प्रदान करते हैं।

ज्ञान के अभाव या नादानी के कारण कई बार लोग ऑनलाईन धोखाधड़ी का शिकार बन जाते हैं। यहाँ आर्थिक हानि तो होती ही है साथ ही साथ उनके आत्मविश्वास को भी ठेस पहुँचती है। साईबर सुरक्षा के उपायों को मजबूत करने की आवश्यकता है। लोगों में इसके प्रति जागरूकता लाना होगा। इसी के साथ साईबर बीमा जैसी सुविधाओं को भी हर वर्ग के लोगों तक पहुँचाना चाहिए जिसमें आर्थिक हानियों की पूर्ति हो सकें।

डिजिटल बैंकिंग के प्रयोग पर मिलने वाले कैशबैक, डिस्काउंट, रिवार्ड्स पॉइंट्स, ऑफर्स हमें एक उपहार के समान लगते हैं। ऐसे उपहार छोटे स्तर पर हो रहे अँनलाइन लेन देन पर भी लेकर आना चाहिए। मूलभूत की रुचि और आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ऐसी योजनाएं बनाना चाहिये जो कम से कम शुल्क के साथ अधिक लाभ दे सकें। डिजिटल बैंकिंग के प्रति उत्साह बनाए रखने में सहयोग मिलेगा।

डिजिटल बैंकिंग को आखरी छोर पर खड़े व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए मजबूत रास्ते का निर्माण भी आवश्यक है। किसी भी प्रणाली की सफलता लिए बेहतर बुनियादी ढांचा महत्वपूर्ण है।

शत प्रतिशत वित्तीय समावेशन का लक्ष्य ध्यान में रखकर देश के कोने-कोने में बैंक शाखा होना चाहिए। कियोस्क व एजेंट की सहायता लेकर देश के आंतरिक क्षेत्रों तक डिजिटल बैंकिंग सेवाएं पहुंचाना चाहिए। छोटी से छोटी जगह या समुदाय भी बैंकिंग और डिजिटल बैंकिंग से अछूता न रह जाए।

डिजिटल बैंकिंग का दूसरा आवश्यक भाग है इंटरनेट सेवाएं। अच्छी इंटरनेट सेवा जो कम लागत और बेहतर गति के साथ मिलें तो डिजिटल बैंकिंग का लाभ बिना अवरोध जारी रहेगा। डिजिटल भारत के सपने को पूरा करने के लिए इंटरनेट कनेक्टिविटी का व्यापक होना महत्वपूर्ण है।

इसके अलावा कंप्यूटर, लैपटॉप मोबाइल, जैसे उपकरण जिनके बिना डिजिटल बैंकिंग अधूरी है, मूलभूत स्तर तक इसकी उपलब्धता होनी चाहिए।

उन्नत आधारभूत संरचना डिजिटल वित्तीय सेवाओं को व्यापक रूप से अपनाने में सक्षम बनाएगा और वंचित आबादी तक पहुंचाएगा।

डिजिटल बैंकिंग को जमीनी स्तर तक पहुंचाना हमारा सामाजिक उत्तरदायित्व भी है। ऐसा कर हम न सिर्फ उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार कर रहें हैं बल्कि उनके आत्मविश्वास और स्वावलंबन को भी बल दे रहें हैं। यह उन्नति की नवीन अभिलाषाओं को हवा देगा।

वृक्ष तभी लहलहायेंगे जब जड़ें मजबूत होंगी और जमीनी स्तर से उसे संरक्षण और पोषण मिलेगा।

अतः डिजिटल बैंकिंग के साथ समृद्धि की ओर बढ़ते इन कदमों को रुकना नहीं चाहिए।



मोनालिसा पंदर

ग्राहक सेवा सहयोगी
एल.आई.सी. शाखा



कविता

मेरी मां ने देखा है

मेरी मां ने देखा है
मुझे बढ़ते हुए
ठोकरें खाकर गिरते
संभलते हुए
बहुत करीब से देखा मुझे॥

मेरी मां ने देखा है
मुझे गलतियां करते हुए
गलतियों से सबक लैते हुए
और कुछ कदमों से आगे बढ़ते हुए॥

मेरी मां ने देखा है
मुझे, बदलते समय के साथ
ढलते हुए
दुनियां की भाग दौड़ में
सामंजस्य बैठाते हुए॥

मेरी मां ने देखा है
मुझे घर की दहलीज पार कर
नए घर जाते हुए
एक मकान को घर बनाते हुए॥

सब कुछ देखा है मेरी मां ने
अपनी बेटी को हर रूप में ढलते हुए
संग दुनियां के चलते हुए
हर कामयाबी संग उनके चेहरे की खुशी बढ़ते हुए॥

एक मां ही तो होती है
जिसकी चाहत दुनियां से जुदा होती हैं
अपने लिए कुछ ना मांगकर
अपने बच्चों की बलाएं लेती है।



दिनांक 19.11.2024 को संस्थापक दिवस के अवसर पर केनरा उत्कृष्टता केंद्र, बागलूरु, बैंगलूरू के सभागार में सभी कर्मचारियों को संबोधित करते हुए हमारे प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री के. सत्यनारायण राजु।



दिनांक 09.11.2024 और 10.11.2024 को पीआरसीआई के 18वां ग्लोबल कम्युनिकेशन सम्मेलन, मंगलूरु में केनरा बैंक की तिमाही गृह पत्रिका 'केनरा ज्योति' और द्विमासिक गृह पत्रिका 'श्रेयस' को उत्कृष्टता पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार कर्नाटक उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश श्री कृष्णा भट्ट और फ़िल्म निदेशक श्री रवि किरण द्वारा प्रदान किया गया। पुरस्कार श्री टी.के. वेणुगोपाल, महाप्रबंधक, मानव संसाधन विभाग, श्री ई. रमेश, सहायक महाप्रबंधक और श्रीमती प्रियदर्शिनी, वरिष्ठ प्रबंधक द्वारा प्राप्त किया गया।



हमारे
संस्थापक के
आदर्शों एवं पदचिन्हों पर...



श्री अम्मेम्बाल सुब्बा राव पै
हमारे प्रिय संस्थापक,
संसाधनों को संग्रहित करने और वित्तीय
शिक्षा की ज्योति प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाने
की दृष्टि से, निवासियों के द्वार-द्वार जाकर,
हर घर दस्तक दी।

केन्द्रा बैंक
Canara Bank
A Government of India Undertaking

Together We Can



हमारे संस्थापक की प्रेरणा...
प्रत्येक दिन सुदूर एवं मधुर
ग्राहक संबंधों की अनवरत परंपरा।



जीवन-संवर्द्धक उत्पादों के माध्यम से
ग्राहकों के आनंद एवं अनुभव का सहर्ष विस्तार।



- युवाओं के लिए विशेष बचत खाता - 18 से 28 वर्ष
- शिक्षा ऋण व्याज दर पर 0.50% अतिरिक्त छूट का लाभ उठाएं

नि:शुल्क*
coursera से
सर्टिफिकेट कोर्स

और भी बहुत कुछ!



- नि:शुल्क टर्म जीवन बीमा
- ₹1 करोड़* तक नि:शुल्क व्यक्तिगत एवं हवाई दुर्घटना बीमा और भी बहुत कुछ!



- ₹10 लाख तक* कैंसर केरार बीमा
- ₹26 लाख तक* व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा और भी बहुत कुछ!



- दवाओं पर छूट*
- तत्काल ओवरड्राफ्ट की सुविधा
- डॉक्टरों से नि:शुल्क परामर्श और भी बहुत कुछ!

*विवरों के लिए क्लिक करें।

सर्वोत्तम
आपका अधिकार

हमारे संस्थापक सिद्धांतों को
जानने के लिए स्कैन करें।
जो आज भी प्रासंगिक हैं।



90760 30001



बैंक
नंबर

1800 1030



www.canarabank.com